श्री ।

सिंहासनबत्तीसी

बत्तीस पुतलियोंद्वारा महाराजा विक्रमका

यश राजा भोजप्रति सुमधुर

वार्तिकामें वर्णित है.

वही

अत्यंत शुद्धतापूर्वक

ब्रजवल्लभ हरिप्रसादजीने

नेटिव ओपिनियन प्रेसमें छपवाके

प्रसिद्ध किया.

सन १९२० संवत् १९७६

अथ सिंहासनबत्तीसीकी अनुक्रमणिका ।

श्रीः

सिंहासनबत्तीसी

एक राजाभोज उज्जैन नगरीका राजा महाबली और बड़ा धनी यशस्वी और धर्मात्मा था. जितने लोग उसके राज्य में बसते थे सो सब चैन करते थे. राजा राजप्रजासुखी किसीको कोई किसी तरहका दुःख नहीं दे सकता था. धर्म न्याय उसके यहा था, जो बाघ, बकरी, एक घाटपर पानी पीते थे. यह और सब उसके आसरेमे जीते, परमेश्वरने जबसे उसे दुनियाँके परदेपर उतारा तबसे वे सहारोंका किया सहारा. और रूप उसका देखकर चौदशकी रातके चांदको चकाचौंधी पड़ी. वह अतिबड़ा चतुर सुघर और गुणी था. अति अच्छी अच्छी जितनी बाते थीं सो सब उसमें समाई थीं. भलाई उसकी जगत्में मशहूर थी. और नगरी उसकी इसतरह बसती थी कि, जो चिप्पा रखनेको जगह नहीं मिलती थी. वह हरा भरा नगर, शादियाँ घर घर, नये तोरके अच्छे अच्छे मकान बनेहुये, चौपड़का बाजार दरमियान, नहर बहतीहुई, उत्तम दूकानोंमें एक एक दूकानदार सराफ, बजाज, सौदागर

कारीगर, सुनार, लुहार, सावकार, कसेरा, पटुआ, किनारी, बाफ, कौफुतरार, जिल्दकार, आदिनाराज अपने अपने काममें समर्थ थे. जौहरीबाजारमें जवाहिरोंसे थैलियां भरी हुईं मोती, मूँगा, जमरूद लाल, याकूत, नीलम, पुखराज, जौहरी देखते भालतेथे और खरीददारोंसे बाजारका बाजार भराहुआ और उसके बराबर दूकानोंमें मेवाफरोश विलायती अनार, सेव, बिही, नाशपाती, अँगूरसे पिटारे पिटारियां भरकर लगाए हुए और बेर, छुहारे, पिस्ते, बादामोंके किये हुए बेच रहे. फूलवाले फूल गूँथ रहे. तंबोली बीड़े बाँधरहे. गंधियोंकी दूकानें तेल, फुलेल, इत्र अरगजेकी लपटोंसे महक रहीं. और सुपारीवाले दूकानोंमें पूडे सुपारीके बांधकर लगाए हुए डब्बे माजूमोंके आगे धरे सुपारियां कतर रहे. बिसाती हर रंगकी चीजें दुकानोंमें चुने हुये मोल ग्राहकोंसे कर रहे. चौक चौकोर बनाहुआ मीना बाजार लगा हुआ. तीसरे पहरकी गुदरी लगी हुई असबाब तरह तरहका नया पुराना बेचनेवाले बेचरहे और माल लेनेवाले मोल ले रहे. गर्म बाजारी हरएक चीजकी होरही. कहीं हर तरफ वाजारहे. कहीं नाच, कहीं राग, कहीं गम्मत, कहीं नकल, कहीं किस्सा होरहा. मअशूक बाजारमें सैर करते हुए आशिक पीछे पीछे फिरते हुए दिन रात यह समान यहां रहताथा. बाग बगीचे सैर और

तमाशेके बने हुए, दरख्त मेओंसे झूमते हुए. और फूल क्यारियोंमें खिले हुए. तालाबोंमें कमल फूले हुए. बावलियोंमें पानी झलकता हुआ, हर एक कुएँपर रहट परोहा चलता हुआ, पनघट लगा हुआ और राजाके चौरासी खास महल ऊँचे ऊँचे दरवाजे खुशकितअ चार दीवारियां सीधी खींची हुई, चारोंतरफ उनके बाहर अंदर मकान अनूठे अनूठे बने हुए. कोठरियां दालान दर दालान बारहदरियां भालाखाने चौमाहिले पंचमाहिले रंगमहल ऐशमहल अटारियां बंगले तयार चिलमने परदे हर एक दरवाजेपर लगे हुए, फर्श चांदनी सोजनी कालीनोंका जाबजा बिछा हुआ, मसनद तकिये लगे हुए, शहनशीनोंमें दंगल और कुर्सियां सोने रूपेकी जड़ाऊ बिछी हुई. ताखों पर शीशे बेदमुश्क गुलाबके चुने हुए सायबान ताशबादलके खिंचे हुए, नगीरे बाजी जगह अपने अपने मौकेपर खड़े हुए, सहनमें क्यारियां बनीहुई, चौपड़की नहरें पानीसे भरीहुई लहरें लेरहीं, हौज बेदमुश्क गुलाबसे भरे हुए, फुहारे छूटते हुए चादरोंसे पानी बहता हुआ, आइनोंपर चारोंतरफ जारी सर्व खड़े हुए और छोटे छोटे दरख्त लगे हुए, रविश पट्टियां सब दुरुस्त फूल हजारों रंगके क्यारियोंमें फूले हुए, हर एक महलमें एक एक ऐश और कामरानी राजाका दिल हाथों लिये रहतीथीं. नाच, राग, रंग, रातदिन होताथा और वह

आप ऐसा सुघर था जो बाल बालमें मोती पिरोता और नौ किस्म
के साहिब कमाल जैसे नौरत्न उसकी मजलिसमें हाजिर रहतेथे.
राजा इंद्र उसकी सभाको देखकर रश्ककी आगसे जल-
ताथा. और उसका अखाड़ा हसरतके मारे हाथ मलताथा. रंडी मर्द
उसकी सूरतपर दिवाने थे, जिसने एकबार उसे देखा वो आपेमें
न रहा, जिसने उसकी खूबसूरतीका बयान सुना बेचैन हुआ जो
बनके मदमें सरशार मोहनका अवतार नौजवान चातुर साहिबी
तदबीर था. उसकी सैर और तमाशेको शहरके किनारे बागखानोंमे
कोसोंतक क्यारियां बनाई थीं और हररंगके फूलोंकी बहारें दि-
खाईथीं और इनके बराबर एक खेतमें किसी मुरारीने खीरे बोदिथे
जब वे उगे बेलें तमाम, खेतमें फैलगईं और खूब हरियाली
हुई, जर्द जर्द फूल और तैयारीपर आया तब उस खेतवालेने
रखवालीको एक मचान तजवीज किया. देखा दर मियान उस
खेतके एक चौका जमीनका खाली रहगयाहै कि, न कुछ उसमें
जमा है, न उपजा है. मुरारीने रखवाली करनेको इर्द गिर्द हलारे
लगाकर ऊपर एक मचानसा बांधा उसपर चढ़कर चारोंतरफ
निगाह करतेही कहने लगा कि–कोई है? इसी वक्त राजा भोजको
गढ़से पकड़ लावे और सजाको पहुंचावे. राजाके नौकरोंमेंसे
एकने इस बातको सुनतेही टांग पकड़कर उसे नीचे गिरादिया
और मुंहही मुंह थपेड़ोंसे मार मार सारा मुंह सुजादिया. कान

पकड़कर उठाया और बिठाया, गरूरका नशा गोंको चुलाया रहाथा सो सब उतर गया. तब तोबा करके पांओमेंपोने बड़ी कहने लगा क्या मैंने ऐसी तकसीर की, जो मुझपर खेवारमें कुछ हुई? इधर उधरकी राह बाटके लोग जो वहां इकठे हुए थकहा—इस कहा तूने ऐसी बात मुंहसे निकाली और राजा सुनेगा तो अभी तुझे तोपके मुंहपर रखकर उड़ा देगा. यह सुनतही वह गिड़ गिड़ाने लगा. रहे सहे उसके होश और हवास ओरभी जाते रहे. जानके डरसे घबरा, दम उसका होठोंपर आरहा. मिजाज और जारीसे बारे छूटगये. राजाने उस किदवीगेे वहांसे घरकी राहली. पर वह जब उस मचानपर चढ़ता तो ऐसा बकबाद किये बिना न उतरता. एक दिन चार हरकारे राजाने एक कामको किसी-तरफ भेजेथे, बे रातको उधरसे फिरते हुए चले आतेथे और वह मंचानपर चढ़ा हुआ बक रहाथा, कि बुलाओ हमारे दीवान और अहलकारोंको कि इस जगह खासे महल और एक गढ़ बनावें सब सरजाम लड़ाईका उसमें जमा करें कि, मैं राजा भोजसे लडूं और मारूं. जो मेरी सात पुश्तिका राज यह राजा करता है. यह सुनतेही उन चारों हरकारोंको अचंभा हुआ, और एकको उनमेंसे गुस्सा आया. एकने गजबसे कहा—इसे तंबीह करके मुश्कें बांध राजाहीके पास लेचलो. दूसरेने कहा—वे इसके हकमें जो चाहें सो करें. तीसरेने कहा—इसने शराब पी है, मतवाला है, जो

सुघर था जो बाद. मो बकताहै. चौंथेने कहा--फिर समझा जायगा कगाल जैसे ने. आपको देर होगी आपसमे यह बातें कहकर उसकी स गंग और पहले मुजरा किया. और यहां भेजाथा उसका अहवाल अर्ज किया. राजाने सुनकर पूंछा कि, हमारे राज्यमें सब लोग खुश रहते हैं? और अपने अपने घरमें बैठकर हमारे हकमें क्या कहतेहै? तब उन्होंने हरएकका अहवाल कहकर यह किस्सा राहका जो सुनाथा सब बयान किया. और कहा कि, अजब असर उस मंचानका है कि, जब वह उस मंचानपर चढ़कर बैठता है तब एक रऊनत उसपर चढ़जाती है और जब वह वहांसे नीचे उतरता है तब नशा उतर जाता है, फिर अपनी हालत असलीमें आता है. तब राजाने कहा तुम मुझे वहां ले चलो. ओर उसे दिखाओ, कि वह जगह कौनसी है? ऐसा वह राजा खुशी खुशीसे उठ हरकारोंको साथ लेकर उस मुकामपर गया. वहां छिपकर चुपके कहीं बैठ रहा. इतनेमें क्या सुनता है कि, वह मचानपर पांव रखतेही कहने लगा कि, लोग जल्दी जावें और राजा भोजको गढ़से पकड़ लावें. उसे जल्दी मार मेरा राज ले लूं. इसमें यश और धर्म दोनों उन्हें होंगे. सुनतेही राजाको कोप हुआ और हरकारोंको साथ लेकर घरको फिर आया. रातको फिक्रके मारे नींद न आई. सात पांच करके ज्यों त्यों वह रात गँवाई. सवेरा होतेही

स्नान करके दरबार किया. पंडितोंको और नजूमीयोंको बुलाया और रातका सब अफसान जबानपर लाया. नजूमियोंने बडी साय और वह दिन विचारके कहा राजा! हमारे विचारमें कुछ वहां लक्ष्मीका लक्षण नजर आता है. और पंडितोंने कहा—इस मकानमें बहुत दौलत है सुनतेही राजाने तमाम शहरोंके बेलदारोंको हुक्म किया कि, लाख बेलदार वहां जाओ और उस मकानकी तमाम जमीन खोदो. वे बमूजिब हुक्मके रवाने हुए. साथ उनके सब अपने मुसाहिबोंको भेजा और आपभी सवार होकर वहां आया. बेलदारने जब चारों ओरसे खोदा और वहाँकी मट्टी दूर की तो एक पाया नजर आया. तब राजाने फरमाया अब खबरदारीसे खोदो टूट न जाय. जब खोदते २ चारों पाए सिंहासनके नजर आये तब राजाने कहा—अब इसे बाहर निकालो. लाख मजूदर उठातेथे. और जोर करतेथे पर जराभी वह जगहसे नहीं हिलताथा. तब उनमेंसे एक पंडितने अर्ज की कि, महाराज ' यह सिंहासन देवताओंका या दानवोंका बनाया हुआ है. इस जगहसे नहीं हिलेगा और न उठेगा. बलि लेगा. इसको बलि दीजिये. तब राजाने करोड़ भैंसे और बकरे वहीं बलि दिये चारों तरफ बाजे बजने लगे. और जयजयकार होने लगा. तब बलि लेकर हाथ लगातेही वह सिंहासन ऊपरको उठ आया. झाड बुहारकर एक जमीन पाकिजःपर रखदिया.

तब राजा सिंहासन देखकर बहुत खुश हुआ. और जब उसकी मट्टी छुड़ाकर गर्द वा गुब्बाकर दूरकर धोया और पोंछा तब ऐसा चमकने लगा कि, आख किसीकी उसपर न ठहरतीथी. जिसने उस जडाऊ सिंहासनको देखा उसे खुदाकी कुदरतका तमाशा नजर आया. कारीगरोंने ऐसा बनायाथा कि, किसीने न देखा न सुना. उसके आठ पुतलियां चारों तर्फ बनी हुईथी और एक एक फूल कमलका हर एकके हाथमें दियाथा. अगर सुरभामिनी उसे देखें तो भौंचक होजावें. राजाने तमाम कारीगरोंको बुलाकर फरमाया कि, जितने रुपये खर्च हों सो खजानेसे लेलो. और जहांजहांका जवाहिर जाता रहा है, वहां नया जडकर जल्दी तय्यार करो. यह कहकर राजा महलमें दाखिल हुआ. सिंहासन बनने लगा. पांच महीनेमें तय्यार हुआ. और पुतलियां ऐसी बनकर खडी हुईं गोया अभी बोलती हे और चालती हैं गरज शिरसे पांव तक खबियोंमें भरी हुई आखें हिरनकीसी कमर चितेकीसी पांवका यह अंदाज जैसी हंसकी चाल. जिन्होंने सूरत उनकी देखी अपनी आखोंकी पुतलियोंमें जगह दी. उसे देखकर पंडित राजासे सिंहासनकी हकीकत कहने लगे— हे राजा! सुनो मरना जीना ये इख्तियार सब भगवानके है. पर मनुष्यको चाहिये कि जीते जी सब जीनेका सुख करले. यह बात राजा सुनकर बहुत खुश हुआ और कहने लगा कि, शायद पुत-

लियां भगवानने अपने हाथसे बनाई हैं ? या इंद्रके यहांकी अप्सरा हैं ? यह कहकर पंडितोंको हुक्म किया कि, नीकी सायत, अच्छी लगन बिचारो जो मैं उस सायत सिंहासनपर जाकर बैठूं। यह बात सुनतेही पंडितोंने बिचार करके कार्तिक महीनेमें एक दिन शुभ लगन ठहराई. सब भांति वह भली थी. कहा कि, उस सायत तुम उस सिंहासनपर बैठो; तब राजाने बैठनेकी बिरियां जितने राजा उसके राज्यमें थे और पंडित, करामती दूर और नजदीक थे उन्हें न्योता भेजकर बुलाया और आप स्नान करके अच्छे कपडे पहने. पंडित वेद पढ़ने लगे और गंधर्व गीत गाने लगे. भाट यश बयान करने लगे और तरह तरहके बाजे बजने लगे. हरएक महलमें शादियां नाच, राग रंग मचे. जितने लोग आये उन सबकी जियाफत की. ब्राह्मणोंको वृत्ति गांव दिये. भूखोंको खाना और मुंहमांगे रुपये बख्शे. नंगोंको कपड़ा और माल असबाब इनायत किया. रैयतको बखशीश और इनाम दिया. तमाम शहरमें खैर खैरात बांटी. फौजको खिलत और इजाफे कर दिये. हमनशीनोंपर तरह तरहकी मिहरबानियां नवाजिशें फरमाईं, गरज जितनेलोग उस सभामें इकट्ठे हुएथे सो सब जयजयकार करतेथे और रामका नाम लेतेथे. बीचमें सिंहासन धरा था. राजा खुशी २ श्रीगणेशको मनाता हुआ सिंहासनके पास जाकर खड़ाहुआ और दाहिना पांव बढ़ाकर

उसने च्याहा कि उसपर रक्खें, इतनेमें ये पुतलियां खिलाखिला-कर हँसीं और सबने यह देखा. राजा अपने मनमें जरा रुककर निहायत शरमिंदा हो कुछ दहशत खाई. कुछ ऐसे अचंभा हुआ कि ये बेजान पुतलियां जानदार क्योंकर हुई ? गश खाकर गजबमें आकर पाव उधरसे खैंचलिया. और पुतलियोंसे कहने लगा कि, तुमने क्या देखा ? और क्यों हँसी ? ये सब बात मुझसे बयान करो. क्या मैं बली राजाका बेटा यशस्वी नहीं ? या क्षत्रियोंमें कायर हूं ? या नामर्द हूं ? या बेरहम हूं ? या और राजा मेरे हुक्ममें नहीं ? या मैं पंडित नहीं ? या मेरे यहां पद्मिनी नारी नहीं ? या मैं राजनीति नहीं जानता ? या मैं किसीकी मजलिसमें नीचे होकर बैठा ? फिर किस बातमें मैं नालायक हूं ? मेरे दिलमें शक पडा है सो मुझे तुम बताओ ! ये बात राजाके मुखसे सुनकर उनमेंसे रत्नमंजरी नामक--

---

पहली पुतली

बोलीः—हे राजा, दिल लगाकर मेरी बात सुन। और यह किस्सा मैं तुमसे बयान करता हूं. तुम गुणग्राहक और कदरदान हो ! जो तुमने बातें कहीं सो सब दुरुस्त है सूर्यसेभी तुम्हारे तेजके आगकी ज्वाला अधिक है पर इतना गर्व मत करो. पुरानी कथा सुनो इससंसारका अंत नहीं. भगवान्ने

इसमें किस्म किस्म और रंग रंगके जवाहीर पैदा किये हैं. एक एक कदमपर दौलतका गंज है. और एक एक कोसपर आबहयातका चश्म है, पर तुम कमवक्त हो इससे नहीं पहचाना अपने दिलमें क्या समझेहो ? तुम जैसा इस दुनियांमें करोड़ों पड़े हैं तुमने इतनेहीमें मगरूर होकर अपने ताईं भुला दिये. और यह जिसका सिंहासन है उस राजाके यहां तुमसा एक एक अदना नौकर था. यह सुनकर राजाको गुस्सा आया. और कहने लगा कि-इस सिंहासनको अभी मैं तोडे डालताहुं. इतनेमें वररुचि पुरोहित बोला, राजा ! यह इनसाफसे दूर है, इसवास्ते पुतलीकी बात कान देकर सुन लो. और जो कछु करना हो सो फिर करलो. राजाने कहा तू इसका अहवाल कह. तब पुतली बोली-मैं क्या कहूं ? राजा ! इतनाही सुन, तुम जलकर खाक होयगे और जब तमाम हकीकत उस राजाकी सुनोगे तब औरभी शरमिंदा होंगे. और अपने दिनोंको रोवोगे. लोगोंके आगेभी हलके होओगे इसके कहवानेसे न कहना ना भला है हम तो उसी रोज मरचुकी थीं और सिंहासन फूट चुका था जिस रोजसे राजा विक्रमादित्यसे बिछुडी. अब हम क्या डर है ? इतनेमें दिवान राजाका पुतलीसे कहने लगा-किसलिये तू अपने राजाको बयान नहीं करती ? गुस्सा छोडदे और अब बात कर. क्या वह भेद छिपा रखती है ? तब पुतली बोली कि-एक शकबंधी राजा बड़ा बली था. और नगर अंबावतीमें राज

करताथा बड़ा उसका दबदबा था, देवताओंका पूजनेवाला और तमाम दुनियाका दान देनेवाला था, आगे मै उसकी कथा तेरेवास्ते कहती हूं राजा! कान देके सुनो. श्यामस्वयंवर उस नगरीका राजा था. जानका ब्राह्मण पर बड़ा राजा हुआ. तब गंधर्वसेन उसका नाम हर तरफ बजने लगा और उसके घरमे चार वर्णकी रानियां थीं–ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या, शूद्रा. उसमें जो ब्राह्मणी थी सो बहुत अच्छी सूरत और नाज़ुक थी. उसके एक बेटा हुआ सो बड़ा पंडित हुआ. ब्राह्मणीत उसका नाम रक्खा. ऐसा ऐ राजा! कोई दुनियामें पंडित न था, जितने इल्म थे सो सब उसने पढेथे. यहांतक कि, मौतकाभी अहवाल कहदेता. और क्षत्रियासे तीन बेटे हुए. उन्होंने क्षत्रियोंका धर्म अख्तियार किया. एकका नाम शंख, दूसरेका नाम विक्रम, तीसरेका नाम भर्तृहरि. एकसे एक बली था सब जगमें उनका नाम मशहूर था और उन्हे कल्पवृक्ष दुनियाके लोग कहतेथे और वैश्यासे बेटा जो हुआ उनका नाम चंद्र रक्खा. वह बड़ा सुखी और रहमदिल था. शूद्रासे जो बेटा हुआ उसका नाम धन्वंतरि रक्खा था. वैद्योंमें वह बड़ा वैद्य था. छह बेटे राजाके हुए. एकसे एक अच्छे गरज अमरसिंहके घरानेमें सबके सब खूब हुए. और वह जो ब्राह्मणीसे हुआथा वही राजाकी दीवानी करताथा. उसमें जब कोई तकसीर हुई तब राजाने

खिदमत लेली. वह लड़का वहांसे निकलकर धारापुरमें आया. अय राजा! वहां सब तुम्हारे बुजुर्ग थे. उसे उन सबोंने माना. बड़ी आव भगत की. वहांका राजा तुम्हारा बाप था. कितनी मुद्दतके बाद उसने दगा करके उस राजाको मारडाला और आप वहांका राज लेकर उज्जैन नगरीमें आया और यहां आकर मरगया. शंख जो बड़ा बेटा क्षत्रियाके पेटका था से वहां आकर वहांका राजा हुआ. राज करने लगा. और और यह अहवाल है कि, एकरोज पंडितोंने आकर राजा शंखसे कहा कि, तेरा दुश्मन दुनियामें पैदा हुआ. यह बात पंडितोंके मुंहसे सुनकर वह सोचता रहगया. ब्राह्मण कहने लगे—हम सब शास्त्र देखा है, उससे यही अहवाल निकलता है, कि, जो हमने तुमसे कहा. मगर एक बात और है कि हम उसे मुंहसे निकाल नहीं सकते. तब राजाने कहा-खैर, जो तुमने यह बात कही तो वहभी कहो! तब उन्होंने कहा—हमारे विचारमें यह आता है कि, शंखको मार राजा विक्रम यह राज करे. यह बात सुनकर राजा हँसा और कहने लगा, ये पंडित बावले हैं. उन्हें कुछ ज्ञान नहीं. इसलिये ऐसी बात कहते हैं. यह बात अनसुनी कर राजा चुप रहा. पण्डित अपने दिलमें शरमिंदा हुए कि, हमारे शास्त्रको इसने झूठा जाना और हमको दिवाना ठहराया. जब कितने एक दिन इस बातपर गुजरे तब पण्डित अपने मका-

नोंमें बैठकर नजूम देखने लगे. उनमेंसे एक पंडित बोला—मेरे विचारमें यह आता है कि, राजा विक्रम कहीं नजदीक आन पहुँचा है. तब दूसरा उनमेंसे बोला —यहांके किसी जंगलमें है. और एक उनमेंसे कहने लगा, उस जंगलमें एक तालावभी है, वहीं अखाड़ा करके रहा है. तब एक ब्राह्मण उनमेंसे उठ खडा हुआ और जंगलको चला. वहां जाकर क्या देखता है कि, एक तालाव उसपर राजा विक्रम तपस्या करता है महीका एक महादेव बनाकर उसकी पूजा करता है और दंडवत् कर रहा है यह देखकर पंडित उलटा आया और सब पंडितोंको साथ लेकर राजाके पास गया और राजासे कहने लगा कि, तुम हमारे शास्त्रको झूंठ मानते थे पर अब हम देखके आये हैं. फलाने जंगलमें राजा विक्रमादित्य आन पहुँचा. राजा शंख उस रोज सुनकर चुप रहा. सुबहको उठा और उस बनमें जाकेही छिपकर देखने लगा कि, वह क्या करता है जहां राजा वीर विक्रमादित्य बैठा था वहांसे वह उठा पर तालावमें न्हाकर फिर अपने आसनपर आकर बैठा और उसी तरहसे महादेवकी पूजा करने लगा. और यह राजाभी निकलकर वहां आकर खड़ा हुआ. जब वह विक्रम महादेवकी पूजा कर चुका तब उसी महादेवकी पिण्डीपर उसने पेशाब किया. जितने लोग राजाके साथ आयेथे, वे सब कहने लगे कि, इसकी बुद्धि मारी गई है, कि पूजेहुये देवपर इसने

मूता. तब एक पंडित उनमेंसे बोला कि, उठो महाराज! यह तुमने क्या किया! तब वह बोला, कि हम जातिके ब्राह्मण हैं देवताको पूजें या मिट्टीको! तब ब्राह्मणोंने कहा, राजा! कुछ हम अच्छा नहीं देखते, क्योंकि तुम्हारी मत कुमत होगई. जब मरनेका दिन आदमीका नजदीक आताहै तो उसका मति मारी जाती है. तब राजा बोला, तुम दिवाने होगये हो और मुझेभी बावला बनाते हो, जो भगवान्ने लिखा है वही होवेगा उसको कोईभी मिटा नहीं सकता. तब पंडित आपसमें कहने लगे इस राजाने क्या अपना अकाज किया है? तब राजा शंखने विक्रमको मारनेकी यह फिकिर की कि सात लकीर कोयलेसे जादूकी काढी और उनपर भुस फैला दिया जो उसे मालूम न हो. और उन लकीरोंका यह गुण था कि, जो उनके ऊपर पांव धरे सो बावला होजाय. और एक खीरा मँगाकर जादू किया और एक छूरी पढकर हाथमें रक्खा. उस छूरी खीरेका यह असर था कि जो उस छूरीसे खीरा काटे उसका शिर कट जाय. पंडितोंने कहा—आप उसे बुलाओ. उन लकीरोंपर पांव धरके जो आवेगा तो वह दिवाना हो जावेगा. बावला होकर यह खीरा जो अपने हाथसे लेकर काटेगा तो शिर उसका कट जायगा. जितने क्षत्रिय राजाके साथ आयेथे वे सब अपने दिलमें फिकरमंद हुए कि, इस राजाने दगा किया है. यह क्षत्रियोंका धर्म नहीं.

राजाने विक्रमादित्यको बुलाके कहा—हम तुम बैठकर एकजगह खीरा खावें. यह राजा योगी था, और इस दगाको जानता था. उन लकीरोंसे बचकर सिंहासनके पास जाकर खडा रहा. खीरा और छूरा उसके हाथमेंसे लेलो. दाहिने हाथमें छूरी रक्खी और बाये हाथमे खीरा लिया. राजा शेख गाफील था फुरती करके उसे छूरी मारी और राजका काम तमाम किया. यह बात रत्नसेनउद्दीन जाहिर की और कहा कि—हे राजा! तूं इस बातका सुन. खुदा जो रहम करे तो तिनकेसे पहाड करे और गजब करे तो पहाडसे नातिनका किताबमें जो लिखा है, वह कभी झूठ नहीं होता. जब माके पेटमें इन्सान आता है चार बातें साथ लाता है नफा और नुकसान दुःख और सुख. तीन लोक और चौदह भुवन फिरे लेकिन किस्मतका लिखा नहीं मिटता. भाईको मारा, दिलमें खुश हुआ उसके लोहूका माथेपर टीका लगा लिया. उठकर सिंहासनपर बैठा और चँवर ढुलवाया. उस राजाकी रानी उसके साथ सती हुई तब यह राजनीतिसे न्याय करने लगा. और जितने राजा उसके राजमें थे सब सुनकर खुश हुए. गुजरके आये और दोनों वक्त दरबारमें हाजिर रहने लगे. इसी तरहसे राजा राज करने लगा. कितनें एक दिनोंके बाद एक दिन राजा शिकारको चला. तब कुत्ते, बाज, बहरी और जितने शिकारी जानवर थे सो सब साथ लिये. और जितने अच्छे

अच्छे गुलचले ओर तीरंदाज थे, साथ लिये. जाकर एक जंग॰ लमें पहुँचे वहां हिरनके पीछे राजाने अपना घोड़ा डाला. तब राजा आगे बढ़गया और सबके साथ कोई भी न पहुँचा. एक बड़े जंगलमें राजा जा निकला और वहां जाकर सोच करने लगा कि, मैं कहां आया ? राहभी भूला और साथभी गवाँया इतनेमें जो निगाह की तो एक बड़ा दरख्त देखा और उस॰ दरख्तकी फुनगीपर चढ़गया वहांसे देखने लगा, जंगलही॰ जंगल नजर आताथा. मगर एक तरफ जो देखा तो एक शहर नजर आया. उसको देखकर राजाकी एक ढाढ़ससी बँधी वह नगर जो देखा तो निहायत आबाद है. कबूतर वहां उड रहे हैं चीलें मडरा रही हैं. सूर्यकी झलकसे हवेलियोंके कलश चमक रहे हैं यह देख कहने लगा कि, यह नया शहर मैंने देखा. कल इसे छीनलूंगा. और इस नगरके राजाका दीवान जिसका नाम लूनबरन था वह कौवेके भेससे रहता था. उस तरफसे खड़ा हुआ आताथा. उसने यह राजा की बात सुनी और बहुत दिलमें खपा हुआ. गुस्सेसे उसके मुँहमें बीट करदी. राजा गजबमें आया. इतनेमें लोग कुछ उसके वहां आप पहुँचे, उनके साथ होकर अपने शहरमें दाखिल होगया. और दीवानको हुक्म दिया कि जहानमें जितने कौवे हैं वे सब पकड़ लाओ. यह सुनतेही चारों तरफ बहेलिये

दौडे और कौवे पकड पकड लाये. और पींजरेमें बंद किये राजाने जाकर उन कौवोंसे कहा-अरे चांडालो! वह कौनसा कौवा था कि जिसने हमारे मुँहपर बीट की? तुम सच कहोगे तो हम सबको छोड देंगे. नहीं कहोगे तो सबको मार डालेंगे. यह राजाकी बात सुनके सब कौवे बोले-महाराज! हममें कोई कौवा नहीं रहा जो पकडा नहीं आया और वह काम हमसे नहीं हुआ. तब राजा जियादः खफा हुआ और बोला कि-तुम सबके सिवाय वह कौन कौवा है कि जिसने यह काम किया? तब उन्होंने कहा-महाराज! सच पूँछते हो तो हम कहते हैं. बाहुबल एक राजा है. उदय भरतमें उसका राज है. और उसका दीवान लूतबरन बड़ा दानी बहुत होशियार पंडित है. वह कौवेके भेसमें रहता है. यह काम उसका हो तो हो; क्योंकि कौवेकी सूरत एक वह बच रहा है. तब राजाने कहा वह किस तरहसे हमारे पास आवे? उसका बयान कुछ समझकर मुझे इलाज बताओ? कोई तुम्हारे यहांसे वकील जाय और उसको ले आवे. तुम आपने यहांसे दो कौवोंको भेजदो और वे जाकर उसको यहां ले आवें. तब उन्हींमेंसे दो कौवे वहीं गये. उनकी लूतबरनने बहुतसी आव भगत की और पूँछा कि, तुम यहां किसलिये आयेहो? तब वे बोले महाराज! तुम्हारे बगर हम सब कौवे मारे जातेहैं. इसवास्ते जो तुम राजा

विक्रमादित्यके पास चलो तो हम सबोंकी जान बचे तब भूतवरन बोला—धन्य भाग जो तुम मेरे पास अपना मतलब समझकर आयेहो. जो कुछ काम मुझसे होगा उसके लिये मैं कभी ना न करूंगा. यह कहकर अपने राजाके पास आया और राजासे हुक्म लेकर उनके साथ गया. जब सब कौवोंने उस दीवानको देखा तब वे राजासे कहने लगे कि—महाराज! आप जिसका नाम लेतेथे वह यही आता है. राजाने देखकर उसे आदर करके आधी गद्दीपर बिठाया और क्षेम कुशल पूंछी. वो आशीस देकर बोला राजा! किसलिये तुमने मुझे याद किया! और किसवास्ते इन सबको बंद किया! जब भूतवरनने यह बात पूछी तब राजा विक्रम कहने लगा—मैं एकदिन शिकारको गयाथा. इत्तिफाकन जंगलमें राह भूलगया तब एक बरगदपर चढकर चारों तरफ देखने लगा इतनेमें एक कौवेने मुझपर बीट करदी. इसलिये मैंने सब कौवोंको बंद किया. जबतक इन-मेंसे कोई सच न कहेगा तबतक एक कौवा इनमेंसे न छोडूंगा. बल्कि जानसे इन सबको मारूंगा. फिर भूतवरन बोला—महाराज! यह काम सब मेरा है. जब तुम्हें मैंने मगरूर देखा तब मेरे मनमें गुस्सा आया. और अकल मेरी उसवक्त जाती रही. यह सुनकर राजा हँसा. और बिगड़कर कहने लगा. मुझे मगरूर क्यों न हो? राजा मैं हूं, दाता मैं हूं सिपाही

मैं हूं. और कौनसी बात मुझमें नहीं है? सो तुम कहो, तब वह बोला-वह जो नगर तुमने नजर भरके देखा है उसका मैं सब बयान करताहूं. राजा बाहुबल नाम वहांका कदीम राजा है. और गंधर्वसेन बाप तुम्हारा उसका दीवान था. राजाको उसकी तरफसे कुछ बेइज्जती हुई तब उसे छुडादिया. वह नगर अंबावतीमें आया और उस जगहका राजा हुआ. उसका बेटा तूं विक्रम है. तुझे जगमें कौन नहीं जानता? पर जबतक राजा बाहुबल तुझे राजतिलक न देगा तबतक तेरा राज अचल न होगा और वह जो यह तेरी खबर पावेगा तब वही तेरेपर चढकर दौडेगा और तुझे आकर एक घडीमें राखके बराबर करदेगा इस वास्ते तुझे जो मैं सलाह दूंगा उसे मान और किसी तरहसे उस राजाके पास जाकर राजाको मोहब्बत दिलाकर तिलक उससे ले, जिससे यहांका अचल राज तू करे. राजा विक्रम बडा अकलमंद था, इसवास्ते इस बातपर कायम रहा ऐसी बातें लूतवरनसे सुनकर कुछ दिलमें न लाया और हँसकर कानदे सब सुनी. फिर लूतवरनने कहा-जो तुम्हें चलना हो तो हमारे साथ चलो और पंडितोंसे अच्छी साअत दिखाकर चलनेकी तैय्यारी करो. दूसरे दिन सुबहके वक्त राजा लूतवरन मंत्रीके साथ होकर चला और राजा बाहुबलके नगरमें जाकर पहुंचा तब उस दीवानने राजा विक्रमसे

कहा-यहां [illegible] और मैं अपने राजाको तुम्हारे आनेकी खबर दूं, यह बात राजासे कहकर लूनबरन अपने राजाके मंदिरमें गया उसको सलाम किया. और सब समाचार और अपनी हकीकतसमेत राजाका अहवाल कहने लगा-महाराज ? गंधर्व-सेनका बेटा विक्रम आपके दर्शनके लिये आया है. यह बात बाहुबल राजाने सुनकर उसको तुरंत अन्दर बुलाया. तब लूनब-रन राजा विक्रमको लाया और अपने राजासे मिलाया. राजा उससे उठकर मिला प्यार आदर करके आधे आसनपर बिठाया और क्षेम कुशल पूछी बाद उसके रहनेके लिये मकान बताया राजा उठकर उस मकानमें आया. वहा रहने लगा. जब दस पांच दिन बीतगये तब दीवानसे राजा विक्रमने कहा-हमें तुम विदा करवादो, तो हम अपने स्थानको जावें तब मंत्री कहने लगा-हमारे राजाका यह स्वभाव है कि जो उनसे मिलनेको आताहै उसे अपना रुखसत नहीं करते, तुम रुखसत मांगो और जिस बातकी ख्वाहिश हो सो कहो. अपने जीमें कुछ शर्म न करो. तब राजा बोला-मुझे कुछ नहीं चाहिये. जो कोई जो बर चाहे सो मुझसे ले. तब दीवान बोला-राजा ! यह हमारी बात सुनो. इस राजाके घरमें एक सिंहासन है सो वह सिंहासन पहले महादेवजीने राजा इंद्रको दियाथा और इंद्र राजाने इसको दिया. उस सिंहासनमें ऐसा गुण है कि, जो उपसर बैठे

को सात द्वीप और नौ खंड पृथ्वीका अजीत होकर राज करे और बहुतसा जवाहिर उसमें जडा है. और उस सिंहासनमें बत्तीस पुतलियांभी बनी हैं. अमृत देकर उनको सांचेमें ढाला है. तुम रुखसत होते हुए वह सिंहासन राजाजी मांगो कि उसपर बैठकर आनंदसे राज करेंगे. यह रातको दीवाननें सलाह दी. और सुबहको राजाके दरबारमें दीवानने जाके खबर दी कि, महाराज! विक्रम रुखसत होताहै और आपके पास जानेको बाहर खडा है. यह सुनकर राजा फिर फौरन दरवाजेपर आया और विक्रमने देखकर अपना माथा नवाया राजाने विक्रमसे कहा जो तुम्हारे जीमें आवे सो मांगो मैं खुश होकर तुमको वही दूंगा तब विक्रम बोला-महाराज! जो आपने मुझपर दया की है, तो वह सिंहासन मुझे बक्शो, जो इंद्रने आपको दिया है. यह बात सुनकर राजा बोला-अच्छा. सिंहासन तो हमने तुम्हें दिया, पर, यह काम मंत्रीका है, इसे तुम नहीं जानतथे. यह कहकर सिंहासन मँगाया और पान तिलक देकर उस सिंहासनपर बिठाया और कहा कि-तुम अजीत हुए. अब किसी बातकी चिंता मनमे न करना, गंधर्वसेन मेरा बडा दोस्त था और तू उसके खान-दानमें बडा नामवर हुवा. इस तरहसे राजा विक्रमको आसीस देकर रुखसत किया. राजा वहांसे अपने घरमें आया.

और अपने जीमें बहुतगा खुश हुआ. और जितने उस राजाके दुश्मन थे उनके जीमें रंज हुआ राजाके देशके लोगोंने बहुत खुशीकी और सब द्वीपद्वीपके राजा खिदमतके वास्ते आये. और जो राजा गद्दर था उसका वहां जाकर राज छीनके लेलीया. और अपना राज करता. गरज उदयसे अस्ततक खूब उसने अपना राज किया. सब रैयत आनंदसे उसके राजमें बसती थी. और जो क्षत्रिय थे सो सब उनको डरते थे और जो कोई देश विदेश जाता था सो वहां विक्रमका धर्म सुनता था. और सब मुल्क आबाद देखता था. कहीं दुःखी उसे नजर न आता था. डाड और बांध उसके राजभरमे किसीने कानसे न सुना. बल्कि घर घर आवाज वेद और पुराणकी आती थी. और जितने लोग थे वे सब स्नान ध्यान करके तीनों वख्त अपने भगवानकी यादमें रहते थे. अपने घरमें सब राजा किसी सभा करके खुश रहते थे. राजा राजप्रजा सुखी. इसके एक दिन राजा विक्रमादित्यने सभा की और सब पंडितोंको बुलाया. और पंडितोंसे राजाने पूछा कि-मेरे जीमें है कि अब मै संवत बांधूं. सो तुमसे पूछताहूं कि, मै इसबातके लायक हूं कि नहीं हूं ? सो तुम शास्त्र देखकर मुझसे विचारके कहो. सब पंडितोंने विचार करके राजासे कहा-महाराज ! अब जो तुम्हारा प्रताप है सो तीनो भुवनोमें छाय रहाहै. इस वास्ते जो

कुछ तुम्हें करना है सो कीजिये. दुश्मन तुम्हारा कोई नहीं राजाने यह सुनकर पंडितोंसे कहा कि—अब तुम बताओ कि, किस शुद्धीसे संवत् बांधू ? जो कुछ शास्त्रकी रीतिसे मुनासिब हो तिस तरहसे हमें कहो ? तब पंडितोंने कहा—पहले तो तुम अजीतमाळ पहनो, फिर उसके बाद देश देशके ब्राह्मण और जमीनदार, राजा और अपने सब कुटुंबके लोग बुलावो. सवालाख कन्यादान सवालाख ब्राह्मणोंको करो. और जितने ब्राह्मण तुम्हारे मुल्कमें है उनकी वृत्ति करदो. एक बरसका खजाना जमीदारोंको माफ करो और जो भूंका, कंगाल इस बरसमें आवे उसको वृत्तिका हुक्म करो. इसी तौरसे राजाने सब काम कियां. और सिवा इसके जो जो दान पुण्य किया उनका बयान किससे हो ? एक बरसतक राजा अपने घरमें बैठे पुराण सुनता रहा और इस तरहसे संवत् बांधा, कि तमाम दुनियाके लोक धन्य धन्य करतेथे. यह सब अहवाल राजाको रत्नमंजरीने सुनाया और राजा विक्रमादित्यका यश गाया. और कहा—राजा भोज ! जो तुम इतने हो तो इस सिंहासनपर बैठो. सुनके राजाने कहा सच है जो कुछ तूने कहा यह बात मुझेभी पसंद आई. इतना कहकर राजा अपनी सभामें जाकर बैठा. और दीवान मुसदियोंको बुलाया कि, तुम सब तैयारी संवत् बांधनेकी करो. इस दिनकी वह

साअत यों टलगई दूसरे दिन फिर राजाने सिंहासनपर बैठनेकी तय्यारी फरमाई और दीवानको बुलाकर कहा कि-तुम सब तुरतही इसकी तैयारी करो. देर नहीं लगाना. यह बात सुनकर वररुचि पुरोहित बोला-राजा ! अभी क्यों घबराते हो ? इस सिंहासनकी एक एक पुतली तुमसे बात करेगी. उन सबकी बातें सुनकर पीछे जो कुछ आपको करना होगा सो कीजिये. यह पुरोहितका बचन सुनकर राजाने उस सिंहासनके पास जाकर उसपर पांव बढ़ाकर रक्खा इतनेमें चित्ररेखा नामक-

---

दूसरी पुतली २

बोली कि, राजा ! तेरे योग्य यह आसन नहीं, और ऐसी अनीति कोई करता नहीं जो तू करनेपर तैय्यार हुआ है. इस सिंहासनपर बैठ वह, जो विक्रमादित्यसा राजा हो. तब राजा बोला-विक्रममें क्या नया गुण थे ? सो मुझसे कहो. तब वह बोली-एक दिन राजा विक्रम कैलासको गया. और वहां एक यतीसे मुलाकात हुई तब उसने राजाको योगकी रीत सब बताई. राजाने अपने मनमें इरादः किया कि, अब योग कमावें. ऐसा बिचार कर योग करनेको तैयार हुआ और राजतिलक भर्तृह-

रिको दिया और राज पाटपर उसे बिठा आप राजकाज राव धन दौलत छोड कंथा पहन भस्म लगा संन्यासी बनकर जंगलको निकल गया और उत्तरखंडमें जाकर योग साधने लगा। उस शहरके जंगलमें एक ब्राह्मण तपस्या करताथा. धुवा पीके रहता था और भूख प्यासके दुःख सहताथा. ब्राह्मणकी तपस्या देखके देवता खुश हुए. और उसको वर देने लगे और उसने न लिया तब आकाशवाणी हुई कि, हम अमृत भेजते हैं सो तू ले. एक देवता आदमीकी सूरतमें आकार उसे फल दे यह कहगया कि, जो इसको तू खावेगा, तो चिरंजीव होगा. फल लेकर वह तुरंत चला खुशी खुसीसे अपने घरको आया. और ब्राह्मणीके हाथमें वह फल दिया, और कहा कि, आज देवताओंने अमृतफल देकर कहा जो इसे खावेगा सो अमर हो जावेगा। यह बात सुनकर ब्राह्मणी व्याकुल हो रोने लगी. फिर बोली—यह अब दुःख आया. पाप हम किस तरहसे काटेंगे ? और हमेशह भीख क्यों कर मॉगें ? खाल मास सब हाडमें मिल जायगा ऐसे जीनेसे मरजाना बेहतर है. मर जानेवालेको इतना दुःख नहीं होता, इस फलको वह खावेगा जो हमेशः उठावेगा इससे योग्य, यह है कि, तुम इस फलको ले जाकर राजाको दो; और उनसे कुछ धन लो. यह सुनकर ब्राह्मण अपने जीमें समझा, यह सच है, इस संसारमें इतना जजाल कौन है इसी तरह आपसमें बाते सलाहकी करके ब्राह्मण वहांसे उठ

राजाके पास चलागया. जब राजाके द्वारपर पहुँचा तब द्वार-पालसे कहा कि, राजाको खबर दो कि ब्राह्मण आपके लिए एक फल लाया है. दरवानने राजासे जाकर अर्ज की, कि महाराज! एक ब्राह्मण फल आपके वास्ते लाया है और दरवाजेपर हाजिर है. जो कुछ हुक्म हो राजाने उसीवख्त हुक्म किया कि उसे अभी लाओ. तब हरकारेने वहीं हाजिर किया. ब्राह्मणने राजाको आकर आसीस दी कि, धर्मलाभ हो और यह फल राजाके हाथ दिया. राजाने उसको हाथमें लेकर पूँछा इसका सब वृत्तांत कहो? तब ब्राह्मण कहने लगा-स्वामी! मैंने जो तपस्या की थी सो देखकर देवताओंने उसका वर अमर-फल मुझको दिया. अब मैं अमर होकर क्या करूँगा? इस वास्ते इस फलको तुम खाओ और अमर हो; क्योंकि तुमसे लाखों जी जीते हैं. यह सुनकर राजा हँसा. और उसे लाख रुपये दिये और गांव वृत्ति करके बिदा कर दिया. फिर अपने जीमें विचार करने लगा कि, मैं तो पुरुष हूँ कमजोर न हूँगा. इसवास्ते यह फल रानीको दिया चाहिये, कारण वह मेरे प्राणका आधार है. वह जीती रहेगी तो मैं सुखभोग करूंगा. यह दिलमें ठानकर राजा महलमें दाखिल हुआ. फल रानीको दिखाया. रानी हँसकर पूंछने लगी. महाराज! यह क्या चीज है? जिसे बडे यत्नसे लिये हुये तुम यहा आये हो? इसका ब्योरा कहो? तब राजाने कहा-सुन सुंदरी! तू जो इस फलको खायगी तो

सदा यौवनवती रहेगी. दिनादिन रूप बढ़ेगा और अमर होगी. यह अहवाल रानीने सुनकर फल राजाके हाथसे लेलिया. और कहा–महाराज! मैं इसे खाऊंगी. राजा फल देकर बाहर गया. और रानीका जो एक मित्र कोतवाल था, रानीने उसे बुलाकर इसके हाथमें वह फल दिया और उसे कहा–यह हमें राजाने देकर कहा है, जो इसे खावेगा सो अमर होगा. इसवास्ते तुम मेरे दोस्त प्यारे हो, इसे खाओ और अमर हो; तो मुझे बड़ी खुशी हो. यह सुनतेही कोतवालने खुश होकर फल हाथमें लेलि-या और अपने मकानको गया एक कसबी उसकी आश्ना थी उसे वह फल देकर कहा यह अमरफल मैं तेरे वास्ते लायाहूं. तू इसे खा. यह सुनकर उसने हाथसे लेलिया, और उसे बिदा किया. फिर इसने अपने जीमें बिचारा कि, एक तो मैं कसबी हूं, और अमर हूंगी तो कितना पाप मैं कमाऊंगी. इससे बेहतर है कि, यह फल राजाको जाकर दीजिये. जो राजा जियेगा तो मुझे याद करेगा. और पुण्य होवेगा, पाप सभी कटेंगे. यह मनमें सोचकर राजाके दरबारमें गई और वह फल राजाके हाथमें दिया. राजा फलको देखकर बेसुध हुआ, और अपने जीमें कहने लगा कि यह फल तो मैंने रानीको दियाथा. जीमें यह बिचार अचंभा होरहा, और हँसकर उसे पूछने लगा कि, यह फल तुझे किसने दियाथा? वह वे सब बातें जानतीथी, पर राजासे फकत यह

कहा कि, मुझे कोतवालने दिया है. यह सुनकर उसने समझ लिया कि, रानीने बुरा काम किया उसे कुछ रुपये देकर बिदा किया और आप भौंचक रहगया. फिर समझकर कहने लगा—मैंने तो मन अपना रानीको दिया और उसने अपना दिल कोतवालको. मनका भेदी कोई न मिला ऐसे जीनेको और मेरी बुद्धिको धिक्कार है, जो मैं फिर राज करूँ! फिर उस रानीके ताईं और अनन्तर उस कोतवालको और उस वेश्याको और कामदेवको धिक्कार है, जो यह माति संसारकी करता है कि, जिससे संसार अहमक हो जाता है. बाद उस फलको लिये हुये महलमें गया और अपने चित्तमें कहने लगा—यह तन, मन, धन, जी सब चंचल है. और यह संसार जानहार है. इसमें कोई कायम न होगा. जबहीं पैदा हुआ तबहीं कालने खाया और जब मरता है तो कुछ साथ नही लेजाता. और मेरा मेरा करके जन्म गँवाता है, सुखके सब साथी है. और दुःख कोई नहीं बांटता. यह संसार जो है सो समुद्र है और माया उसका जल है. ममता मछली है. ऐसा बधिक कोई न मिला कि जो इसको मारके खाय. यह विचार करता हुआ रानीके पास गया. और उसे पूछा तूने वह फल क्या किया? तब वह बोली—महाराज! मैंने खाया. सुनकर राजाने वही फल रानीको दिखाया तब वह देखकर जड हो गई. तब राजा उस फलको लेकर बाहर आया और धोकर

खाया. तिस पीछे सोच उसको हुआ. निदान बनके जानेका सामान किया. राज, पाट, धन, दौलत और रानीकी मोहब्बत तजकर चला, न किसीसे पूछा न किसीको साथ लिया. ऐसा निर्मोही होकर निकला कि, किसीका ध्यान न किया. देश देश और नगर नगरमें चर्चा हुई कि राजा भर्तृहरि राज तजकर योगी हुआ. और वह बात उडती उडती राजा इंद्रके अखाड़ेमें पहुँची कि, राजा तो देश छोडके चला गया, और उसके देशमें बडा हुल्लड हुआ, तब यह बात सुनकर सब देवताओंने मिल कर बिचार किया कि, एक देवको रखवालीके वास्ते राजा भर्तृहरिके देशमें भेजदो, कि कोई बिदअत रैयतपर न करे, ऐसा ठहराय देवको बुलाकर वहां भेजदिया, और कहा वहांकी निगाहबानी कर. वहां तो वह रखवाली करता था, और यहां राजा विक्रमका योग पूरा हुआ, वह अपने मनमें मनसूबा करता था कि, मैं छोटे भाईको राज देकर आयाहूं इस वास्ते अब चल कर देखूं कि वह किसतरह राज करता है? यह अपने दिलमें कहके चला और रातको नगरके पास आन पहुँचा. देवने उसे आते देखा तब वह पुकारा-तू कौन है? जो इस वक्त शहरमें जाता है! या तो अपना नाम बता, नहीं तो मैं तुझे मार डालताहूं. तब उसने कहा-मैं राजा विक्रम हूं तू कौन है? जो मुझे रोकता है? तब देव बोला-मेरे तईं देवताओंने भर्तृहरिके

राज्यकी रखवाली करनेके वास्ते भेजा है. राजाने पूछा-भर्तृहरिको क्या हुआ ? उसने जवाब दिया भर्तृहरिको कोई इहांसे छलकर लेगया यह बात सुनकर राजा हँसा और उसे कहा-वह तो मेरा छोटा भाई है. फिर देव बोला, मैं नहीं जानताहूं कि तुम कौन हो और जो तुम निश्चय इस देशके राजा हो तो मुझसे लडो और मुझे मारकर जाओ बिना लडे मैं तुझे शहरमें पैठने न दूंगा. यह सुन राजा बिगडके बोला-तू मेरे तईं क्या डरता है ? और जो लडा चाहे तो मैं तय्यार हूं. इस तरह दोनों बातें कर तैयार हो लडने लगे और राजा उस देवको पछाडकर छातीपर चढ़ बैठा. तब वह बोला-राजा ! तू मुझसे वर मांग, मैं तुझे दूंगा. यह बात उसकी सुनकर राजा हंसकर बोला-मैंने तुझे पछाडा है और चाहे तो तुझे मार डालूं-तू मुझे वरदान क्या देगा ? तब वह बोला-राजा ! तू मुझे छोडदे मैं तेरे आगे इसका सब ब्योरा कहताहूं. तेरे राज्यकी धूम सब देशमें है और सब राजा तुझसे डरतेहैं पर मैं जो बात कहूं सो तू कान देकर सुन. तेरे शहरमें एक तेली है और एक कुम्हार सो तुझको मारनेकी फिक्रमें है पर तुम तीनोंमेंसे जो दोनोंको मारेगा वही अचल राज करैगा. तेली तो पातालका राज करताहै और वह कुम्हार योगी बना हुआ जंगलमें तपस्या अपने जीमें लाकर करताहै. दिलमें कहताहै कि, राजाको मारके तेलीको तेलके जलते कडाहीमें

डालूं, और देवीको बलि देकर मैं निश्चित राज्य करूं ओर तेली कहता है कि, राजा और योगीको मारके त्रिलोकीका राज्य मैं करूं और तू इस बातको न जानता था, मैंने इसवास्ते तुझे खबर-दार किया, तुम इनसे बचे रहना. ओर आगे जो मै कहताहूं सो तुम ध्यान लगाकर सुनो. योगीने आज उस तेलीको मारकर अपने बश किया है सो तेली एक सिरीसके वृक्षपर रहा है. अब वह योगी तुझको न्योता देनेको आवेगा. छल करके तुझे ले जायगा. तू न्योता लेकर वहां जाइयो. जब वह कहे कि, तू दंडवत् कर, तब तू कहियो—मैं दंडवत् करना नहीं जानता. मेरेतई एक जहान दंडवत् करता है. जो तुम गुरु हो और मैं चेला तो मुझे दंडवत् करना बताओ और उसी तरहसे मैं दंडवत करूं! जब वह शिर निहुरावे तब तू खांडा मार कि, उसका शिर जुदा हो जावे और वहां कडाह जो देवीके आगे तेलका खौलता होगा उसमें उसको और वृक्षसे तेलीको उतारके दोनोंको उसी कडाहमें डाल देना. यह मेरी बात तू गांठ बांध. इसे हर गिज कभी न भूलना. यह बात कहकर वह देव चलागया और राजा अपने महलमें आया भोर हुए सारे नगरमें खबर हुई कि, राजा विक्रमादित्य आए. दिवान मुत्सद्दी और सब अह-लकार नजर लाए. तमाम शहरमें आनंद होगया. घर घर मंगलाचार होने लगे. यहां तो खुशीके नगारे बज रहेथे इतनेमें

एक योगी आया. और राजाकी आदेश सुनाया. एक फल उसके हाथ दिया. उसने हँसकर वह फल हाथमें लिया. योगीने कहा- राजा! हमारे यहां यज्ञ होता है. एक दिनका तुम्हारा न्योता है. तब राजाने कहा हम आवेंगे. तुम अपने मनमें चिंता मत करो. सांझ हुए. पहुँचेगे. योगी यह सुनतेही ठिकाना बताकर अपनी मठीको गया जब सांझ हुई राजाभी खाडा फरसी ले तयार हुआ. और किसीसे न कहा. अकेला चलागया तुर्त योगीके पास पहुँचा. और आदेस कहा. योगी बोला कि-देवीके आगे जाकर दंडवत् कर, तो देवी तुझपर दया करे. राजा बोला- स्वामी! मैं तो दंडवत् करना नहीं जानता कि, किसतरह करते हैं? इसवास्ते आप मुझे बताओ तो मैं करूं. योगी बताने लगा. ज्योंही शिर झुकाया, राजाने देवकी नसीहत याद करके एक खाडा ऐसा मारा कि, शिर धड़से जुदा होगया. और उसे मारके खतरान किया और उस वृक्षसे तेलीको भी उतार, दोनोंको तेलके कडाहमें डालदिया. तब देवी बोली-धन्य है, विक्रम तेरे साहसको. मैं तुझसे प्रसन्न हू. तू मुझसे चाहे सो वर मांग फोर धन्य है तेरे माता पिताको, जिनके घरमें तूने अवतार लिया. देवी जब यह कह चुकी तब वे बीर आकर हाजिर हुए और राजासे कहने लगे कि, हम आगिया और कोयला दो बीर तुम्हारी सेवाके लिये आये हैं जो तुम्हारी कामना हो सो हमसे कहो हम

तुरंत पूरी करदें. सब जगह जानेकी हम सामर्थ्य रखते हैं. जल, थल, मही, आकाशमें पवनके रूप होकर जहां कहोगे वहां हम चले जावें. जैसे हनुमान तुर्त लंका पहुंचा वैसे हमभी जा सकते हैं. यह सुन खुश हो राजाने कहा--मुझे तो कुछ काम नहीं है. अगर मेरे तांई बचन दो तो मैं देवीसे तुम्हे मांगलूं. लेकिन ऐ वीरो ! जो तुमसे बचन देकर निर्वाह किया जाय तो बचन दो. तब उन बैतालोंने कहा कि—अच्छा. तब राजाने उनको बचनबद्ध कर मांगलिया. और कहा—जिस जगह मैं याद करूं तुम उस जगह मेरेपास पहुँचना. तब वीर बोले कि—राजा ! तुम जिस जगहमें हमें याद करोगे, वहां हमें पवनरूप होकर पहुँचें .यह बात उनसे कहके राजा घरको गया. ये बातें चित्ररेखा पुतलीने राजासे कहीं कि, राजा ! विक्रममें ये काम थे. इतने योग्य तू नहीं है. फिर वे वीर राजाके. साथे हुए और आगे बहुतसे काम किये. जहां विक्रमके काम पड़ा तहां वे दोनों आकर हाजिर हुए. जो कोई ऐसा काम करे तो सिद्ध हो. राजा ! तू अपने जोरवर गरूर मत कर. तुझ जैसे पृथिवीमें करोडो होगये हैं. इतनी बात जब पुतलीने कही तब राजाकी वहभी साअत टलगई. तब दूसरे दिन सुबहको राजाने फिर पांव बैठनेकी तैयारी की, और चाहा कि, सिंहासनपर पांव धरों, तब सत्यभामा नाम—

तीसरी पुतली–

बोली:—यह काम नहीं जो इसपर बैठो. पहिले मुझसे एक नई कथा सुनलो. एक दिन राजावीर विक्रमादित्य दरिया किनारेपर महलमें खिलवत करते बैठेथे, राग हो रहाथा. और हरएक रंगकी चुहल मच रहीथी कि, दिल फरेफ्ता होजावे. और एकसे एक सहेली खूबसूरत पास बैठी थीं राजाका दिल वहां बेइख्तियार लग रहाथा कि, एक पंथी त्रिया संग लिये हुए और उस त्रियाकी गोदमें एक बालक घरसे खफा होकर निकले थे. दरियाके पास आकर गुस्सेके मारे कूदपडे. मर्दके एक हाथमें रंडी और एक हाथमें वह लड़केका हाथ ये तीनों डूबने लगे. तब पुकारकर बोले कि—ऐसा धर्मात्मा कौन है, जो इन तीनों आदमियोंकी जान बचावे? उनमेंसे वह मर्द हाथ करके पुकारा जो कोई गुस्सा मार न सके तो इसी तरह हो बेअजल मर जाता है. और गिरके बहुत पछताता है. उसकी आवाज राजा विक्रमादित्यने सुनतेही पासके लोगोंसे कहा कि— यह कौन दुःखी पुकारता है? तब हरकारोंने खबर दी कि, महाराज! एक मर्द और एक रंडी लड़केके समेत पानीमें डूबते हैं, उनमेंसे वह मर्द चिल्ला रहा है कोई ऐसा उपकारी हो कि, इस डूबतोंको निकाले. यह हरकारा कहताही था कि, वह फिर पुकारा—हम तीन जान डूबते हैं. कोई हमे भगवानका

बंदा पार लगावे. यह सुनकर राजा वहांसे धाया और आकर उस दरियामें कूद पडा. जाकर एक हाथमे स्त्री और दूसरे हाथमें लड़केको पकडालिया. वह मर्दभी राजासे लिपटगया. तब राजा घबराया और आपभी डूबने लगा. इतनेमें ईश्वरको याद किया और कहा कि—हे नाथ! मैं धर्मके वास्ते आया था और इसमें मेरा जीवनभी जाता है, धर्म करते अधर्म होवेगा. राजा यह कहकर बहुत जोर करने लगा. और उस वक्त जोर उसका कुछ काम न आया. तब उसने आगिया और कोयला दोनों वीरोंको याद किया. याद करतेही दोनों वीर आकर हाजिर हुए और चारोंको उस किनारेपर रख दिया. तब वह विदेशी राजाके पांवोंपर गिरपड़ा और बोला कि, महाराज! तुमने हम तीनोंको जीवदान दिया. तुमही हमारे भगवान् हो; क्योंकि जीवदान इस वक्त तुमसे पाया राजा हाथ पकड़कर उन तीनोंको रंगमहलमें ले आया. और बिठाकर कहा. जो तुम्हें चाहिये सो माँगो तब वह बोला—महाराज! हमको हुक्म करो तो हम घरको जावें. और जबतलक जियेंगे तबतलक आपको आशिष दिया करेंगे. ऐसाही कुछ तुमने हमें दिया है. तब राजाने अपनी तरफसे लाख रुपये देकर उनको घर भिजवा दिया. इतनी बात कहकर पुतली फिर बोली-राजा, इतने लायक जो तुम हो तो इस सिंहासनपर बैठो; नहीं

तो तमाम लोग हँसेंगे, यह अहवाल सुनतेही वहभी मुहूर्त राजाका टलगया. दूसरे दिन फिर राजा दिलमें सोच करता हुआ सिंहासन-पर बैठनेको आया. तब चंद्रकला नामवाली—

चौथी पुतली-

बोली:—सुनो. राजा! तुम मन मलीन क्यों बैठे हो? और सुनो जो मैं कथा कहूं. एकरोज एक पंडित कहींसे फिरते फिरते राजा वीर विक्रमादित्यके पास आया. और उसने आकर बयान किया कि जो कोई एक महल मेरे कहे मुआफिक बनाके धरे, चैन उठावे. और बडा नाम पावे. तब राजाने कहा, अच्छा जाहिर करो. ब्राह्मण कहने लगा—तुला लग्न जब आवे तो उसमें मंदिर उठावे, जबतलक वह लग्न रहे तब तलक काम जारी रक्खे. और जब तुला लग्न होचुके तब उसका काम मौकूफ करे. इसी तरह तुला लग्नहीमें वह सारा मकान तैयार कर रावे तो उसका अटूट भंडार होजावे. और लक्ष्मी उसके यहांसे कभी न जाय. यह सुनकर राजा मनमें खुश हुआ. और दीवानको बुलाकर मन्दिर उठानेकी इजाजत, दी, कि—तुम अच्छी जगह ढूँढ़कर महल बनाओ. इतनेमें तुला लग्नभी आन पहुंचा. उस मंदिरके नीवकी देश देशमें यह हवाई हुई कि राजा विक्रम तुला लग्न साधकर महल बनाता है. जितने कारीगर उसमें काम करतेथे वे उठकर तुला लग्न

मनातेथे. जब लग्न आती थी, खुश हो हो बनातेथे, कहीं उसमें काम सोनेका और कहीं रूपेका और कहीं लोहेका और कहीं काठका, नई नई तरहसे बनताथा. चुनांचे दरयावके किनारेपर वह हवेली बनाई चार दरवाजे और सात खण्ड उसमें रक्खे. और जगह जगह जवाहिर अनमोलके उसमें जड़े और दरवाजेपर दो नीलमके बड़े नगीने लगाये कि, किसीकी नजर न लगे, वह जड़ाउ महल कितनेक बरसोंमें ऐसा तैयार हुआ कि, दुनियाँके परदेपर किसीने दूसरा न आँखोंसे देखा और न कानोंसे सुना तब दीवानने जाकर राजाको खबर दी कि, महाराज! आपके हुक्म मुआफिक मंदिर तैयार होगया है. आप चलकर उसे देखिये. जो कोई उस महलको देखताथा सो मोहित हो रहताथा. ऐसा सुन राजा वहांसे मकान देखनेको गया. एकबार राजाके साथ एक ब्राह्मणभी गया. महलको जब राजाने मुलाजहा किया तब ब्राह्मण देखकर और हँसकर कहने लगा-ऐ राजा! ऐसा घर जो मैं पाऊं तो बैठ यहां सुखसे समय बिताऊं. यह बात सुनकर राजाने कुछ मनमें सोच न किया. गंगाजल और तुलसीदल लेकर वह घर उस ब्राह्मणको संकल्प कर दिया. वह घर पाकर ब्राह्मणको ऐसा आनंद हुआ कि, जैसे चकोर रातको चन्द्र पाता है, तर्त वह अपने कुटुंबको ले आया और वहां आकर आनंदसे रहा. और रातको खुशीसे पलँगपर सोताथा कि, पहर रात गये लक्ष्मी वहां आई और कहने लगी-

बेटा! हुक्म दे तो मैं गिरू और घर बाहर संपूर्ण भरूं. खौफसे उसने कुछ जवाब न दिया तब वह दोपहर रातको फिर गई और कहा कि, ऐ ब्राह्मण! अज्ञानी! मुझे आज्ञा दे. उन्होंने चिंता करके रात गँवाई और सुबह हुए राजा वीर विक्रमादित्यके पास आया. मन मलीन और रातके अहवालसे डरा हुवा रंग जर्द चिहरेका और डरसे कुम्हलाया हुआ इस शक्लसे देख राजा उसे हँसने लगा. फिर कहने लगा कि, कलकीसी खुशी हमने आज न देखी, ऐ ब्राह्मण! यह अचंभेकी बात है. तब ब्राह्मण बोला कि-सुन स्वामी! मेरे दुःखके तुम दाता हो, प्रजाके सुख देनेवाले और तुम शकबंधी नरेश हो. जैसे राजा कर्ण और इंद्र अपने समयमें दानी थे, वैसेही इस समयमें तुम हो. आपने जो मंदिर मेरे तईं दिया है उसकी हकीकत मैं कहताहूं. मालूम नहीं कि, इस मंदिरमें भूत है! या पिशाच! मेरे तईं उसने सारी रात सोने नहीं दिया. आपकी कृपासे और इन लडकोंके भाग्यसे जीता बचा. इसवास्ते अब मैं यहां आया हूं. इससे भीख मांगना मुझे बेहतर है. पर उस महलमें न रहूंगा यह बात सुन राजाने प्रधानको बुलाया और ऐसा कहा कि, जो इन मकानमें लगा है, सो हिसाब करके इस ब्राह्मणको दो. राजाकी आज्ञा पाय दीवा-नने हिसाब कर तोडे रुपयोंके लदवाकर ब्राह्मणके साथ कर दिये और वह अपने घरको गया. एक दिन साअत देख उस

हवेलीमें राजा जाकर रहा और बैठकर कुछ विचार करने लगा. इतनेमें हाथ बाँधकर लक्ष्मी आन खडी हुई और बोली कि-धन्य राजा विक्रम ! तेरे धर्मको. इतना कहकर लक्ष्मी उस वक्त तो चली गई और राजाने तो वहां आराम किया. जब पहर रात रही तब लक्ष्मी फिर आई और कहने लगी कि, राजा ! अब मैं कहां गिरूं ? राजाने कहा-जो तू पड़ा चाहती हो तो पलँग छो- डके जहां तेरी इच्छा हो तहां गिर इतनेमें खूब तरहसे सोनेका मेह तमाम नगरमें बरसा. सुबह हुवा तब राजा उठा और देख कर कहने लगा-हमारी रैयतपर बहुत सीखथी, लेकिन अब कोई दिन निचिंत हो आरामसे रहेगी इतनेमें दीवान आया. और खबर दी कि, महाराज ! तमाम नगरमें कंचनकी वृष्टि हो गई है इसवास्ते अब जो हुक्म आप करोगे वैसा हम करें. तब राजाने कहा कि-तमाम नगरमें ढोल बजवादो कि जिसकी हद्दमें जितनी दौलत है सो उसे ले. और कोई किसीको मना न करे. यह राजाका हुक्म पाकर सब दौलत रय्यतने अपने २ घरमें भरी यह बात कहकर चंद्रकला पुतली बोली कि- राजा भोज ! सुन राजाविक्रमके गुण. वह ऐसा राजा था और प्रजाका हितकारी, इससे तू किस तरह उसके सिंहासनपर बैठता है ? तेरी क्या जान है ? यह पुतलीकी बात सुनकर राजा भोज अज्ञान होगया. और वररुचि पुरोहितभी शरमिंदा हुआ.

वह साअत भी गुजरगई. दूसरे दिन राजा फिर सिंहासनपर बैठने चला. और मनमें चाहा कि, पांव सिंहासनपर धरें. तब लीलावती नामक—

पाँचवीं पुतली—

बोली—सुन राजा विक्रमके गुण. एक दिन दो पुरुष आपसमें झगडने लगे, एकने कहा—कर्म बडा और दूसरेने कहा बल बडा किरामतका तरफदार बोला नशीब बड़ा है कि, असम्भवको आदा कर देता है और जोरका जानिबदार कहने लगा—जोर बडा है जोरावर होवे तो तमाम जहानको ज़ेर कर दे. इस तरह दोनों झगडते २ राजा इंद्रके पास गये और हाथ जोडकर कहने लगे—स्वामी! आप हमारा न्याय करो जो दोनोंमें सच हो उसे फरमाइये. और झगडा निबेडिये. तब राजा इंद्र बोला—इसका न्याय हमसे न होगा. इस इन्साफको वह करेगा, जिसने योग किया होगा. इससे बेहतर यह है कि, तुम मर्त्यलोकमें राजा विक्रमादित्यके पास जाओ, तुम न्यायको वह चुकावेगा उन्होंने राजा इंद्रकी आज्ञा पाय राजा विक्रमादित्यके पास जाकर अपना अरज किया और कहा कि—हम तीनों भुवनमें फिर आये पर किसीने हमारा न्याय नहीं चुकाया इसका धर्म अधर्म विचारके आप हमारा न्याय करो. यह बात सुन जाने कहा कि, आज तुम अपने अपने घरको जाओ. और छः

महीनेके बाद हमारे पास आओ. तब हम तुमको इसका जवाब देंगे. यह सुनकर वे दोनों अपने घर गये राजा अपने मनमें चिंता कर बख्तर पहन काछा चढा खांडा फरी ले बिदेश चला और अपने दिलमें यह आहद किया कि, जबतलक इसका भेद न पावेंगे, तबतलक देशमें फिर न आवेंगे तब फिरते फिरते समुद्रके किनारे जा पहुँचा. तब वहां एक नगर उराने बहुत बडा निपट सुहावना खूब आबाद पाया. और उसमें तरह तरहकी हवेलियां जिनमें करोडों रुपये लगे थे और उनमे सिवाय जवाहिरके कुछ नजर न आताथा. वह देखकर राजा कहने लगा कि, जिसका यह नगर है, वह राजा कैसा होगा? शहरमें फिरते फिरते शाम होगई और शहर अखीर न हुआ. इतनेमें क्या देखता है कि, एक दूकानमें महाजन शिर निहुड़ाये हुए बैठा है. तब राजा उसीके सामने जा खडा हुआ. तब सेठने राजासे कहा तू किस देशसे आया है? और तेरा मन मलीन क्यों हो गया है? किसे ढूढता है? और क्या तेरा काम है? यह सब अपना अर्थ मुझसे कह? किसका बेटा है तू? और क्या तेरा नाम है? तब वह बोला—सेठजी! मेरा नाम विक्रम है. मैं आज तुम्हारे पास आयाहूं मेरे दिलका मकसद यह है कि, मैं राजासे मुलाकात करूं सो आज मुलाकात न हुई कल मैं राजासे मिलूंगा और उनकी सेवा करूंगा. जो वो मुझे नौकर रक्खेंगे और

मेरा महीना कर देंगे तो मैं रहूंगा. यह बात सुनकर वह महाजन बोला—तुम क्या रोज लोगे? तब राजा कहने लगा. जो कोई लाख रुपये रोज देगा तो हम उसके यहां नौकर रहेंगे. तब वह बोला—भाई! तुम क्या काम करतेहो? जो तुम्हें लाख रुपये रोजको कोई देवे वह काम मुझे बताओ? तब उसने कहा—जिस राजाके पास मैं रहताहू उसकी गाढ़ी मुश्किलमें काम आताहूं. सेठ हँसकर बोला, लाख रुपये रोज हमसे लो और कठिनतामें हमारे सहाय हो सुबह हुए नौकर रक्खा और दूसरे दिन लाख रुपये दिये. उसने उनमेंसे आधे रुपये भगवानके नाम संकल्प कर ब्राह्मणोंको दिये, आधेके आधे कंगालोंको दिये. और जो बाकी रहे उनका खाना पकवाकर भूखोंको खिला दिया. रातहुए पर फिर जो एक फकीरने सवाल किया उसेभी खड्ग रेहन रखकर और भोजन पेटभर करवाया और आप चने चबाकर गुजरान की कितनेएक दिन उस साहूकारके पास रहकर रुपये हररोज योंही खर्च करते रहे. गरज किस्मतने तो यारी की तब जोर बोला—अब मेरी बारी है, कि, एकाएक सेठके दिलको कुछ उचाटी हुई और एक जहाज तैयार कर किसी देशमें जानेका उसने इरादा किया और विक्रमसे कहा—मैं किसी देश जाताहूं. वह बोला—स्वामी मैंने यह बचन दियाथा कि, गाढी भीडमें तुम्हारे काम आऊंगा. अब मैं तुम्हारे

ऽाथ हूं; क्योंकि तुमने प्रतिपाल किया है. तब उसेभी सेठने जहाजपर चढालिया. और रवाना हुआ कितनेक दिनोंके बाद जहाज मॅझधारमें तुफानसे तवाह होने लगा. तब वहां लंगर डालकर उसी जगह चंद्रोज रहा. उससे आगे टापू था सिंहावती नाम राजकन्या रहतीथी. हजार कन्या उसके साथ थीं इसमें जब वह तुफान होगया तब सेठने कहा कि, अब लंगर उठाओ और चलो. लंगर जलके बीच कहीं अटक रहाथा. मुश्किलसे उठ न सकताथा. जोर कर रहेथे, निदान निराश होकर सब परमेश्वरका स्मरण करने लगे और कहने लगे कि—इस मझधारसे पार करनेवाला तेरे सिवाय कोई नहीं. जहां जहां जिस जिसके तई मुश्किल पडी है, तहां तहां सहाय हुआ हैं दीनदयालु तेरा नाम है, इसवास्ते तुझको हम शरण है और हमपरभी दया करो इतनेमें बनियां घबरा कर विक्रमसे यह कहने लगा. अब अथाहमें पडे हुए हैं. किनारा हमें नजर नहीं आता. और एक बात तेरेही इस वख्त याद आई है जब तू हमारे पास नौकर रहाथा तब तूने इकरार किया था कि, मुश्किल काम मैं आशान करूंगा. तो इससे और क्या कठिन होगा? कालके मुँहमें अब पड गये हैं. यह सेठजीकी बात सुनकर विक्रम उठा और फरी खाडा हाथमें ले रस्सा पकड जहाजके नीचे उतर गया. जाकर बहुतसी हिकमत की पर कांई हिकमत

न चली और कहने लगा कि, सेठजी ! अब पालें इसकी चढ़ाओ, लोगोंने पालें चढ़ाई और उसने कूदकर लंगर काटदिया. पानीकी तेजीसे और हवाकी तुंदीसे जहाज चल निकला. और कोई रस्सा उसके हाथ न लगा उसी जगह रहगया. जो कुछ विधाताने कर्ममें लिखा है उसको कोई मिटा नहीं सकता. अलकिस्स. वह राजा वहांसे बहताहुआ चला. और जाते जाते उसे एक नगर नजर आया. वह वहां जानेलगा. उस नगरका जो दरवाजा था उसपर ज्योंही निगाह की त्योंही देखा कि, चौखटपर लिखा हुआहै कि सिंहावतीकी राजा विक्रमादित्यसे शादी होगी. यह देख राजाको अचरज हुआ कि, यह किस पंडितने लिखा है ? जब उस दरवाजेके अंदर गया तो वहां जाकर एक महल देखा और वहां रंडियां हैं. मर्द कोई नहीं है. और एक अच्छे पलँगपर सिंहावती सोती है. और चौकीकी सहेलियां बैठी हैं यहभी जाकर पलँगपर बैठगया. और तुर्त उसको जगा दिया वह उठकर बैठगया तब राजाने हाथ पकड़लिया और दोनों सिंहासनपर जा बैठे. सब सखियां हाजिर हुई और इस भेदसे वाकिफ थीं कि राजा विक्रमादित्य यहां आवेगा और इससे उसकी शादी होगी. राजाको जो देखा तो फूलोंकी माला ले आई और गंधर्वब्याह किया. राजा जैसा दुःख पाकर पहुँचाथा वैसाही हँसा. इसवख्त उसने सुखोपभोग किया. अलगरज वे दोनों आप-

समें रहने लगे. और नोजवानीकी ऐस करने. हर एक तरहका लुत्फ उठाने लगे और सखियांभी खिदमतमें हाजिर थीं. और मानिंद चकोरके चांदसा राजाका मुँह देखतीथीं चंदमुद्दत राजाको इसी तरह गुजरी. अपने राजाकी सुध कुछ न रही. यह बातें कह लीलावती पुतलीने फिर कहा कि—राजा भोज! जैसा राजाने बल किया वैसाही विधाताने उसको सुख दिया. किस्मतने यह तमाशा दिखाया. फिर कहने लगी कि, उन सखियोंमेंसे एक सखीसे राजा विक्रमादित्यकी बहुतसी प्रीति हुई और वह राजाकी दया विचार वहांका भेद कहनेलगी. ऐ राजा! तुम यहां आन फँसेहो जीते यहांसे कभी न निकलोगे. तुम्हारा नाम सुनकर और तुम्हारे राजका ध्यान करके मुझको रहम आता है, क्योंकि तुम्हारे सरीखे धर्मात्मा दयावंत, दाता, परोपकारी होकर यहां रहना इसमें तुम्हारा भला नहीं है. उधर लाखों आदमी तुझबिना दुःख पाते होंगे. उस सखीकी बात सुनकर राजाको ज्ञान हुआ और अपने राजका ध्यान आया. तब सखीसे पूछा—यहांसे जानेका भेद मुझे बताओ तब वह बोली—एक घोडी इस राजकन्याकी घुडसालमें है, सो उदयसे अस्ततलक जा सकतीहै. यह बात सुनकर दूसरे दिन राजा रानीको अपने साथ लेकर टहलता हुआ अश्वशालामें जा निकला. घोडोंको देख कर तारीफ करने लगा. रानी बोली—जो तुझे शौक होय तो

इस घोडोंमेंसे किसी घोडेपर चढाकरो. भेद तो इसे वहांका मालूमही था. दूसरे दिन घोडा उसने वहांसे मँगवाया. और उसपर सवार हो वहां फेरने लगा. वह राजाका अहवाल देख रानीभी खुश होती थी. और राजाभी खुश होताथा. इसी तरह कईएक दिन और २ घोडोंपर सवार होतारहा. एक दिन उस घोडीको मँगाया और रानीके हुक्मसे उस घोडीपरभी सवार होगया. रानी तो गफलतमें रही, कि इसने कोडा किया. घोडी मानिंद हवाके राजाको ले उडी और सखियाँ पछता. रहगईं. इतनेमें राजा अवन्ती नगरीको आन पहुंचा. वहां नदीके किनारे एक सिद्ध बैठा देखा, तब राजा उतर दंडवत कर उसके पास जाकर बैठा. सिद्धका जब ध्यान खुला तब उसने इसे देखा, देखकर खुश हुआ और एक फूलकी माला इसे दी और कहा कि-राजा! विजयमाला मैंने तुझे दी है. इसका गुण यह है कि, जहां जायगा वहां फतेह पायगा. और यह माला पहिनेपर तू सबको देखेगा पर तुझे कोई न देखेगा. फिर एक छडी राजाको दी और उसका ब्यौराभी समझाकर कहा कि, इस लकडीका यह खयाल है कि पहले पहर रातको इसके पास सोनेका जडाऊ गहना जो मांगोगे तो यह देगी, और दूसरे पहर रातको एक खूबसूरत नारी ऐसी देगी कि जिसे देख राजा तुम आशिक होजाओगे और तीसरे पहर रातको जो इसे

हाथमें लोगे तो तुम सबको देखोगे और तुम्हें कोई न देखेगा. चौथे पहर रातको मानिंद कालके यह होजायगी इसके डरसे कोई दुस्मन तुम्हारे पास आ न सकेगा. यह बात सुनकर योगीने राजाको रुखसत किया. राजा जब उज्जैन नगरीके पास जाकर पहुँचा तब उधरसे एक ब्राह्मण और एक भाटको आते देखा और जब नजदीक जाकर पहुँचे तो उन्होंने आशीर्वाद देकर कहा महाराज! आपके द्वारपर हमने बहुत दिन सेवा की पर हमारा भाग्यही ऐसा था कि कुछ इसका फल न मिला. तब राजाने सुननेही ब्राह्मणको छडी दी और भाटको माला दी. और उसका सब भेद कह दिया. तब आशीवाद देकर वे दोनों कहने लगे. महाराज! इस समयमें तुम राजा कर्ण हो. तुम्हारे बराबर दानी आज पृथ्वीमें दूसरा और नहीं. यह कहा और दोनों विदा होकर गये. राजाभी अपने स्थानको गया. तब दीवान प्रधान सब आनकर हाजिर हुए. जहरकी तमाम रैयत खुश हुई और वे दोनों झगडलूभी यह खबर सुन तुर्त आकर राजाके सामने खडे रहे और कहा—महाराज! आपने जो छः महीनेका करार कियाथा सो बीत गया अब हमारा न्याय करदीजिये. यह सुनकर राजा बोला कि-बिना बल कर्म कछ कामका नहीं और बिना कर्म बल काम नहीं आता, इससे ये दोनों बराबर हैं इसको सुन संतोषकर बाद दोनों अपने अपने घरको गये. ऐ

राजा भोज! यह अहवाल मैंने तुझसे इस लिये कहा है कि, तू समजकरके यह खयाल अपने जीसे उठावेगा. इसवास्ते कि, जो ये लियाकत रक्खे वह सिंहासनपर बैठे. वहभी योग राजाका बीत-गया. फिर उसके दूसरे दिन भोर होतेही सिंहासनपर बैठनेको तैयार हुवा कि, इतनेमें कामकंदला—

छठी पुतली—

हँसी और कहने लगी, कि—जिस आसनपर राजा विक्रमने पॉव धरा है तू उसपर बैठनेके लायक कहाँ है? ऐ पापी! तू अपने होशको गुम न कर और पांव खाली रखदे; क्योंकि तुझे देख मेरा मन मलीन होजाताहै. इस सिंहासनपर वही बेठे जो विक्रमसा राजा हो. तब राजा बोला—तू अपने मुँहसे कह कि, विक्रम राजाने क्या क्या कर्म किये है? वह बोली-तू सुचित होकर बैठ. मैं नृपतिकी कथा कह-तीहूं. एकदिन नृपती अपनी सभामें बैठाथा. वहां एक ब्राह्मणने आकर एक अचरजकी बात कही कि, उत्तर दिशामें एक बड़ा बन है और उस वनमें एक पर्वत और उसके आगे एक तालाव है. और उस तालाबमें एक खंभ स्फटिकका है. जब सूर्य निक-लताहै तब उस सरोवरमेंसे वह खंभभी निकलता है और ज्यों

ज्यों सूरज चढताहै त्यो त्यों खम्भभी बढताहै. जब ठीक दो पहर होतीहै तब वह खंभ सूर्यके रथके बराबर जाकर पहुँचता है. तब उस जगह रथभी खडा रहता है. वहां सूर्य जब कुछ भोजन कर लेतेहैं तब रथ फेर आगे ले चलतेहैं. और खंभभी घटता जाताहै. निदान सामके वख्त पानीमें लोप हो जाता है. इसको देवता या दैत्य कोई नहीं जानता. यह बात ब्राह्मणके मुँहसे सुनकर राजाने अपने मनमें रक्खी, जाहीर न की और उसके तई कई रूपये दे बिदा किया और अगिया कोयला बेता-लोंको याद किया वे दोनों बीर वहा आकर हाजिर हुए. और उन्होंने कहा कि, हमें जो इस वख्त आपने याद किया है सो आज्ञा कीजिये. कहिये स्वर्गको जावें? कहिये पातालको? या कहिये समुद्रपार? इन तीनों लोकोंमें जहां आपकी मर्जी हो तहां लेचलें. तब हँसकर राजाने कहा—एक कौतुक देखने हम जाया चाहते हैं सो वह उत्तरखंडमें है तहा तुम लेचलो. यह सुनकर बीर कांधेपर चढा, राजाको लेउडे और उस जगह तुर्त जा पहुँचे. तब राजाने वह तालाव देखा कि, चारों घाट उसके पक्के हैं. हंस बगुले उसमें फिरतेहैं. और मुरगाबियां चकोर पनडुबियां कलोल करतीहै. कमलके फूलोंपर भौंरे गुंज रहे हैं. मोर बोल रहे हैं. कोयल कूक रही है. और तरह तरहके पच्छी हुलकारते हैं. फूलोंकी सुगंधोंके साथ पौन चली आती है. और मेवादार दर-ख्तकी डालियां तो लचके खाती हैं. राजा यह तामा देखकर मनमें

बहुतही खुश हुआ, रातभर वहीं रहा. जब सुबह हुई तब सूर्य निकला जो कुछ अहवाल ब्राह्मणने कहाथा वह सब वहां देखकर वीरोंसे कहा–एक बात मेरे जीमें आती है, कि मेरे तईं ले जाकर इस खंभपर बिठलादो. और भगवानका ध्यानकर अपने स्थानको जाओ. तब वीरोंने उसे खंभ पर ले जाकर बिठा दिया और वे अपने मकानको गये. ज्यों ज्यों वह बढ़ने लगा त्यों त्यों राजा अपने दिलमें खौफ करने लगा जितना सूर्यके नजदीक पहुंचताथा उतनाही गर्मीसे जला जाताथा। निदान सूर्यके निकट पहुंच जलकर अंगार होगया. जब खंभ बराबर रथके पहुंचा और रथवान्ने एक मुर्दा जला हुवा देखा तब अपने रथके घोडोंकी बाग खैंचीं. सूर्यने झांककर देखा कि, खंभपर जला हुआ एक आदमी लग रहा है. सूर्य त्राहि त्राहि कर बोले कि–यह साहस आदमीका नहीं. यह कोई योगी है या देवता या कोई गंधर्व. इस मुर्देके होते मैं इस जगह किसतरह भोजन करूंगा? यह कहकर सूर्यने अमृत ले इसपर छिडकाया तब राजा राम रामकर पुकार उठा और देखकर सूर्यको दंड-वत् कर हाथ जोड़ कहने लगा कि, धन्य, है भाग्य मेरा और मेरे कुलका जो आपके दर्शन पाये और मैंने इस जन्ममें यज्ञ दान किये थे इसीके सबबसे तुम्हारे चरण देखे जिन्दगीका जो फल था सो मुझे मिला. इच्छा संसारमें सबको है, लेकिन जिस

पर तुम्हारी मिहरबानी हो उसीको दर्शन मिलताहै. यह सुनकर सूर्य बोले कि–तू कौन है ? तेरा क्या नाम है ? तुझे देख देखके मेरे जीमे तरस आतीहै. अपना नाम तू जल्दीसे कह तब राजा बोला कि–स्वामी ! नगर अंबावतीमें गंधर्वसेन नाम जो राजा था उसका मैं बेटा हूं. मेरा नाम विक्रम है. आपकी कथा मैंने एक ब्राह्मणके मुँहसे सुनीथी. तब मुझे आपके दर्शनकी इच्छा हुई और आपकी तवज्जोहसे आपके चरण देखे. अब मेरे ताँई आज्ञा दीजिये तो मै विदा हूं. यह सुन सूर्यने हँसकर अपना कुंडल उतारकर राजाको दिया और कहा अब तूं निडर राज कर. फिर सूर्यका रथ आगे बड़ा और खंभभी घटने लगा. जब राजा अकेला रहगया तब बीरोंको अपने पास बुलाया वे आकर हाजिर हुये. उनके कांधेपर सवार होके अपने मकानको आया. जब शहरमें दाखिल होने लगा तब सामनेसे एक गुंसाई आया, और राजासे अपने योगकी मतिसे कहा-महाराज ! जो आप सूर्यके पाससे कुंडल लायेहो सो मुझे दान दीजिये. और यश धर्म, बडाई लीजिये. राजा बोला–ऐ मतिहीन ! ऐसा योग तूने कब कमाया ? जो तू कुंडल मांगता है. वह संन्यासी कहने लगा कि–महाराज ! मैंने योग तो कुछ नहीं साधा. पर सुनाथा, कि, राजा विक्रम बडा दानी है इसलिये मैंने आपको जांचा. राजाने हँसकर कुंडल उतार उसके हाथ दिया. वाह खुश होता हुआ अपने घरमें गया. कामकंदला यह बात सुनाकर कहने लगी–

राजा ! तुझमें इतनी शक्ती हो तो तूभी इस सिंहासनपर बैठ. यह बात सुन राजा मनमलीन तो महलमें गया. दूसरे दिन राजा मनमें गुस्सः खाताहुआ फिर सिंहासनपर बैठनेको चला और वररुचि पुरोहितसे कहा कि-इस बेर में पुतलीके रोकनेसे न रुकूंगा आज सिंहासनपर मैं जरूर बैठूंगा. जब राजाने अपना पांव उठाकर सिंहासनपर बैठनेको चाहा कि, पांव रक्खूं तब कामोदी नाम—

सातवीं पुतली-

कहने लगी- और पांव तले आन गिरी, तब राजाने यह देख दुखित होके पांव खेंचलिया. और उस पुतलीसे कहा-तू किस कारण पांवतले आन गिरी ? तब इसने कथा शुरू की कि, हम जो हैं अबला सो सतयुगकी हैं. राजा! तेरा अवतार कलियुगमें हुआ. हमें पहले एक मर्दको छोड दूसरेका मुँह नजरसे नहीं देखा. हम पहले अपना माजरा कहती हैं कि, विश्वकर्माने तो हमें जन्म दिया और बाहुबल राजाके पास आकर रहीं उसने राजा वीर वि-क्रमादित्यको हमें दिया, वह अपने घर ले आया. जब हम वहांसे वि-छुडीं तबसे कभी सुख नहीं पाया. जो उस राजाके बराबर होवे सोही इस

सिंहासनपर बैठे राजा बोला-विक्रममें वसफ क्या थे? तू वे मुझसे बयान कर. तब पुतली बोली-सुन राजा! विक्रमका अहवाल. एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य अपने घरमें दोपहर रातको सोता था और-तमाम शहर नींदमें यहांतक गाफिल था कि, जो किसी आदमीकी आवाज न आतीथी. इतनेमें उत्तर दिशाकी तरफ नदीके पार एक स्त्री ढाढ मारके रो उठी. उसका आवाज राजाके कान पडगया. तब राजा अपने मनमें चिन्ता करने लगा कि, हमारे नगरमें कोई दुखी आया है कि, वह अपने दुःखमे कूक मार मार रो रहा है. यह बात दिलमें विचार ढाल तलवार हाथमें ले उधरको चला. और नदीके किनारेपर पहुंचकर वस्त्र छोड लंगोट मार पैरकर पार हुआ और थोडा आगे बढकर देखा तो एक अति सुंदरी जवान नारी खडी कूकमार रो रही है. उसके पास जाकर राजाने पूंछा कि, पुरुषका तुझे वियोग है? या पुत्रका शोक है? सो कह! या तुझे सौतका साल है? इतने दुःखोंमें किस दुःखसे तू रोतीहै? जो कुछ तुझे व्यापा है सो मुझे कह? तब वह कहने लगी-सुन राजा! हमारा बालम चोरी करताथा इतनेमें शहरके कोतवालने उसे पकडकर शूली दिया है. और मैं उसकी मुहब्बतसे कुछ खाना खिलानेको लाईहूं और चाहती हूं उसे भोजन करवाऊं. पर शूली ऊंची है और मेरा हाथ उसके मुंह तलक नहीं पहुंचता. इस दुःखसे रोतीहू ओर बहुत यत्न करतीहूं पर पहुंचने नहीं पाती. अब नरपतिने कहा यह तो थोड-

डीसी बात है इसके वास्ते तू क्या रोतीहै? उससे जवाब दिय कि, मुझे यह थोडी बहुतही है. तब राजा बोला—मेरे कांधेपर चढ उसे खिलाई. तब वह कंकालिन राजाके कांधेपर चढी. उस शूलीपर चढ जो टंगाथा उसे खवाने लगी. तब रक्त राजाके बदनपर गिरन लगा. राजाने मनमें सोचा कि, यह कोई और है! यह मनुष्य नहीं इसने मुझ धोखा दिया. तब अपने जीमें राजाने सोचकर पूछा कि, कह सुंदरी! तेरा पिया भोजन करता है कि नहीं? तब कंकालिन बोली—रुचिसे खा चुका, अब इसका पेट भरगया. इसवास्ते मुझे कांधसे उतार. जब हेठ उतरी तब राजाने कहा उसने चाहसे खाया? तब कंकालिन हँसकर बोली—तू मांग जो मुझे चाहिये होय? मैं तुझसे बहुत खुश हुई. मैं कंकालिन हूं अपने जीमें मुझसे मत डर. तब वह बोला—मैं तुझसे क्या डरूंगा और क्या मागूगा? तैंने तो मर्दको मेरे कांधपर चढ खवाया सो तू मुझे क्या देगी? वह फिर बोली कि—राजा! तू इसके खयालमें मत पड कि, मैंने क्या किया और क्या न किया? जो तुझे इच्छा होय सो मांगले. राजाने हँसकर कहा कि—अन्नपूर्णा मुझे दो और जगतमें यश लो. वह बोली—अन्नपूर्णा मेरी छोटी बहन है. तूं मेरे साथ चल मैं तुझे दूंगी. इस तरह आपसमें दोनो वहांसे वचन कर चले. आगे रे कंकालिन पीछे पीछे राजा नदीके किनारे जा पहुंचे वहां एक मंदिर था, उसके द्वारे कंकालिनने ताली मारी और अन्नपू॰

र्णाने प्रकट होके उसके कहा कि-यह भूपाल कौन है? वह बोली कि-यह राजा विक्रम है इसने मेरी सेवा की है. और मैंने इससे वचन हारा है अगर मेरी मोहब्बत तेरे दिलमें हो तो अन्नपूर्णा इसे दे. तब हंसकर उसने राजाको एक थैली दी. और कहा कि-इसमेंसे जितनी खानेकी चीज तुम मागोगे उतनी पाओगे. तब राजाने हाथ फैला लेली. और वहांसे खुश हो नदीके किनारे आन स्नान ध्यान कर निश्चिन्त हुआ कि इतनेमें एक ब्राह्मण वहां आन पहुंचा. उसको राजाने पास बुलाया और कहा कि-कुछ भोजन करोगे? उसने कहा-मुझे भूंख लगी है, जो आप देओगे तो मैं खाऊंगा! राजा बोला-क्या खाओगे? किस चीजपर तुम्हारी सूरत है? तब ब्राह्मण बोला-इस वख्त मिले तो पकवान खाऊंगा. राजा अपने मनमें सोचने लगाः— जो इसदम पकवान न पहुंचेगा तो मैं ब्राह्मणसे झूठा हूंगा. इतनी बात मनमें बिचार थेलीमें हाथ डालकर जो निकाला सो देखा कि पकवानही निकला. ब्राह्मणने पेट भरकर खाया और बोला-महाराज! भोजन तो मैं किया, अब इसकी दक्षिणाभी दीजिये. तब राजाने कहा-महाराज! आप जो दक्षिणा मांगोगे सो मैं दूंगा, ब्राह्मण बोला-यह थैली मैं दक्षिणा पाऊं तो आनंदसे अपने घर जाऊं थेली ब्राह्मणको देकर राजा अपने महलमें आया. इतनी कथा कहकर वह राजा भोजसे

फिर बोली कि-इतनी मेहनतसे थैली पाई और ब्राह्मणको देनेमें बार न लगाई. ऐसा साहसी और ऐसा दानी जो तू हो तो इस सिंहासनपर बैठ और नहीं तो पातक होगा. वहभी मुहूर्त राजाका टल गया जब दूसरे दिन फिर राजा सिंहासनपर बैठनेको आया. तब पुष्पावती—

आठवीं पुतली-

बोली-हे राजा भोज ! तूने जो सिंहासनपर बैठनेका चित्त किया है सो इसकी आशा मनसे छोडदे. राजा बोला-मैं किसतरह छोडूं ? तब पुतलीने कथा शुरू की कि, एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य अपने दरबारमें बैठाथा उसवक्त सब राजा मुजरेको हाजिर थे. इतनेमें एक बढईने आकर सलाम किया और कहा, महाराज ! मैं आपके दर्शनको आयाहूं और एक घोड़ा आपके लिये लाया हूं. राजाने आज्ञा की कि-ले आ. बढईने जो हिकमतका घोडा बनाया था सो नजर किया. राजाने घोडेको देख उससे पूंछा-कि, इसमे क्या २ गुण हैं ? बढईने कहा-महाराज ! इसमें ये गुण हैं कि, न यह कुछ खाता है. न कुछ पीता है. और जहां जाहो तहां ले जाता है. दर्याई घोडेके बराबर है. घोडा इस वक्त चालाकीसे एक जगह

ठहरता न था. कूद फांद रहा था. ज्यों ज्यों राजा देखताथा त्यों त्यों रीझताथा. आखिर पसंद करके कहा कि, इसको इस मैदानमे फेरकर दिखाओ. ज्योंही उसने कोडा किया. फिर तो गर्दही नजर आतीथी. और घोडा मालूम न होताथा. जब ऐसे गुण घोडेमे राजाने देख, तब दीवानको बुलाकर कहा कि— एक लाख रुपये इसे दो. दीवानने अर्ज की–कि, महाराज! यह काठका घोडा और लाख रुपये इनाम मुनासिब नहीं. राजाने दो लाख रुपये फरमाया. तब उस दीवानने चुपके हवाले कर दिये. और अपने दिलमें सोचा जो कुछ और तकरार करूंगा तो रुपये और बढेंगे. वह बढई रुपये ले अपने घरको गया. घोडा थानपर बांधा और वह यह कहतेहुये चला गया, कि, इसपर सवार होते कोडा न कीजो, न एड मारियो पर किस्मतका लिखा कोई मिटा नहीं सकता. जो बात हुई चहती है, सो होतीही है कई दिनके बाद राजाने घोडा मंगवाया और अपने मुसाहिबोंसे फरमाया कि, कोई तुममेंसे सवार होकर इस घोडेको फेरे तो हम देखें यह बात सुनकर वे एकेकका मुंह देखने लगे. घोडेकी चालाकीसे कोई न चढा. तब राजा झुंझलाकर बोला- घोडेको साज लगाकर तैयार कर आओ. यह बात सुनकर एकही जगह हजार आदमी दौडे और जल्दी तैयार कर लाए. तब राजा सवार होकर वहां फेरने लगा, कि, वह चाहताथा कि आसन जमाकर घोडेको अपने काबूमें लावे पर वह रानोंसे

निकला जाताथा और पारेकी तरह जगहपर ठहरता न था, छलावेकी मानिंद छलबल कर रहाथा. राजा खुशीके मारे बढ़ईकी बात भूल गया. और घोडेको कोडा दिया. चाबुक लगा तेही वो आग बबूला होकर ऐसा उडा कि समुद्रपार लेगया. और एक जंगलमे दरख्तके ऊपरसे गिरा आप रानोंसे निकल गया. राजाभी दरख्तपरसे लडखडाता हुआ नीचे गिर पडा और यह हालत हुई कि मृतकसा हो गया. जब कितनी देर गयी. तब कुछ उसे होश आया, तब अपने दिलमें कहने लगा कि- देश, नगर, राजपट, रैयत और आपने पराये सबके सब छूटे किस्मत. यहां मुझे लेआई देखिये आगे क्या होय ! यह मनमें बिचार कर धीरज बांध उठकर वहांसे आगे चला, ऐसे महाबनमें जा पडा कि निकलना फिर मुष्कील हुवा, पर ज्यों त्यों उस जंगलसे भूला भटका दश दिनमे सातकोस राह चलकर फिर ऐसे एक बनमे जा पहुँचा कि, उसमें ऐसा अँधियारा था कि, हाथको हाथ न सूझताथा और चारों तरफ, शेर, गैंडे चिते बल्कि सब परिंदे बोल रहेथे. उनकी डरावनी आवाजें सुनकर राजा सहमा जाता था. कभी पूर्व, कभी पश्चिम, कभी दक्षिण, कभी उत्तर, भटका भटका फिरता था पर कहीं राह न मिलतीथी. इस तरह दुःख भोगता हुआ पंद्रह दिनके बाद एक तरफ जा निकला. वहां एक तमाशा नजर आया कि, एक मकान है और उसके बाहर बडा दरख्त और दो बडे

हुए थे, उस दरख्तपर एक बंदरिया बैठी थी. कभी नीचे उतरती है, और कभी ऊपर चढती है. राजा यह कौतुक छिपाहुआ देखता रहा! इतनेमें निगाह उसकी ऊपर गई तो क्या देखता है कि उस हवेलीपर एक बालाखाना है. जब दरख्तपर चढगया तो देखा कि, वहां एक पलंग बिछा है और सब ऐशका असबाब धरा है. तब मनमें कहा--अभी जाहीर होना अच्छा नहीं. पहिले यह मालूम करूं कि, कौन यहां आता है और कौन जाता है. जब ठीक दो पहर दिन हुआ तब एक सिद्ध वहां आया और बाईतरफ जो कुआ था उसमेंसे उसने एक तूंबा जल निकाला जब वह बंदरिया निकल आई तब सिद्धने एक चुल्लू पानी उसपर डाल दिया तो वह खूबसूरत स्त्री होगई और उस रूपवती स्त्रीसे योगीने भोग किया. जब तीसरा पहर हुआ तब योगीने दूसरे कुआसे पानी खेंच उसपर छींटा मारा फिर वह पहिलेकी बंदरी बनगई. और दरख्तपर चढी और योगीभी पहाडकी गुफामें जाकर बैठा और अपना योग करने लगा. इतनेमें राजाने प्रकट हो चतुराई कर बांए कुवेसे जल निकाल उस बंदरीपर छींटा मारा फिर वह ऐसी सुंदरी नारी हुई कि गोया इंद्रके अखाडेका अप्सरा है. और राजाको देख लाजसे मुँह फेर लिया. कामके बाण राजाके आन लगे प्रेमकर उसको अपने पास बिठाया. जब उसने आँखें प्यारकी देखी तब हंस

कर बोली कि—महाराज! हमारी ओर और दृष्टिसे मत देखो. क्योंकि, हम तपस्विनी हैं. जो हम सरापेंगी तो तुम भस्म हो जाओगे राजा बोला कि–शाप मुझे न लगेगा. मैं राजा वीर विक्रमादित्य हूं. कोई मेरा क्या कर सक्ता है ? मेरे हुक्ममें ताल बेताल हैं. विक्रमका नाम सुनतेही वह राजाके चरणपर गिरपड़ी. ओर कहा महाराज! तुम नरेश हो. हमारा उप- देश सुनो. जल्दी यहांसे जाओ अभी यती आवेगा तो मुझे और तुम्हें दोनोंको शाप देकर जलादेगा. तब नरपति बोला–कि, हम यतीके सामने न होंगे, तो हमारा कुछ वह कर न सकेगा. पर स्त्रीहत्या लेनी उचित नहीं; क्योंकि स्त्री हत्या लेनेसे आ- खिरको नरक भोग करना पडताहै. फिर राजाने कहा कि–उस सिद्धने तुझे कहां पाया ? तब वह बोली कि, कामदेव मेरा बाप है और पुष्पवती मेरी मा है. मैने उनके कुलमें अवतार लिया था. जब बारह बरसकी में होगई तब उन्होंने मुझे एक आज्ञा की सो मैंने न मानी. इतनेही अपराधसे माता पिताने क्रोधकर मुझे यतीको दे डाला. और मुझे यह अपने वश करके इस बनमें ले आया. और यहां आकार बंदरी करके रूखपर चढा दिया. इस शकलसे एक बरस गुजरा कि, मैं इस बनमें पडी हूं. सच है कि, किस्मतके लिखेको कोई मिटा नहीं सकता, यह मनमें सोचकर चुपकी हूं. तब राजा बोला–मेरा जी

चाहता है कि, तुझे अपने घर ले जाऊं. तब वह बोली—महा राज ! यह बात तो मेरेभी दिलमें आती है. पर क्योंकर जाऊं ! तुम्हारा नगर समुद्रके पार है. तब राजाने बचन दिया कि, मै तुझे ले चलूंगा. समुद्र लांघनेकी फिक्र अपने मनमें मतकर. इस तरह ले जाऊंगा कि, तुझे मालूमभी न होगा. यों दोनोंने आपसमे बातें कर रैन आनंदसे निकाली और सुबह होतेही राजाने पानी दूसरे कुएसे निकाल उसपर छिड़क दिया कि, फिर वह बंदरिया हो कूद दरख्तपर जा चढी और राजाभी वहीं छुप रहा. उसी दम योगी आन पहुँचा. वही यत्न योगीने कर छिन एक वहां सुरता खुशी की. जब योगी चलने लगा तब वह सुंदरी बोली—महाराज ! मेरी एक विनती सुनिये. कुछ प्रसाद मैं आपके पास मांगती हूं सो तुम मुझे कृपा कर दीजिये. यह सुन योगीने हँसकर एक कमलका फूल उसे दिया और कहा कि, एक लाल हररोज इस कमलसे पैदा होगा और कभी न कुम्हलायगा. इसे तू अच्छी तरहसे रखना. यह सुनकर उसने अपनी चोलीमे रखलिया. और दिल उसका खुश हुआ. योगी फिर उसे बंदरी बनाके आप चला गया. राजाने आकर फेर कुएसे पानी निकालकर उसे नारी बनायी. और उसने वह कमलका फूल राजाको दिखाया और कहा कि—महाराज ! एक अद्भुत चरित्र है कि इसमेंसे एक लाल हररोज निकलेगा

यह बात बुद्धिबाहर है. राजाने कहा अचरज नहीं. भगवान्‌को सब शक्ति है और वह क्या क्या नहीं करता ? ये बातें कर रात ऐशमें काटी और प्रभात होतेही उस कमलसे एक लाल गिरा. दोनोंने यह तमाशा देखा तब राजाने कहा कि, चंचले ! अब यहां ठहरना उचित नहीं. बेहतर यह है कि, मेरे देशको चलो. यह बात राजाकी सुनकर वह बोली—सुनो महाराज ! एक मेरी अधीनी में पांव पडकर जो आपको कहतीहूं सो सुनो महाराज ! आप बडे दानी हो. ऐसा दानी आजतक नहीं सुना ऐसा न हो कि, किसीको मुझे दान करदो. मैं दासी होकर आपकी हरवक्त सेवा करूंगी. तब राजा बोला—कि, यह नहीं होसक्ता कि, कोई अपनी नारी परपुरुषको देय यह काम तो धर्मविरुद्ध है और लोकविरुद्ध है. इस तरह उसकी खातिर जमा कर दोनों बीरोंको बुलाया. वे आकर हाजिर हुए. उन्होंसे कहा कि, जल्दी हमारे देशको ले चलो. वे बीर उन दोनोंको तख्तपर बिठा हवाकी तरह लेकर उडे, वे तो यों अपने शहरकी तरफ गये. और योगी जो यहां आया और उस सुन्दरीको न पाया, तब पछता पछता मनमार मुरझाय रहा निदान राजा अपने नगरके पास आया और सिंहासनसे उतर उस राजकन्याका हाथ पकड शहरको लेचला. रास्तेमें उसने देखा कि, किसीका एक खूबसूरत लडका दरवाजेपर खडा रहा है. राजाकी उसके हाथमें

कमलका फूल देखकर वह लडका रोने लगा. और बिकल बिकल बोला कि, मैं यह फूल लूंगा तब राजाने कमल रानीके हाथसे ले लडकेको दिया. लडका फल ले हंसता हुआ अपने घरमें गया. राजाभी अपने मंदिरमें जा विराजमान हुआ. जब सुबह हुआ तब उस कमलके फूलमेंसे एक लाल गिरा, लडकेके बापने उसे देख उठा लिया. और कमलको छिपा रक्खा. इसी रंगसे हररोज लाल निकलने लगे कि, एक दिन कितनेक लाल वह लेकर बाजारमें बेंचनेको गया वह खबर कोतवालको हुई, तब कोतवालने उसे पकडवा मंगवाया और पूछा कि-तू बनिया है और तूने इतने लाल कहां पाये ? तब वो कहने लगा कि, ये हमारेही घरके हैं. पर उसकी बात न सुन उसे बहुतसी सियासत कर लाल लेकर राजाके पास आया. और सब वह अहवाल बताया. तब राजाने कहा कि-उसको मिलादो. और उसे पूछा कि, तूने ये लाल कहां पाये ? राजाने उसे कहा कि, जो तू सच मुझसे कहेगा तो मैं तुझे औरभी दौलत दूंगा और झूठ कहेगा तो देशसे निकाल दूंगा. उसने अर्ज की सुनो भूपाल ! द्वार खेलता था मेरा बाल, उसके हाथमें कोई कमलका फल दे गया. और उसने आन मुझे दिया. मैंने रातभर उसे अपने पास रखलिया. सुबह होतेही उसमेंसे एक लाल गिरा और अब हररोज एक एक लाल योंही निकलता है. और

अबभी वह फूल मेरे घरमें है. राजाने कहा—यह तूने सब। अच्छी बातें कहीं. अब तू ये लाल लेकर अपने घरको जा. इस कोतवालने बहुत बुरा काम किया, जो तेरा शरीर [illegible] पकड़ लाया इससे न्याय अब यह है कि, लाख [illegible] कोतवाल तुझ दंड दे. यह कह कोतवालसे लाख रुपये [illegible]—और उसे घरको भेज दिया ये बातें कह फिर पुतली बोली—सुन राजा भोज ! वीर विक्रमादित्यके गुण और धर्म. तू मूर्ख है. कुछ उसकी हकीकत नहीं जानता. वैसे राजाको तू अपने आगे हीन कर मानता है. और अपने ताईं मनमें तू अधिक समझता है ये बातें पुतलीसे सुन राजा उस दिन यौंही अछता पछता रहगया. वह साअतभी जाती रही. सुबहको दूसरे दिन राजा सिंहासनके पास खडा हुआ और पुतलीसे पूंछने लगा कि, तू खुश तो है ? तुम्हारे मुंहसे कथा सुनकर मुझे निहायत खुशी पैदा होती है. यह सुन मधुमालती—

नवमीं पुतली ९—

बोली—सुन राजा भोज! यहां बैठकर मैं एक दिनकी कथा राजा वीर विक्रमादित्यकी कहती हूं. एक दिन राजाने होम करनेका आरंभ किया. जहांतक देशके ब्राह्मण थे, उन्होंको न्योता भेज बुलाया और जितने उसके देशके राजा और साहुकार थे वेभी हाजिर

हुए, भाट, भिकारी, सुनकर सब धाये धाये आए और देश देशके राजा अपने सब लोगोंको ले ले आये. और जितने देवता थे वेभी सबके सब आये. राजा अपने आसनपर बैठा. यज्ञ होने लगी, कि, एक बूढा ब्राह्मण उस समय आया. राजा अपने यज्ञके मंत्र पढ़ता था. ब्राह्मणको दूसरे देखके मनमेंही दंडवत् कि. उस पंडितको आगमविद्यासे मालूम होगया इसवास्ते हाथ उठाकर राजाको आशीस दी कि, चिरंजीव हो. जब राजाने मंत्रसे फुर्सत पाई तब उस ब्राह्मणसे कहा कि—महाराज! आपने बहुत मंद काम किया कि, बिना प्रणाम मुझे आशीर्वाद दिया "जबतक पांच न लागे कोई। वह आशीस पापसम होई" तब ब्राह्मणने कहा—राजा! जब तूने अपने मनमें दंडवत् की तबही मैंने आशीस दी. यह बात सुन राजाने लाख रुपये ब्राह्मणको दिये, तब ब्राह्मण हँसकर कहने लगा कि—महाराज! इतने रुपयोंमें मेरा निर्वाह न होवेगा. ऐसा कुछ विचार कर दीजिये कि, जिसमें मेरा काम हो. तब राजाने पांच लाख रुपये उसे दिये. वह लेकर अपने घरको गया और जो जो ब्राह्मण उस यज्ञमें थे उनकोभी बहुत कुछ दिया. इसवास्ते राजा भोज? मैंने तेरे आगे यह बात कही कि तू सिंहासनपर बैठनेके योग्य नहीं. सिंहकी बराबरी सियार नहीं कर सकता और हंसकी बराबरी कौवेसे नहीं होसकी

और बंदरके गलेमें मोतीकी माला नहीं शोभती और गधे-पर पाखर नहीं फबती, इसवास्ते मेरा कहा तू मान और इस खयालसे दर गुजर, नहीं तो नाहक किसीदिन मेरा प्राण जायगा. यह बात सुनकर राजा चुप रहा और वह दिनभी गुजर गया। जब रात हुई अंदेशा कर सुबहको बदस्तूर सिंहा-सनके पास आया और चाहा कि, पॉव धरें, तब मृगावती—

दशवीं पुतली—

हँसकर बोली—हे राजा भोज! पहले तुम मुझसे यह बात सुनलो. पीछे इस सिंहासनपर बैठो तब राजा बोला, तू कथा कह मेरा जीभी सुननेको चाहता है. राजा वहां आसन बिछाय बैठ गया। और पुतली कहने लगी—सुन राजा! एकदिन वसंतऋतुमें टेसू फुला हुआथा. मोर मोराया हुआ कोयल कूक रहीथी। हवा चल रहीं थी. राजा वीर विक्रमादित्य अपने बागमें बैठा हुआ हिंडोले झूलताथा. इतनेमें एक वियोगी किसी देशसे भूला भटका आ निकला. राजाके पांवपर गिरपडा और कहने लगा कि,—स्वामी मैंने बहुत दुःख पाया और अब मैं आपकी शरण आया हूं, और उसकी सूरत बनगई थी कि तमाम लोहू बदनका सूख गया था और आँखसे कम

सूझताथा, अन्नपाणी सब छोड दियाथा. किसी तरह धीरज नहीं धरता था. राजा ज्यों ज्यों समझाता था त्यों त्यों वह विरहसे व्याकुल हो हो रोता था. तब राजाने कहा—तू अपने जीको सँभाल और इतना दुःखी क्यो है? और अब जो यहां आया है सो अपनी कथा कह दे कि, किसकारण ऐसी गति हुई है; और किसके गमसे तेरा यह शकल बन गई है? तू किस देशसे आया है और क्या तेरा नाम है? वह एक आह सर्द दिल पुर दर्दसे खैंचकर बोला- नगर कलंजर देश है मेरा मैं मतिहीन और दुर्बुद्धि हूं. एक यतीने मेरे आगे यह बात कहीथी कि, एक खूब सूरत स्त्री एक जगह है, वैसी सुंदरी कोई जगहमें नहीं! गोया कामदेवसे पैदा हुई है. बल्कि तीनों लोकोंमें वैसी न होगी. और लाखों राजा जी लगा उसके यहां आते हैं और जल जल जाते हैं पर उसे नहीं पाते. राजाने पूछा—किसलिये वे जलते हैं. तब वह हकीकत कहने लगा कि—उसके बापने वहां एक आग भड़काई है. और एक कढ़ाह भर घी चढ़ाकर रक्खा है. वह घी बडा खौलता है और यह उसकी शर्त है कि, जो उस कढ़ाहमें स्नानकर जीता बच निकले उससे अपनी कन्याकी सादी करूंगा. यह बात उस योगीसे सुनकर मैंभी वहां गया था सो मैंने अपनी आँखोंसे, वह तमाशा देख हैरान हुआ और वहां हजारों राजा देश देशके लाखौं नौकर, चाकर, साथ लेकर

आते हैं और यह देख पछताकर जाते हैं. उनमेंसे जो इरादः कर्ता है सो उस कड़ाहमें गिरकर भुन जाता है. जब शक्ल उस राजकन्याकी नजर आई तब सुध बुध मैंने गँवाय अपनी हालत यह उसके इश्कमें बनाई है. यह बात उसके मुखसे सुनकर राजाने कहा—आज तुम यहांही रहो. कल तुम हम मिलकर वहां चलेंगे और उसे तुम्हें दिला देंगे. अपनी खातिर जमा रक्खो यह राजाकी बात सुन उसको समाधान हुआ. यह देख राजाने उसे स्नान करवा कुछ खिलाय अपनी सभामें बैठाकर यह हुकुम किया कि जितने संगीतविद्यावाले हैं सो सब तैयार हो हो आज यहां आकर हाजिर होवें और अपना अपना मुजरा बतलावें. राजाकी यह आज्ञा पायके सब आज हाजिर हुए. और अपना अपना गुण जाहिर करने लगे. राजाने उससे कहा कि—इनमेंसे जिस रंडीको तुम चाहो उसे हम तुम्हें देंगे. तुम यहां बैठकर सुख भोग करो और उसका खयाल दिलसे भुला दो. यह बात राजाकी सुनकर वह वियोगी बोला—महाराज! सिंह अगर सात दिन उपवास करै तौभी घास न चरे. सिवाय उसके मुझे किसी औरकी इच्छा नहीं. इसी तरह तमाम रात बीत गई. जब सुबह हुआ तब राजाने स्नान पूजा कर उन बीरोंको याद किया. वे तुरही आन हाजिर हुए. और अर्ज किया कि, महाराज! हमको क्या हुकुम है? हम

कूदतेही जलके राख हो गया बैतालने देखा और तुरंत अमृत ले आया और राजाके ऊपर डाला. अमृत पडतेही राजा 'राम राम' करके खड़ा हो गया. और जितने ब्राह्मण वहां थे सो सब जयजयकार करने लगे. वहां जो राजकन्या थी उसने आतेही फूलोंका हार राजाके गलेमें डाल दिया. वह जयमाला जब राजाको पहना दी तब सब लोग अचंभेमें रहगये कि, यह राजा कोई अजब तरहका आया है, जो जल गया फिर जीता उठा. यह काम मनुष्यका नहीं, यह कोई देवता है, जिसने ऐसा काम किया. राजाकी नियत पूरी है. तब उस कन्याके व्याहकी तयारी हुई. राजाके मुल्कके जितने लोग वहां हाजिर थे वे सब खुश हुए. और मन्दिरमेंभी रानियां मंगलाचार करने लगीं. इस तरह राजासे शादी कर दहेजमें जवाहिर जोड़े घोड़े, हाथी, पालकी और तमाम माल असबाब कई करोड़का दिया. यह देकर आधा राज्य संकल्प कर दिया. और दास दासीभी बहुतसे दिये. तब यह बिरही जो इसके साथ था सो देख देख बहुत खुश हुआ. जब ये सब दे ले चुके तब राजाने बिदा मांगी. उस राजाने सब असबाब और माल उस व्याही हुई दुलहिन समेत साथ उसके कर रुखसत किया. और कहा— अपने देशको तुम जाओ. और हमपर दया माया राखियो. हमारा मुख इसलायक नहीं कि तुम्हारी कुछ तारीफ करें. जैसा साहस तुमने किया वैसा न हमने आंखोंसे देखा

न कानोंसे सुना. इस कलियुगमें तुम कोई अवतार हो. एक जबानसे हमकहाँतलक तुह्मारी सिफत करसके ? एक शिर है हमारा हम तुझे क्या चढावें ? तुह्मारे पराक्रमपर करोड़ शिर सदके हैं. जो नियत हमने कीथी सो तुमने पूरी कि; इसका भरोसा हमे न था कि यह इरादः हमारा पूरा होगा. राज्यकन्या हाथ जोडकर राजासे कहने लगी—महाराज ? मेरा यह महा-दुःख आपने छुड़ाया. नहीं तो मेरे बापने ऐसा पाप किया था कि, आप तो नरक भोग करता और मैं सारी उमरभरही अन-ब्याही रहजाती. इतनी कथा कह प्रेमावती पुतली बोली की—सुन राजा भोज ? ऐसा पराक्रम करके उस कन्याको लाया और उस बिरहीको इसे देते बार न लागा. राजकन्या और सब माल असबाब बिरहीको दे दिया. और आप खाली हाथोंसे अपने मंदिरमें आ दाखिल हुआ और तू विद्यार्थी है ऐसा साहस तुझसे न होसकेगा. यह सुनकर राजाने हैरान होकर शिर निचे कर लिया. वह साअतभी इसीतरह गुजरी. फिर दूसरे दिन राजा भोज जब सिंहासनके पास आया और चाहा कि बैठें. तब पद्मावती—

ग्यारहवीं पुतली—

बोली—कि, हे राजा भोज ! पहले मुझसे कथा सुनले. पीछे

इस सिंहासनपर पांव दे. एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य उज्जैन नाम नगरीको गया और अपने सब आदमियोंको बिदा कर आप वहां रातको रहा. सोता था, कि, उत्तर दिशाकी ओरसे एक रंडी हाय मार उठी और पुकार पुकार कहने लगी कि—कोई ऐसा है कि, मेरी आकर खबर ले. इस पापीसे मुझे बचावे और जीवदान दे. दममें मरी मरी पुकार करती थी और दम चुप हो जाती थी. उसकी आवाज सुनकर राजा चौंक पड़ा. और ढाल तरवार हाथमें ले अँधेरी रातमें अकेला उठ चला. किसीको खबर न हुई. जब बनमें राजा पैठा वह सुंदरी फिर रो रो पुकार उठी, इतनेमें राजा वहां जा पहुँचा. और देखा कि वहां एक देव उस स्त्रीसे रति मांगता है और वह नहीं मानती. तब शिरके बाल पकड़ पकड़कर जमीनपर दे दे पटकता है तब राजाने कहा—अय पापी! तू इस स्त्रीको क्यों मारता है? नरकसभी नहीं डरता? राजाकी बात सुनकर फिर वह उसे मारने लगा. राजाने कहा—तू इसे छोडदे नहीं तो अभी मैं तुझे मारताहूं. यह राजा विक्रमका वचन सुनकर वह सन्मुख होगया और गुस्सेसे घोरकर बोला—या तू भाग, नहीं तो मैं तुझे खाताहूं? और तू कौन है? जो यहां आनकर बात करता है? तब राजाने गजबमें आकर एक तलवार ऐसी मारी कि. शिर उसका

धडसे जुदा होगया. रुंड मुंडसे दो वीर निकले और राजाके दोनों हाथोंमें लिपट गये तब राजाने धीरज धर छल बलकर उनमेंसे एकको मारा. दूसरा रैन भर लडता रहा और भोर होनेही भाग गया. दैत्य जब भाग गया तब उस रंडीसे राजाने कहा-अब तू जल्दी मेरे साथ चल और कुछ जीमें अंदेसा मत कर. वह राक्षस मेरे डरसे भाग गया. फिर न आवेगा. तब वह सुंदरी बोली कि—सुनो भूपाल ! जो मैं सात द्वीप नौखंड पृथ्वीमें जहा भागकर छिप रहूंगी उससे बचने न पाऊँगी. वह आकर ले जायगा. उसके बिना मेरे जिंदगी न होगी. उसके पास एक मोहनी पुतली है वह उसके पेटमें रहती है. जहां मै छिपूंगी उसके बलसे वह ढूंढ निकालेगा. और उस पुतलीमें यह ताकत है कि, एक देव मरनेसे दूसरे चार देव बना सकती है. यह बात उसकी सुनकर राजा उसी बनमें छिप रहा. रात होते वह देव आया उस औरतसे फिर ख्वाहिस करने लगा. जब उसने न माना और बाल शिरके पकड जमीनपर पकड़ने लगा तब वह धाड़ करने लगी. उसकी आवाज सुनतेही राजा निकट आया और उससे लड़नेको तैयार हुवा तब देवभी रंडीको छोड़ राजाके सामने होगया. चाहे कि, राजाको मारें. इतनेमें राजाने ऐसा एक खांडा मारा कि, धडसे शिर अलग होगया. उसके धडसे वह मोहनी निकली और अमृत लेने

चली, तब राजाने वीरोंको आज्ञा की कि वह कहीं जाने न पावे. तब वीरोंने दौड़कर उसकी चोटी पकड खेंच लिया. और राजाके सामने लाकर हाजिर किया. राजाने उससे पूछा कि तू चंपकबरनी, मृगनयनी, पिकबयनी, गजगामिनी, कटिकेहरी, चंद्रमुखी, नख-शिखसे ऐसी कि, हँसीसे तेरी फूल झडते हैं और सुगंधसे भौंरे मँडराते हैं. बतला कि, देवके पेटमें क्योंकर रहीथी ? तब वह बोली—सुन राजा ? पहले मै शिवगण थी. पर एक आज्ञा शिवजीकी मैं चूक गई तिससे उन्होंने मुझे शाप दिया. और मैं मोहिनीरूप होगई. और इस दैत्यने महादेवकी बहुत तपस्या की, तब सदाशिवने मेरे तई उसको बकसीस दिया. फिर उस पापीने मुझे लेकर अपने पेटमें भर रक्खा. तबसे मैं मोहिनी कहलाई पर शिवकी आज्ञा थी कि इसकी सेवा कीजियो. और जो यह कहै सो मानियो. यों इसके बश होकर मैं रहतीहूं. मेरा माजरा जो था सो मैंने आपसे कहा. अब ये बीर मुझे बकू कर तुम्हारे पास लाये है. और आदमीको इतनी कुदरत नहीं थी बल्कि जो तुमभी बहुतेरा उपाय करते तोभी तुम्हारे हाथ न आती. अब राजा ! मैं तुम्हारे बशमें हूं और मैं मोहनी हूं इसवास्ते तेरे पास रहूंगी. ज्यो महादेवके पास पार्वती यह कहकर बचन दिया. एक वह मोहिनी और दूसरी वह रंडी, जिसे देवसे छुडाया था वे दोनों राजाके साथ हुई. ये बातें कह पद्मावती पुतली.

बोली—सुन राजा भोज! उस मोहनीसे राजा विक्रमादित्यने गांधर्व विवाह किया. और जो कुछ आगे राजाके पराक्रम हैं सो मैं कहती हूं कान देकर सुन. वह रंडी दैत्यसे जो छुडायीथी उसे राजाने यों कहा–सुन सुन्दरी! मैं तुझे पूछताहूं कि, देवने तुझे कहां पाया था? कौन द्वीप और कौन नगर तेरा? और कौन बाप है तेरा? नाम ले उसका, अपना सब व्यौरा मुझसे कह और सब बातें तुर्त बताव? अब देर मत कर सुनकर तेरी अवस्था जैसा तू कहेगी वैसाही मैं विचार करूंगा. वह नारी बोली–महाराज! अब मेरी कथा सुनो, कि किस्मतका लिखा मिटता नहीं है और जो कुछ विधाताने कपालमें लिखा है वह इन्सानको भुगतना होता है. एक ब्रह्मपुरी है समुद्रके पास जिसे सिंहलद्वीप कहते हैं वहांके ब्राह्मणकी मैं बेटी हूं. एक दिन अपनी सखियोंके संग तालावपर स्नान करनेको गई थी और वह तालाव ऐसा था कि, घने घने दरख्तोंसे सूर्य वहां नजर न आता था. वहां सखियोंके साथ मैं स्नान पूजा करके घरको आतीथी कि सामनेसे यह राक्षस नजर आया. और मुझे देखकर वहांही रति मांगने लगा ज्यों ज्यों मैं न मानती थी त्यों त्यों मुझे बहुत दुःख देता था. मैं अनव्याही अपना धर्म क्योंकर गँवाती? कितनेक दिनोंसे मुझे सताताथा और नरकमें पडनेसे डरता न था. राजा! अब तूने धर्म रखलिया, और

मेरे कुलकीभी लाज रक्खी तुझे संसारमें यश और कीर्ति होवेगी. जैसा तूने मुझपर उपकार किया, वैसाही मुझसे आशीस ले. हजार बरसतक जीता रह और किसीके वश न पड. दिन दिन तेरा सत और तेज बढते जायगा साहस तेरा ऐसा होवेगा कि तुझे कोई न जीते. इतनी आशीस जब वह दे चुकी तब उसे बेटी कह राजाने अपने पास तख्तपर बिठा लिआ और मोहनीकोभी उठा बेतालको हुकुम किया कि, हमारे नगरको लेचलो. तब बेताल सबको लेकर उडे, पलक मारते महलमें ला दाखिल किया. राजाने आतेही दीवानको याद किया. वह मंत्री आकर हाजिर हुवा. राजाने कहा--कोई पंडित सुज्ञानी ब्राह्मण ढूंढकर ले आओ जलदी. प्रधानने आज्ञा पाय नगर नगर ब्राह्मणोंको भेज एक ब्राह्मण सुंदर विद्वानको बुलाया. मार्कंडेय नाम वह ब्राह्मण जब आया, तब उसे ले मंत्रीने राज० सभामें लाया. राजाने उससे हाथ जोडकर कहा कि--महाराज! एक ब्राह्मणकी कन्या हमारे यहां है. उससे हम तुमको दिया चाह० तेहैं. तुमभी यह बात कबूल करो. ब्राह्मण बोला--वह कन्या हमको दो और जगत्में तुम यश, धर्म और बडाई लो. राजाने यह बात सुनतेही ब्राह्मणको तिलक दे सादीके सामानका दान दहेज तैयार किया. फिर ब्राह्मण बुलाकर संकल्प कर उस कन्याका कन्यादान किया और उसको बहुत कुछ दिया.

इतनी बात कहकर पुतली कहने लगी कि-सुन राजा! वीर विक्रमादित्यने सोच कुछ न किया और लाखों रुपयोंका दान दहेज दे एक पलमें ब्राह्मणके हवाले किया. तू इस लायक नहीं है इस सिंहासनपर बैठनेसे डर. ऐ राजा भोज! तू गुण-ग्राहक है, दानी और साहसी नहीं, नाहक हिर्स कर्ता है. यह सुनकर राजा भोज मनमें पछताकर चुप हो रहगया. दूसरे दिन सुबह होतेही फिर सिंहासनके पास आया और बैठनेको तैयार हुवा. जब उसने पांव बढाया तब कीर्तिवती—

बारहवीं पुतली—

बोली-सुन राजा भोज! एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य अपनी मजलिसमें बैठकर कहने लगा कि, कलियुगमें औरभी कहीं कोई दाता है? ऐसी बात सुनतेही एक ब्राह्मण बोला कि-सुन राजा! प्रजाके हितकारी तेरे बराबर साहसी और दानी कोई नहीं. पर एक बात मैं कहना चाहताहूं शर्मसे कह नहीं सक्ता. राजाने कहा कि-सत्य बात कहनेमें लाज काहेकी है? तुम हमारे आगे साफ कहो? हम उस बातको बुरा न मानेगे वह ब्राह्मण बोला-एक राजा समुद्रके किनारे रहता है और सदा धर्मकार्य कर्ता है. जब वह सबेरे स्नान किया चाहता है तब लाख रुपये दान देता है और जल पीता है यह तो मैंने एक उसके दानकी रीत कही

औरभी बहुत कुछ दान करता है. और ऐसा राजा धर्मात्मा उसके सिवाय दूसरा हमने कहीं नहीं देखा यह बात सुनकर राजाके जीमें इच्छा हुई कि, उस राजाको चलकर देखिये. यों अपने जीमें विचार कर बैतालोंको बुला तख्तपर सवार हो समुद्रके किनारे चला और जो उसके नगरके पास पहुँचा, सिंहासनसे उतर बैतालोंको कहा कि-आप तुम देशको जाओ और हम इस राजाकी सेवा करनेपर तैयार हुए. तुम वहांसे हमारी खबर लेते रहियो तब बैताल बोला-इसका विचार क्या है? राजाने कहा-तुम्हें इस बातसे क्या काम है? जो हम तुम्हें कहते हैं सो करो. यह बात सुनकर बैताल अपने नगरको आये और राजा पाँओ पाँओंसे शहरमें दाखिल हुआ. नगरमें फिरता हुआ राजाके द्वारपर जाकर पहुँचा. और द्वारपालसे कहा-अपने स्वामीको समाचार दो कि, कोई विदेशी तुम्हारी सेवा करनेके लिये खड़ा है. इसकी बात डेवढीदारोंने सुनकर राजासे अर्ज की. महाराज सुनतेही हँसता हुआ आपही बाहर निकल आया. राजाको देखकर विक्रमने जुहार किया. तब उसने पूछा कि-क्षेम कुशलसे हो? तब विक्रम बोला कि-आपके दयासे. फिर राजाने कहा, तुम किस देशसे आये हो? और तुम्हारा नाम क्या है? और तुम्हारा अर्थ क्या है? सो सब सुनाओ यह बोला,-सुनो महाराज! मेरा नाम विक्रम है. राजा वीर विक्रमादित्यके

देशके मैं रहनेवाला हूं कुछ वैराग्य मेरे जीमें हुआ इससे मैं आपके दर्शनको आयाहूं. अब आपका दर्शन मैंने किया इसीसे सब मेरा सोच विचार गया. राजा बोला—तुझे हम क्या रोज करदें, और कितनेमें तुह्मारा निर्वाह होगा? तब इसने कहा-चार हजार रुपयेमें मेरी गुजरान् होगी. यह सुनकर राजाने कहा—ऐसा क्या काम करते हो जो चार हजार रूपये रोजीना हम तुझे देवें? फिर विक्रम बोला—जो काम हमसे कहोगे हम वह करेंगे. जिस राजाके पास मैं रहता हूं उसको गाढी भीडमें काम आता हूं और इस तरहसे चार हजार रुपये लेकर राजा वहां रहने लगा. यह बात पुतलीने समझा राजा भोजसे कही. जब इसी तरहसे नौदस दिन गुजर गये तब राजा वीरविक्रमादित्यने अपने मनमें विचारा कि, जो लाख रुपये रोज दान करता है उसका नित्यनेम क्या है इसे मालूम किया चाहिए. किस देवताका इसे बल है? इसी सोचमें रहने लगा. एक दिन क्या देखता है कि, दोपहर रातके समय राजा अकेला बनको जाता है यह देखतेही उसके पीछे होलिया. आगे आगे राजा और पीछे पीछे विक्रमादित्य इस तरहसे शहरके बाहर निकल एक बनमें पहुँचे. वहां जाकर देखा तो एक देवीका मंदिर है. और उस मंदिरके बाहर कहाड चढा है और उसमें ब्राह्मणकी आगसे घी औटता है वह राजा तालाबमें

स्नान करके देवीका दर्शन कर उस कढ़ाहमें कूद पड़ा और पड़तेही भून गया. वहां चौंसठ योगिनियां आनेके राजाके उस तलेहुए बदनको नोचकर खागई. इतनेमें कंकालिन अमृत ले आई और उसके हाड़पंजरपर छिड़का तब वह राजा 'राम राम, करके उठकर खड़ा हुआ. तब देवीने मंदिरमेंसे लाख रुपये दिये और वह लेकर अपने घरको आया. तब योगिनियांभी अपने धामको गई. यह तमाशा देखकर राजा विक्रमादित्यभी उसी कढ़ाहमें कूद पड़ा और उसी तरह जल गया. फिर तुर्त योगिनियां दौड़ी और उसकोभी खागई और उसी तरह कंकालिनने अमृत ला उसपरभी छिड़क जिला दिया. मंदिरमेंसे उसेभी लाख रुपये देवीने दिये रुपये ले दुबार फिर वह कढ़ाहमें गिरा. योगिनिया फिर जला भूना गोस्त बदनका नोचकर खागई और कंकालिनने अमृत छिड़क जिलादिया. फिर देवीने लाख रुपये दिये. गरज वह इसी तौर सातबेर गिरा. और लाख लाख रुपये हर बेर पाया जब आठवीं दफह इरादः गिरनेका किया तब देवीने आनकर उसका कर पकड़ा और कहा कि—माग जो तुझे चाहिये ? तब राजा विक्रम हाथ जोड़कर बोला कि—मैं मांगू, जो मांगा पाऊं देवीने कहा—जो तेरी इच्छामें आवे सो तू मांगले. मैं तुझे दूंगी. राजाने कहा—देवी ! जिस थैलीमेंसे तुमने रुपये दिये हैं, वह थैली मुझे

कृपा कर दीजिये' यह सुनतेही उसने वह थैली दी वह खुश हो उसी राजाके स्थानपर गया और दूसरे दिन रातको फिर वह राजा वनमें गया और वहां उसने देखा कि न देवीका मंदिर है ओर न कडाह है. स्थान भंग पड़ा है. यह दशा वहांकी देख सोचमें डूब गया. फिर जो होश आया तो हाय मारके रोने लगा. आखिरको लाचार हो उलटा फिर अपने मंदिरको आया उदास होकर सोरहा भोर हुवा जो सभाके लोग आया और राजाको देखा कि, विह्वल पडा है. न हँसता है, न किसीसे बोलता है, बल्कि जो कोई राज्यकी बात करता है, यह सुनकर मुँह फेर लेता है. यह हालत राजाकी देख दीवानने बिनती किया कि–महाराज! आपका मन मलीन होनेसे सारी सभा उदास होरही है. राजाने यह जवाब दिया कि–आज तुम बैठकर दरबारका काम करो; मेरा शरीर माँदा है. सब प्रधान बैठ राजकाजकी बातें करने लगा. और जो कोई आताथा सो अपने मनमें जो चाहताथा सोई बिचाताथा. कोई कहता था कि, राजा बीमार हो गया है. कोई कहता कि, राजाको कोई मोह गया है. और कोई कहताथा कि, राजा है नहीं. पर जो इसकी अवस्था थी वो किसीको मालूम न थी. इतनेमें अपने समयपर राजा वीर विक्रमादित्यभी गया और पूंछा कि–तुम्हारे मनमें क्या दुःख है? क्योंकि मैंने

तुमसे प्रतिज्ञा की थी कि, मैं तुम्हारी मुश्किलके वक्त काम आऊंगा. सो मेरा बचन क्या आप भूल गये! मेरे आगे अपनी सब अवस्था ब्यौरेवार कहिये. तब राजा बोला कि—मैं तेरे आगे क्या अपनी बात कहूँ? पर एक मेरे जीमें है कि, अब अपना प्राणघात करूंगा. विक्रमने कहा—पृथ्वीनाथ! एक बेर मेरे आगे अपने मनकी व्यथा कहिये और पीछे अपने मनमें जो करना होय सो करो. राजाने कहा—एक देवी मेरे पास थी सो मैं नहीं जानता वह कहां गई? लाख रुपये रोज वह मुझे देतीथी. और वे लाख रुपये मैं नित्य दान पुण्य करताथा. और अब मुझे बड़ा कष्ट हुवा है' मेरी नित्यक्रिया निबहेगी नहीं. इसवास्ते अब मैं जान दूंगा. और ऐसा मैं किसीको नहीं देखता कि जिससे मेरा नित्यनेम चले और जो धर्म पुण्य न रहेगा तो मेरा जीना संसारमें अकारण है. यह बात उसकी विक्रम सुनतेही बोला—ऐसा काम मैं करूंगा. ऐसा बोलकर वह थैली हाथमें दी. और कहा—महाराज! स्नान ध्यान कर नित्यधर्म कीजिये और थैलीसे जितने रुपये चाहोगे वे खर्च करोगे. कम कभी न होंगे. यह बात सुनतेही राजा खुश होकर उठ बैठा और थैली हाथमें ले प्रधानको बुला उसमेंसे रुपये निकाल प्रधानको दिये और खर्च करनेका हुक्म किया. और कहा कि—जितने ब्राह्मण

सब्रा दान पाते हैं उन्होंको उसी तरहसे दो. दीवान मुवाफिक हुक्मके अपने काममें मशगूल हुवा. और राजा वीर विक्रमादित्यने कहा—महाराज! मुझे आज्ञा दीजिये तो मैं अपने देशको जाऊं. बहुत दिन गुजरे हैं तब वह राजा बोला—हम तुम्हारे कहांतक गुण मानेंगे ? तुमने हमें जीवदान दिया है. फिर कहा—जो तुम अपने देश पहुँचोगे. तब सदेसा हमें भेज देना कि, हम क्षेम कुशलसे पहुँचे. और ठीक अपना ठिकाना बता जाओ, जो हमारा पत्र तुह्मारे पास पहुँचे. तब उसने कहा कि—हे राजा! मैं राजा वीर विक्रमादित्य हूं, अंबावती नगरीमें राज्य करता हूं. तुह्मारा नाम और यश सुनकर दर्शनके लिये आयाथा. सो तुझें देखा और मेरा चित्त प्रसन्न हुआ. तुम अच्छी तरहसे राज करो और हमें बिदा दो. तुह्मारा साहस बल धर्म हमने देखा. यह सुनतेही वह राजा उसके पाओंपर गिरपड़ा और हाथ जोड़कर कहने लगा कि—महाराज! बड़ा अपराध हुआ. मैंने तुह्मारा मर्म न जाना. तुमने मेरी सेवा की सो तुम अपने जीमें कुछ न लाना. और जैसा धर्म मैंने आपका सुनाथा वैसाही देखा. और धन्य है तुह्मारे तांई और तुह्मारे धर्म साहस और पराक्रमको. यह कह राजाको तिलक दे बिदा किया. राजा वीरोंको—बुला सवार हो अपने नगरमें आया. इतनी बात कीर्तिवती पुतली

कहकर राजा भोजको समझाने लगी कि–सुन राजा भोज राजा वीर विक्रमादित्यका साहस! ऐसी वस्तु पाकर देते कुछ विलंब न लाया और अपने जीमें न पछताया. और जैसा साहस राजाने किया वैसा सुनकर कोई न करता; किस गिनतीमें है? यह बात सुन राजा भोज चुप हो रहा पुनि दूसरे दिनके प्रभात समयमें राजा उठ, तैयार हो, सिंहासन पर बैठनेको गया. और मनमें इरादः बैठनेका करताथा फिर झिझक कर रह जाताथा इतनेमें त्रिलोचनी—

तेरहवीं पुतली—

बोल उठी–सुन राजा भोज! एक पुरातन कथा मैं तुझे सुनाऊं कि, इस सिंहासनपर वही चढ़ेगा, जो राजा विक्रमके समान पराक्रम करेगा. तब राजाने कहा–कह सुंदरी! विक्रमका बल और कथा सुननेको मेराभी मन चाहता है. पुतली बोली–राजा! कान देके सुन एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य शिकार खेलनेको चला. और साथमें जित मुसाहिब रजपूत बली थे वेभी सजकर तैयार हो आये और एक एककी सवारीमें हजार हजार कोसके धावेका तुरंग था. राजा आप घोड़ेपर सवार था. और वह गोया छलावा था. राजकुमार अपने शिकारी जानवर बाज, बहरी, जुर्रा, शाहीन, कूही, करगा मँगवा मँगवा अपने अपने हाथोंपर ले ले साथ हुए अ

राजानेभी एक बाज अपने हाथपर बिठा लिया. मीरशिकारोंके हुक्म पहुँचा कि, जिस जिसके पास जो जो शिकारी जानवर तैयार हैं सो लेकर रिकाबमें हाजिर होवें. इस तरह बन उसने एक बनकी राहली और वहां जाकर किसीने बाज और किसीने बहरी और किसीने कुही, किसीने शाईन उड़ाई और अपने अपने जानवरोंके पीछे घोड़े बढ़ाये. और उधर राजानेभी जितने वीर शिकार थे उन्हें हुक्म किया कि, इस जंगलमें सब शिकार करो, मैं तमाशा देखूंगा. जो शिकार कर लावेगा वह इनाम पावेगा. और जो शिकार न कर लावेगा सो नौकरीसे दूर होवेगा. यह बात सुनतेही जितने मीरशिकार थे उन सबोंने उस बनमें चारों तरफ जानवर छोड़े और उधर हुकुम सहेलियोंको किया कि, तुमभी शिकार करो. इस तरह सब शिकार करते थे और लाकाके राजाको गुजराते थे वह खडा तमाशा देख रहथा. फिर उसने एक मरिंदापर बाज उडाया और आप उसके पीछे लगा. जिधर जिधर वह बाज जाताथा राजाभी पीछा किये जाताथा. इसमें कोसों निकल गया. देखो तो शाम होगई तब याद आई और फिरकर पीछे देखा तो वहां कोई आदमी नजर न आया. और वह तमाम फौज राजाकी शाम हुएपर राजाको ढूँढ शिकार लेले आनकर नगरमें दाखिल हुई और वहां सूने जंगलमें राजा भटकता फिरता था. कहीं रहा

था. जब अँधेरा होगया और रात बहुत होगई तब एक किनारेपर जा पहुँचा. यहां उतरकर अपने हाथ जीन-उग घोड़ेको एक झाड़ीसे बांधकर बैठ रहा. फिर देखता क्या है कि,वह नदी बढ़ती आती है. और यह हटने लगा. गरज ज्यों ज्यों राजा हटता जाताथा त्यों त्यों वह बढ़ती जा-तीथी. फिर जो निगाह की तो यह देखा कि, नदीकी बीच धारमें एक मुर्दा बहा चला आता है. और उसके साथ एक बैताल और एक योगी खैंचा खैंची किये हुए आते हैं. और आपसमें झगडते हैं. योगी बैतालसे कहता है कि–तुने बहुतसे मुर्दे खाये हैं और यह मैंने अपने अवसरपर पाया है तू छोड़दे मैं उसे लेजाकर अपना योग कमाऊंगा. यह सिद्धि मैंने तुझसे पाई. यह सुन बैताल बोला–भाई ! मैं आयाना नहीं हूं, जो तू मुझे फुसलावे. क्योंकर मैं अपना आहार तुझे दूं ? इसी तरह दोनों आपसमें झगडतेथे और कहतेथे, कि, कोई तीसरा पुरुष इस वक्त ऐसा नहीं कि, हमारा न्याय चुकावे. फिर योगी कहने लगा कि–बैताल ! तू मेरी बात सुन कल प्रभातको हम तुम सभाको जावें और जो सभामें न्याय चुके वही तूभी प्रमाणभी कर और मैं भी करूंगा. इतनेमें एककी दृष्टी राजाकी ओर जा पडी. देखकर दोनों हँसे और कहने लगे कि–वह कोई मनुष्य नदीके किना-रेमें नजर आता है. वहां चलो कि, यह अपना न्याय निबडेगा.

यह कहकर मुर्दा लेकर दोनों किनारेपर आये. राजाको तमाम किस्सा सुनाकर कहा कि–महाराज ! तुम धर्मात्मा हो इसवास्ते धर्म विचारके हमारा न्याय करो. योगी बोला–महाराज ! मैं कहताहूं सो आप ध्यान लगाकर सुनिये इस बैतालने बहुत मुर्दे खाये और यह मुर्दा मैंने अपने दांवपर पाया है और यह नाहक मुझसे तकरार करता है ! और कहता है कि–मैं तुझे न दूंगा. मैं इससे बिनती करके माँगता हूं और कहता हूं कि–गोया यह प्रसाद मैंने तुझसे पाया. यह नहीं मानता. तब राजाने बैतालको पूंछा कि– तू अपने भी मुझसे बात कह ? वह बोला–महाराज ! यह योगी बडा मूर्ख है. जो इसने मुझसे राहमें झगडा लगाया. मैं हजार कोशसे इस मुर्देको ले आयाहूं और यह मुझसे मांग रहा है. मैं इसे क्यों कर दूंगा ? इस मुर्देके लिये मैंने बहुत कष्ट किया. यह नाहक देखके मन चलाता है. मैं क्या कहूं कि, जो जो मैंने इसके वास्ते दुःख उठाया है और आहारके समयमें इस दुष्टने आन सताया. और इसका न्याय तेरे हाथ है; क्योंकि तू धर्मात्मा राजा है. जो तू कहेगा सो मुझे प्रमाण है. तब राजा कहने लगा कि–तुम दोनोंही बडे हो इस वास्ते यह प्रसाद हमें दो कुछ तुमसे हम मांगते हैं. तब तुह्मारा न्याय हम चुकावेंगे. यह सुन योगीने हँसकर झोलीमेंसे एक लड्डूआ निकाल राजाके हाथ देकर कहा–राजा ! तुझे जिनता

द्रव्य अभीष्ट होगा उतना यह बटुआ देगा. और इसमेंसे कभी कम न होगा. पुनि बैतालने कहा–राजा! मैं एक मोहनी तिलक तुझे देताहूं इसे जब तू घिसकर टीका देगा, तब सब तुझे दबेंगे तेरे सामने कोई न होगा. ये दोनोंने प्रसाद राजाको दिया. उसने करओटकर लिया और बोला कि–सुन बैताल! तू इस मुर्देको छोडदे और मेरे घोडेको खा, यह मुर्दा योगीके हवाले करदे; क्योंकि तू भूखा न रहे और उसका कामभी बंद न होय यह सुनतेही बैताल उस घोड़ेको खागया और योगी मुर्दा ले अपना मंत्र साधने लगा. राजा वीरोंको बुलाय उनपर सवार हो अपने देशको चला. रास्तेमें एक भिकारी सन्मुख चला आताथा. उसने देखा कि, शकबंधी राजा आता है, डरते डरते उसने सवाल किया कि–महाराज! आपके नगरमें मैं बहुत दिन रहा लेकिन कुछभी अर्थ मेरा सिद्ध न हुवा. अब मैं कुछ तुमसे माँगता हूँ, मेरे तई दीजिये. यह सुनतेही राजाने वह बटुआ उसके हाथ दिया और उसका भेद बताया. वह अशीस दे अपने घरको गया और राजाभी अपने मंदिरमें आया. इतनी बात कह त्रिलोचनी. पुतली बोली–सुन राजा भोज! ऐसा दानी और ऐसा साहसी जो होगा सोही इस सिंहासनपर बैठे; नहीं तो पातक है. उसके दूसरे दिनराजा सबेर उठ स्नान ध्यानकर दरबारमें आन बैठा. और दीवान मुत्सद्दियोंको बुलाकर कहा–

कि—आज मेरा चित्त बहुत प्रसन्न है. जल्दी चलकर सिंहासन-पर बैठूंगा. इतनी बात कह वहांसे उठ सिंहासनके पास आ-कर गोदान कर ब्राह्मणको वृत्ति कर दी. फिर गणेशको मना सिंहासनपर बैठनेको पाव बढ़ाया इतनेमें त्रिलोचना नामक-

चौदहवीं पुतली—

बोली-हे राजा भोज! पहले कथा सुन जो मैं कहतीहूं पीछे सिंहासनपर बैठ. यह बात राजाने सुनतेही पांव खैंच लिया. और सिंहासनके नीचे आसन बिछाया बैठगया. तब पुतली बोली कि-राजा! सुन एक-दिन राजा वीर विक्रमादित्यने अपने प्रधानको बु-लाकर कहा कि-मैं यज्ञ करूंगा जिसमें पुण्य हो और आगेका निस्तार होवे. दीवानने सुनते ही देशदेशको नौता भेजा जहां तलक राजा प्रजा थे उन्हे बुलाया. कर्नाटक, गुज-रात, काश्मीर, कन्नोज, तिलंगान इन नगरोंको भी नौता भेज जितने ब्राह्मण थे उन्हें बुलाया और सातों द्वीपोंको नौता भेजा वहांके राजाओंको तलब किया. फिर एक वीराको पाता-लके राजाके पास नौता भेज उसे बुलाया और दूसरे वीराको

स्वर्गको रवाना हुए देवताओंको नौता भेज बुलाया और एक ब्राह्मणको बुलाकर कहा कि–तुम समुद्रके पास जाकर हमारा दंडवत् कहो और निवेदन करो कि–राजा विक्रमादित्यने यज्ञका आरंभ किया है और आपको बहुत नम्रता कर बुलाया है. वह ब्राह्मण वहांसे चला और कितनेएक दिनोंमें सागरके तीरपर आ पहुंचा और वहां देखता तो क्या है कि, न कोई मनुष्य है और न कोई वहां पशु पक्षी है. केवल जलही जल नजर आता है. तब वह ब्राह्मण अपने जीमें चिंता कर कहने लगा कि–राजाका संदेश किससे कहूं? यहा तो कोई जीव दिखाई नहीं आता केवल है तो जलही जल है. ऐसा अपने मनमें विचारकर कहा कि–राजा वीरविक्रमादित्यका नौता मैं दिये आता हूं तुम जल्दी पहुंचना. इतना कह वहांसे वह जब चला तब सामने एक बूढे ब्राह्मणके रूप समुद्र नजर आया. और उसने पूछा कि–वीर विक्रमादित्यने हमें किसवास्ते बुलाया है? तब ब्राह्मणने कहा कि–राजाके यहां यज्ञ है! और तुम्हें जरूर बुलाया है. तब समुद्र बोला कि–मैं चलूंगा पर मेरे चलनेसे पानी जो यहांसे बढेगा तो कई नगर डूब जावेंगे इसलिये मेरी तरफसे तुम राजाको विनती कर कहना कि, मेरे न आनेका कुछ खयाल न करना. मैं इस सबबसे पहुंच नहीं सकता. तब समुद्रने ब्राह्मणको पाँच लाल दिये और एक घोडा राजाको सौगात भेजा. और आप वहीं रहा. तब ब्राह्मण रुख-

सत हो राजाके पास गया. वे पांच रत्न राजाको दिया और घोडा अपने खडा कियां फिर सब वहांका वृत्तांत कहा. तब राजाने प्रसन्न हो ब्राह्मणसे कहा कि–यह लाल और घोडा तुम लो. मैंने तुझें दिया हैं यह कहकर त्रिलोचना पुतलीने राजा भोजको समझाया कि, सुन राजा भोज! ऐसा पदार्थ राजा विक्रमने देते विलंब न किया. वे लाल और घोडा कई राजाओंको कीमतके थे ऐसे दानी राजाके आसनपर बैठनेके योग्य तू नहीं॥ पंडित तू है पर माया तुझसे छूटती नहीं. वह दिनभी योंही गुजर गया, दूसरे रोज राजा फिर सिंहासनपर बैठनेको तैयार हो गया. तब अनूपवती–

पंद्रहवीं पुतली १–

कहने लगी–सुन राजा भोज! राजा वीर विक्रमादित्यके गुण कहनेमें नहीं आसक्ते जो बात कहने योग्य होवे तो कहिये. अयुक्त कहतेहुए जी शक खाता है. राजा बोला–तू कह. मेरा जी सुननेको चाहता है जैसी बात हुई है वैसी कह इसमें तुझे दोष नहीं तब अनूपवती बोली, अच्छा अब मैं कहती हूं वह तुम कान देकर सुनिये. एक दिन राजा विक्रमादित्य सभामें बैठा था. और कहींसे पंडित आया. उसने आय.

राजाके सन्मुख एक श्लोक पढा वह सुनकर राजा मनमें बहुत प्रसन्न हुवा, इस श्लोकका मुद्दा यह था कि, मित्रद्रोही और विश्वासघातकी जो हैं सो नरक भोग करेंगे, जबतलक चंद्र और सूर्य हैं. यह सुनकर लाख रुपये राजाने उस ब्राह्मणको दान दिये और कहा कि—इसका अर्थ मुझे समझाकर कहो कि, क्या वृत्तांत है इसका? तब वह ब्राह्मण कहने लगा कि—एक राजा बड़ा अज्ञानी था. उसकी रानी जो प्राणकी आधार थी, पलभरभी राजा उसे आपसे जुदा न करता था. जब सभामें बैठता था तब साथही जांघपर ले बैठता था. और जब शिकारको जाता था तब दूसरे घोडेपर बिठा साथ ले लेता. गरज जागना, सोना, खाना, पीना, एकही साथ था. पर ऐसा मूर्ख था कि, किसीसे लजाता न था. रानीको दृष्टिमें रखता था. एक दिन उसके प्रधानने अवसर पाकर हाथ जोड़ और शिर नवा कहने लगा कि—स्वामी! जो मुझे जीव दान दें तो मैं एक बात कहूं तब राजा बोला—अच्छा. वह बोला कि—महाराज! रानीके संग आप शोभा नहीं पाते. राजकुलकी आन और मर्याद रहती नहीं आपको देश देशके राजा हँसते हैं, और कहते हैं कि—ऐसी सुंदरी राजाके मनमें बसी है कि, पलक ओटभी नहीं करता. एक मेरी बात मानिये. जो आपको वह बहुत प्यारी है तो एक चित्रपट लिखवाइये और अपने पास राखिये. इसमें लोक निंदा न करेंगे. यह बात प्रधानकी राजाके मनमें आई

और कहा—अच्छा चित्रकारको बुलाकर चित्र लिखालो. मंत्रीने उसको बुला भेजा. वह तुर्त आकर हाजिर हुआ और वह कैसा था कि ज्योतिषविद्यामें अति निपुण था. और चित्रकारी विद्यामें भी पंडित था. उसे राजाने कहा कि—रानीकी मूर्तिका पट लिख दे जो मैं अपनी नजरमें हमेशः रक्खूं सुन-कर इस शारदापुत्रने मस्तक झुकाके कहा—महाराज ! अच्छा. मैं लिख लाताहूं. राजासे रुखसत हो अपने घरको आया. और लिखना आरंभ किया. सो ऐसा कि जानें अभी इंद्रलोकसे अप्सरा उतरी है और उस रानीका जैसा अंग जहां था तैसाही उसने अपनी विद्याके जोरसे लिखा. जब वह तसबीर तैयार हुई तब लेकर राजाके पास गया. और राजाने देखकर बहुत पसंत किया. अंग अंग उसने निरख देखा नखसे शिख तलक गोया सांचेकी ढाली हुईथी. राजाकी दृष्टि देखते देखते दाहनी जांघपर जा पड़ी तो वहां एक तिल देखा तब बहुतसा अपने जीमें घबराया और कहने लगा कि—इसने रानीकी जांघका तिल क्योंकर देखा ? हो न हो रानीसे इसकी मुलाकात है. इस तरह अपने मनमें विचार क्रोधकर दीवानसे कहा कि—इस चित्रकारको तुरत बुलावो उसने सुन-तेही उसे बुला भेजा. जाना कि, राजा खुश हुआ है. सो कुछ इनाम देगा. जब वह आनकर राजाके सन्मुख हुआ तब बधि-कको बुलाकर हुकुम किया कि इसकी गर्दन मारके आंखें

निकालके मेरेपास ले आओ जब वह उसे मारने चला तब दीवानभी विदा हो पीछे हो लिया बाहर निकल जल्लादसे कहा कि—तू इसे मुझे दे और आंखें हरनकी निकालका राजाके पास लेजा. जल्लादने प्रधानका कहना किया. और दीवान राजाकी तरफसे बहुत बेइतिबार हुआ कि, ऐसा मूर्ख राजा हमने नहीं देखा, न सुना. गुणवंत पुरुषोंको यों जीता मारे. कदाचित् गुणवान् पुरुषसे कुछ तकसीर हो जाय तो उससे देशसे निकाल देते हैं. यह राजाओंका चलन हमेशासे है. पर कोई राजाओंकी बातपर न भूले मुहमें तो उनके अमृत रहता है और पेटमें विषभरे हुए हैं. जो कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं. इस तरह दीवानने अपने जीमें बिचारकर डरते डरते उसे छिपारक्खा और जल्लाद हिरनकी आखें निकाल राजाके पास लेगया कि महाराज! उसको मारकर आंखें निकालकर आपके पास लाया हूं. राजाने हुक्म किया कि, इन आंखोंको संडासमें लेजाकर डालदो, इस तरह वह साअत तो यों टलगई. फिर कितनेएक दिनोंके बाद उस राजाका बेटा एकदिन अकेला शिकारको गया जाते जाते एक महावनमें जा निकला. एक शेर वहां नजर आया. बाघको देख वह राजपुत्र बहुत घबराया तब घोडा वहीं छोड़ एक वृक्षपर चढ़ गया. उसके ऊपर जो देखे तो एक रींछ बैठा है. रींछको देखतेही उसके हाथ पांव फूलगये और कांपने लगा. चाहे कि, बेहाल होकर गिरें. इतनेमें वह रींछ बोला

कि—ऐ कुँवर ! तू अपने मनमें भय मत कर. मैं तुझे नहीं खाऊंगा; क्योंकि, तू मेरे शरण आया है और मैंने तुझे जीवदान दिया है. अब तू निःसंदेश होकर आनंदसे यहां बैठ. यह बात रींछसे सुन उसके जीमें जी आया. इसमें दिन बीतगया और रात होगई तब रींछ बोला—राजपुत्र ! अब तो रात होगई यह नाहर शत्रु हम दोनोंको बैठा है इस वक्त सोना जीका जियान है. बेहत्तर यह है कि, दो दो पहर रात हम आपसमें जागें. आधी २ रात जागना. आधीरात तू जाग और आधी रात मैं जागूं राजपुत्रने कहा—बहुत अच्छा. रींछने कहा—पहले दोपहर रातको तू सोरह. मैं अब जागताहूं और पिछले दो याम निशाको तू जागियो, मैं सो रहूंगा. आपसमें इस तरह दोनोंने करार किया. और राजपुत्र सोरहा वह रींछ बैठा और चौकी देने लगा. इतनेमें शेरने रींछसे कहा कि—तू मेरी बात सुन और अज्ञानी मत हो. यह मनुष्य तो अपना भक्ष्य है तू क्यों विषका बीज बोता है ? इसे नीचे डालदे हम दोनों इसे खाजाँय. यह आदमी है और हम तुम दोनों वनवासी हैं. हाथका माणिक गिरके हाथ फिर नहीं आता. जब यह जाग उठेगा और तू सोवेगा तो वह तेरा शिर काटकर फेंक देवेगा. अब यही बेह-तर है कि, मेरा कहना कर. फिर यह अवसर न पावेगा और आखिरको तू पछतावेगा रींछने जवाब दिया कि—सुन अज्ञानी बाघ ? अपने ऊपर अपराध लेना उचित नहीं ? जितना होता है

पाप राजाके मारने और वृक्षके काटने, गुरुसे झूँठ बोलने और-बन जलाने और विश्वासघात करनेसे, इतनाही होताहै. शरणा-गताको मारने इन सबका पाप महापाप है. और यह पाप किसी तरहसे छूटका नहीं. इसने मेरी शरण ली है. क्या हुआ जो एक जी मैने न खाया ? तब बाघ खफा होकर बोला, कि-तूनेमेरा कहा तो न माना इस वास्ते मैभी तुझे जीता न जाने दूंगा. इतनेमें रींछकी बारी तो होगई और राजपुत्र जागया रींछ सोया. वह चोकी देने लगा. इससेभी बाघने वही बात की कि-भाई ! जो मैं कहुं सो तू सुन. भूलकरभी तू इससे मत पतिया सोकर सुबहको जब उठेगा तब अलसाकर तुझे खा जायगा. यह मुझसे कह चुका है कि, सोकर उठूं तो मैं इसे खाजाऊं. इससे यह भला है कि तू पहलेही इस रींछको गिरा दे. जो मैं इसे खाजाऊं और अपनी राहालूं तूभी सहीह सलामत अपने घरको जा. उसके प्रबोध देनेसे यह बातोंमें आ गया और उस टह-नीको पकड़ ऐसा हिलाया कि जिससे वह रींछ तले गिरपड़े इससे उसकी आँख खुल गई और टहनीसे लिपट कर रह गया. और इससे कहा कि-अय पापी ! जो तुने मुझसे सलूक किया उससे मैंने तेरी जान रक्खी और तू मतिहीन मेरे मारनेको तयार हुआ. अब जो मैं तुझे मार कर खाजाऊं तो तू क्या करेगा ? यह बाते रींछकी सुनतेही इसकी जान सूख गई. और

अपने दिलमें जाना कि, अब यह मुझे मुकर्रर खायगा. इतनेमें सवेरा होगया. बाघ उठकर वहांसे चला गया. रींछने उसके कानोंमें मूत दिया और कहा-तुझे जीसे तो क्या मारूं? क्योंकि, अब यहां तेरा कोई बचानेवाला नहीं है. इससे असमर्थ जानकर मैं तुझे छोड देताहूं. यह कहकर रींछ तो चला गया और वह गूँगा बहरा हो बहुत घबरा और व्याकुल हो घरमें आया. राजा उसकी दशा देख अपने जीमें चिंता करने लगा. महलोंमें यह खबर हुई तो रानियां कूक मार मार रोने लगीं. और कहने लगीं कि---भगवान्‌ने यह क्या अयुक्त किया. कोई कहने लगीं कि--किसीने इसे छला है तिससे इसकी यह हालत हो गई है. तब राजाने सोचकर दीवानसे कहा कि-जितने गुणी लोग हैं मंत्र-यंत्र जाननेवाले अपने नगरमें उन सबको बुलाकर कुँवरको दिखलाओ. प्रधानने आदमियोंको भेज सब सयानोंको बुलाया और उनसे कहा--जिसमें इसे आराम होय ऐसा काम किया चाहिये. तब वे अपने २ मंत्र यंत्र करने लगे. जिस कदर कि उन्होंने उसका उतार किया परंतु कुछभी फायदा न हुवा. तब हारकर उनसबोंने जवाब दिया कि, हमारी विद्या यहां कुछ काम नहीं करती. जब मंत्रीने यह देखा कि---उन्होंके गुणोंसे इसे कुछ आराम न हुवा, तब राजासे हाथ जोड़ विनती किया कि--महाराज! मेरे पुत्रकी बहू जो है सो बड़े गुणवती है. इस

वास्ते आप आज्ञा कीजिये तो मैं उसके तईं ले आऊं और वह कुँवरको देखे भगवान् चाहे तो आराम हो जायगा- इसके सिवाय और कुछ यत्न नहीं. राजाने कहा—तेरे बेटकी स्त्री क्या जाने? तब फिर दीवानने कहा—महाराज! वह एक योगीकी चेली है. और उस योगीने मंत्र, यंत्र तंत्र, विद्या सब उसे सिखादी है! राजाने आज्ञा दी और दीवान सवार हो अपने घरको चला गया और वहां चित्रकारको बुला सब अवस्था वहांकी कही और कहा कि—मैं इस तरहसे राजाको वचन देकर आयाहूं. तुम स्त्रीका भेष बनाकर मेरे संग चलो. तब उसने कबुल किया. और स्त्रीका भेष बन साथ हो लिया. दोनों सवार होकर राजाके पास आये लोग महलमें उसे परदा करके लेगये. दरमियान एक कनात खैंचली. और उस तरफ कनातके उसे बैठाया. राजा और लडका और दीवान ये तीनें कनातके बाहर बैठे और उसने कनातके अंदरसे कहा कि—कुवरको स्नान करावा कपडे बदलवा चौका दिलवा एक पटडा बिछवाकर बिठाओ और कुँवरको कहो कि, तुम सावधान होकर बैठो और जोन मैं मंत्र कहुं सो तू कान देकर सुन. विभीषण बडा शूर वीर था और दगा करके रामचंद्रसे जा मिला. उन्होंने रावणका राज सब खराब किया. और अपने कुलका नाश किया. उस लाजसे एक वर्षतक शिर न उठाया. और अपने कियेका फल पाया.

कि सब कुछ गँवाया. और भस्मासुने महादेवजी तपस्या कर बर पाया और उन्हींसेही विश्वासघात किया कि, पार्वतीजीको लेनेकी इच्छा की और उसकाभी फल उसने तुर्त पाया कि, क्षणभरमे आपही जलमे भस्म होगया. और कुँवर ? तु मित्र द्रोही और विश्वासघाती क्यों हुआ है ? सोएहुए रींछको तूने नीचे ढकेल दिया ! उसने तो तेरेपर उपकार किया था और तूने उसका बुरा बिचारा. पर उसमें तेरा दोष कुछ नहीं है, तेरे पिताका दोष है; इसवास्ते कि, जैसा बीज होवेगा वैसाही फल होवेगा. यह तुमने अपने पिताके पापसे दुःख पाया. इतनी बात सुनतेही कुँवर सचेत हो बोल उठा. तब राजा बोला--अय सुंदरी ! तू सच कह कि तूने यह बनका जानावर क्योंकर पहँचाना ? यह उसे सुनकर उसने जवाब दिया कि— राजा! मैं अपनी पूर्व अवस्था तेरे आगे प्रकट करतीहु सो चित्त लगाय सुनो जब मै अपने गुरूके पास पढने जातीथी तब गुरूका अति सेवा करतीथी. गुरूने प्रसन्न होकर एक मंत्र मुझे बताया. वह मत्र मैने साधा, तबसे सरस्वती मेरे मनमें बसी है. और जैसे मैंने रानीकी जांधका तिल पहँचाना वैसेही बनके रिंछकोभी जाना. यह सुनतेही राजा प्रसन्न हो पड़दा दरमियानसे दूरकर दिया और कहा कि—तू सच्चा शारद-पुत्र है. तेरे गुणको मैंने अब जाना. यह कह राजाने आधा राज उसे दिया और अपना मंत्री किया. इतनी बात कह

वह ब्राह्मण बोला कि–राजा वीरविक्रमादित्य ! यह इस श्लोकका अर्थ है. यह कथा उस ब्राह्मणके मुंहसे सुनकर राजा वीर विक्रमादित्यने उसे हजार गांव वृत्ति कर दिया. यह बात कहकर पुतली बोली कि–सुन राजा भोज ! तुझमें इतना गुण कहां है ? और अब इस नगरमें विक्रमादित्यके समान राजा होना मुश्किल है. मैंने तुझसे यह सच बात कही. और तू इस सिंहासनके योग्य नहीं. ऐसा सुन उस दिनकीभी साअत जाती रही. राजा महलमें दाखिल हुआ और अपने प्रधान और पुरोहितको बुलाके वह हालत कही. दूसरे दिन सुबहको उठ स्नान पूजा कर ध्यान लगा सिंहासनके पास जाकर खड़ा हुवा और प्रधानको बुलाकर कहा कि–अब मेरा जी चाहता है कि, सिंहासनपर आज बैठूं. बेहतर है कि, दुघड़ी अच्छा मुहूर्त इस वक्त मुझे देख दो. तब दिवानने कहा–महाराज ! आप तो बैठियेगा पर पुतलियां आपके आगे रोरो मरेंगी. राजा उठकर खड़ा रहा तब सुन्दरवती—

सोलहवीं पुतली—

बोल उठी–सुन राजा भोज ! मैं तुझसे विचार कर कथाका अहवाल कहती हूं. उज्जैन नगरीमें छत्तीस कौम और चार जाति बसती थीं. एक वहांकादी नगरसेठ जिसके यहां अति धन था

और बड़ा प्रतापी था नगरके लोगोंको व्यौहार करनेके लिये बहुत माया देता लेताथा. जो कोई उसके पास अपना स्वार्थ विचार कर जाताथा वह खाली फिरकर नहीं आताथा. उसका बेटा रत्नसेन नाम बहुत सुंदर था और अति विद्यावान् माता पिताकी आज्ञामें निशिदिन रहता. उस सेठके मनमें आया कि, कहीं अच्छी सुन्दरी कन्या ठहरा उसकी शादी कर दें. ऐसा ठहराय ब्राह्मणोंको बुला देश देश भेजा और कह दिया कि, जहां कहीं अच्छी लड़की ठहरे वहांका टीका लेके तुम आओगे तो बहुत कुछ धन तुम्हें दूगा. और कुछ रुपये खर्चको दे बिदा किया. ब्राह्मण देश देश ढूढने लगे. उनमेंसे एक ब्राह्मणने समाचार पाया कि-समुद्रके पार एक सेठ है और उसकी बेटी बहुत सुंदर है उसेभी बरकी तलाश है. यह सुनकर एक जहाजपर बैठ समुद्रके पार हुआ. वहां जा सेठका ठिकाना पूंछकर उसके द्वारपर ठहरा. और खबर दी कि, उज्जैन नगरीसे एक ब्राह्मण वहांके सेठका आया है. यह खबर सुन उस सेठने उसको बुलाया और दंडवत् कर आसन दे बिठाया. ब्राह्मण आशीश देकर बैठा. सेठने पूंछा-किस कार्यके लिये तुम आये हो ? सो कहो ? ब्राह्मणने कहा-हमारे सेठने अपने लड़केकी शादीके लिये भेजा है. और कह दिया है कि, जहां कन्या अच्छी कुलीनकी ठहरे वहांका टीका ले हमारे पास

पहुँचो. सेठ यह सुनकर बोला—मेरीभी यही इच्छा थी कि, पुत्रीका ब्याह मैं कहां करूंगा? पर भगवानने घर बैठेही संयोग कर दिया. फिर कहा कि—कुछ दिन तुम यहां आराम करो, मैं अपना पुरोहित तुम्हारे साथ कर दूंगा. वह लड़केको देख टीका जाकर देगा और तुमभी इस लड़कीको देखलो. और वहां जाकर उस सेठसे कहो कि, अपनी आंखों देख आयाहूं. वह ब्राह्मण कितनेक दिनोंतक वहां रहा और उस कन्याको अपनी आंखोंसे देख सेठके ब्राह्मणको साथ ले उज्जैन नगरीको फिर चला तब उस सेठने अपने पुरोहितसे कह दिया कि, टीका दे ब्याहकी तैयारी जल्दी कर आना. ये दोनों यहांसे चल जहाजपर चढ़ कितनेक दिनोंमें उज्जैन नगरीमें आन पहुँचे. ब्राह्मणने सेठको खबर दी कि, मैं कन्या ठहरा आयाहूं. सेठने दूसरे दिन उस ब्राह्मणको बुलाया और लड़केको अपने पास बैठा दिखलाया. ब्राह्मणने देख उसे तिलक कर दिया. और हाथ जोड़ अपने सेठकी तरफसे बिनती कर कहा कि—आप जल्दीसे बरात लेकर आइये. हम जाकर वहां तैयारी करते हैं. ऐसा ठहराकर फिर रुखसत हो वह ब्राह्मण अपने मुल्कको गया. वहां जा सेठसे यहांका सब समाचार कहा. सेठ यह खबर सुनकर ब्याहका सामान तैयार करने लगा. और इधर यह सेठ ब्याहकी तैयारी करने लगा. कारखानेमें नौबत बजने लगी. और मंगलाचार होने लगा.

तरह तरहकी तैयारियां कीं. जितने कुटुंबके लोग थे उन्होंको नये नये जोड़े पहना अपने साथ ले जानेको तैयार हो रहा. नाच राग रंग खुशीसे होने लगे. इस तरह तमाम शहरकी जियाफत करते करते बरातकी तैयारी होरही. ब्याहका दिन नजदीक पहुँचा, अजबस कि जाना दूरका था फिक्र करने लगा कि अरसा थोड़ा रहा है. समुद्रपार इतने दिनोंमें हम क्योंकर जा सकेंगे ? यह बात सुनकर इसके सब भाई बंधु अंदेशा करने लगे और खुशी तमाम शादीकी भूलगये. इसमें एक शख्सने आकर उस सेठसे कहा कि—इस कन्याका प्रारब्ध होगा तो इस लग्नमें विवाह होगा. और मैं एक यत्न बताताहूं तुम इसकी फिक्र मत करो. भगवान् चाहे तो बनजाय. तब उसने हाथ जोडकर कहा कि—भाई ! यातो भगवानके हाथ हमारी लज्जा या तेरे हाथ जिससे हमारा काम बने सो कह ? वह कहने लगा—कई एक महीने हुए हैं कि—एक बढ़ई उडनखटोला बनाकर राजाके पास ले आयाथा और वह कहताथा कि; इस खटोलेका यह स्वभाव है कि, इसपर बैठकर जहां तुम्हारी इच्छा हो वहां जाओ. वह पहुँचावेगा. राजाने सुनकर उसको दो लाख रुपये दिये. और खटोला ले लिया. वह अब राजाके घरमें होवेगा इसवास्ते तुम राजाके पास जाओ और सब हालत राजासे कहो तो राजा वह खटोला देगा और तुम्हारा सब काम सिद्ध होजायगा.

यह सुनतेही बहखुशी होकर राजद्वारपर गया और द्वारपालसे कहा कि-मेरी खबर महाराजसे जाहीर कर दो. तब दरवानोंने जाकार दीवानसे अर्ज की की, नगरसेठ द्वारेपर हाजिर है. आपकी आज्ञा हो तो राजाके दर्शनको आवे. दिवानने कहा कि—बुलाओ. दरवान आकार उस सेठको अंदर लेगया. उसने वहां जाकर दीवानको दंडवत् की और विनंति कर कहने लगा कि—महाराज! आपके दर्शनको मैं आया हुं और अपना बडा जरूरका कामभी है. यह सुनकर दीवानने कहा कि—राजा महलमें है. सेठ यह सुन अति उदास होगया और कहा कि—मेरा बडा कार्य है सो कि, लडकेकी शादी है और जाना तो समुद्रके पार है और चारदीन बीचमें बाकी हैं. इसमें जो न पहुँच सकें तो मेरे कुलकी हँसी और बडी हानी होगी. बनियेसे यह बात सुनकर दीवानने राजासे जाकर सब हकीकत जाहिर की तब राजाने आज्ञा दी कि, वह उडनखटोला इसे लेजाकर दो और जो कुछ वह कहेगा वैसीही सब तयारी करदो. जो किसी तरह उनके काममें विघ्न न आवे. तब प्रधानने खटोला मँगवा बनियेको देदीया और कहा कि—जो कुछ सामान तुम्हें दरकार हो सो कहो महाराजका यह हुक्म हुवा है कि, उसको जो कुछ चाहिये होय सो दे दो. तब सेठने कहा कि—महाराजकी दयासे सब कुछ है पर मेरी यही जरुर थी और आपकि

कृपासे सब काम सिध्द होगया है. महाजन खटोला लिये अपने घरको आया. और ब्राह्मणको बुलाकर साथ लिया लडका और आप उसपर बैठ समुद्रपार चला. एक अरसेमें वहां जाकर पहुँचा. वहां जाकर देखे तो मंगलाचार सारे नगरमें हो रहा है और सब लोग राह देखरहे हैं. जब लोगोंने देखा तो हाथों हाथ ले गये. जाकर एक हवेलीमें उतारा और अपने सेठको खबर दी कि, तुम्हारा संबंधी बरात लेकर आन पहुचा है. वह सेठभी वहांसे उसकी मुलाकातको आप आया और इन तीन आदमियोंको देखकर अपने जीमें बहुत पछताया. और पूंछा कि- क्या सबब है जो तुम इस तरहसे आयेहो ? तब सब अवस्था अपनी सुनाई. सुनतेही उस सेठने अपने गुमास्तेसे कहा कि- कल व्याह है और आज बरातकी तैयारी सब तुम जल्दी करदो कि जिसमें शहरके लोग न हँसें. उन्होंने सब तैयारी बात कहतेही करदी. दुसरे दिन बरात लेकर वह सेठ व्याहने गया और बेटेका व्याह किया. उस सेठने हाथी घोडे जोडे पालकी मियाने जडाऊ गहने और बहुतसा कुछ दान दहेज दिया. इसने वहांसे सब लेकर जहाजमें रखकर जहाज रवाना कर दिया और आप खटोलापर सवार हो अपने शहरमें आया. और नयेसिरसें शादी रचाई. ब्राह्मणोंको बहुत कुछ दान दिया और कुछ जवाहीर पोशाक और बाजे तुहफा और तहायफ

थालोंमें रख और चार घोडे खासे लेकर राजाके नगरको चला और यहांसे खटोला जो लेगया था, वहभी फेर देन जब द्वारेपर पहुंचा तब द्वारपालसे कहा-कि, महाराजको मेरी खबर दो. तब द्वारपालोंने राजाको जाकर कहा. राजाने खबर सुन उसे बुला लिया और जो कुछ वह लेगयाथा जाकर उसने राजाकी भेंट किया. और कहा-महाराज ! आपके पुण्यप्रतापसे सब काम अच्छा हुवा. अब इस दासकी भेंट आपको कबूल करनी चाहिये. तब राजा सुन हँसकर बोला कि, मेरा यह स्वभाव है कि, दी हुई चीज मैं फेर नहीं लेता ! यह खटोला मैंने तुझको दिया. और जो कुछ तू तुहफे लाया है यह सब तुहफे और लाख रुपये अपने खजानेसे मँगवाया और कहा कि, ये हमने तेरे बेटेको दिये. इस वास्ते कि, इसकी शादी हुई है गरज ये सब कुछ इनायत करके मानदे उसे रुखसत किया. वह प्रसन्न हो अपने घरको आया. इतनी बात कह वह पुतली बोली-सुन राजा भोज ! राजा वीरविक्रमादित्यकी बराबरी इंद्रभी नहीं कर सकता था. और तुम तो किस गिनतीमें हो ? जो तूने अपना मन बढ़ाया है. इससे तू बाज आ. इन बातोंमें वहभी दिन गुजर गया. तब राजा महलमें दाखिल हुआ. रात जिस तिस तरह गुजरगई. फिर जब सुबह होगई तब राजा सिंहासनपर बैठनेका इरादा करके वहां आगया. तब सत्यवती

पंडितकी बात सुनकर राजाको उनसे मिलनेकी इच्छा हुई. तब बैतालोंको बुलाकर कहा कि–मेरे तईं पातालको लेचलो. मैं शेष नागके दर्शनको जाऊंगा. ऐसा राजाका बचन सुन बैताल उठाकर पातालको लेगये और शेष नागका मंदिर दिखा दिया. राजाने उनका मंदिर देखतेही बैतालोंको बिदा किया. और आप मंदिरको चला गया. जब जाकर उनके पास पहुँचा और देखे तो वह कंचनका और मंदिर है उसमें रत्न जडे हुए चकमका रहेहैं. और ऐसी ज्योति है उसकी कि जिसकी रोशनीके सिवाय रात दिन कुछ नहीं मालूम होता. द्वार द्वारपर कमलके फूलोंकी चंदनवार बँधी हुई हैं. और घर घर आनंद मंगलाचार हो रहा है. वहां राजा कुछ डरता डरता कुछ खुशी खुशी हो जाकर खडा हुआ और वहांके द्वारपालोंसे दंडवत् करके कहा कि–महाराज ! हमारा समाचार शेष राजाजीको पहुँचाओ कि—मर्त्यलोकसे एक राजा आपके दर्शनको आया है. तब दरवान राजाको खबर देनेको गया. और यह द्वारपर खडा हुआ कहता था कि–धन्य भाग्य है मेरा कि, मैं यहांतक आन पहुचाहुं और चारौं तरफसे रामकृष्ण रामकृष्ण इस नामकी आवाज आतीथी. राजाके मंदिरमें वेदकी ध्वनि कान पडती थी. जब दरवान राजाके सन्मुख जा प्रणाम कर हाथ जोडकर खडा हुवा. राजाने उसकी ओर दृष्टि की, उसने कहा–महाराज ! एक मनुष्य द्वारेपर

खडा है और कहता है कि, मैं मर्त्यलोकसे आया हुँ, द्वारेका हजारों दंडवत् करता है. उसको आपके दर्शनकी अभिलाषा है. जिससे निहायत बेचैन है. यह बात सुनतेही शेषनाग उठके द्वारपर आये. राजाने देखतेही उनको साष्टांग प्रमाण किया और उन्होंने हँसकर आशीश दी और पूँछा कि—तुम्हारा नाम क्या है ? और कौनसा देश है ? तब राजाने हाथ जोड़कर कहा कि—स्वामी ! विक्रम भूपाल मेरा नाम है. मैं मर्त्यलोकका राजा हूं और आपके चरणके दर्शनकी मुझे इच्छा थी सो मेरे मनकी इच्छा पुरी हुई. आज मुझे करोड यज्ञका फल हुआ और करोड़ों रुपये–दान कियेका पुण्य पाया. और धन्य भाग मेरा जो आपके चरणकमलके दर्शन हुए. बल्कि चौंसठ तीरथ न्हायेका मुझे फल हुआ. विक्रमका नाम सुनतेही शेष नाग उसको मिले और हाथ पकड़कर अपने मकानमे लेगया. अच्छी जगह बैठाकर क्षेम कुशल पूंछी. राजाने कहा—महाराजके दर्शनसे सब आनंद है. फिर शेषनागने कहा—तुम किस कारण यहां आयेहो ? और आते हुये पंथमें तुमने बहुत कष्ट पाया होगा. विक्रम बोले कि—फणिनाथ ! मैंने जो कष्ट पाया सो सब तुम्हारे दर्शन कियेसे निस्तरा. फिर राजाको रहनेके लिये एक अच्छा स्थान दिया और बहुतसे लोग टहल करनेको. उन लोगोंसे कह दिया कि मेरी सेवासे भी तुम अधिक राजाकी सेवा जानना

इसतरसे पांच, सात दिन राजा विक्रमादित्य वहां रहा. बाद उसके एक दिन हाथ जोडकर कहा कि-पृथ्वीनाथ! मुझे बिदा कीजिये. अब मै अपने नगरमें जाउं और वहां बैठ आपका गुण गाउं तब शेषजीने हँसकर कहा कि-राजा! अब तुम्हे घर जानेकी इच्छ हुई है सो तुम्हारे वास्ते कुछ प्रसाद हम देतेहैं तुम लेते जाओ. यह कह चार लाल मँगवाकर राजा विक्रमको दिये और उनका गुण कहनेको लगे कि-इस एक रत्नका यह स्वभाव है कि, जितना गहना तुम चाहोगे सो यह तुम्हें देगा. और क्षणभर देते विलंब न करेगा. और दूसरे लालका ऐसा स्वभाव है कि, हाथी, घोडे, पालकिया जितनी तुम मागोगे उतनी इसके पाओगे. और तीसरे लालका यह स्भाव है कि, तुम जितनी लक्ष्मी चाहो तुमको उतनीही द्रव्य देगा. और चौथे रत्नका यह प्रभाव है कि, हरिभजन और सत्कर्म करनेकी जितनी मनमें इच्छा रक्खोगे उतनी यह पुरी करेगा. इस तरह चारों लालोंके गुण राजाको समझाकर कहे और बिदा किया. राजा हाथ जोडकर खडा हो कहने लगा-महाराज! मैं आपके गुणको उपमा नहीं दे सकता हूं पर आप मुझे दास समझकर कृपा रखियेगा. यह कहकर राजा वहांसे रुखसत हुआ. और अपने बैतालोंको बुलाकर उनपर सवार हो अपने घरको आया. जब कोस एक नगर रहा तब बैतालोंको

छोड राजा पाओं पांओं शहरको चला तो देखता क्या है कि एक दुर्बल भुखा ब्राह्मण चला आता है. जब वह पास आया तब उनसे कहा कि—राजा ! मैं भुखा ब्राह्मण हुं कुछ मुझे भिक्षा दो तो मैं जाकर अपने कुटुंबको पालुं. यह सुनते राजा चिंता कर अपने मनमें कहने लगा कि—इस ब्राह्मणको इसमेंसे एक लाल दुं यह विचार कर ब्राह्मणसे कहा कि—देवता ! इस बख्त मेरे पास चार रत्न हैं और उन चारेका एक एक गुण है इस वास्ते जो तुम इनमेंसे चाहो वह मैं तुम्हें दुंगा, तब ब्राह्मणने कहा—पहले अपने घर हो आऊं तब तुमसे कहुं यह कहकर ब्राह्मण अपने घर गया' और राजा वहां खडा रहा वह घरमे जाकर अपनी स्त्री पुत्र और पुत्रकी स्त्रीसे कहने लगा कि, उन चारों लालोका यह ब्यौरा है. तब उन तिनोंमेंसे ब्राह्मणी बोली कि—स्वामी ! तुम वह लाल लो कि, जो लक्ष्मी देता है सो, और ख्याल मनमेंसे उठादो; क्योंकि लक्ष्मीसे मिलते हैं सहाय और लक्ष्मीसे होते हैं सब उपाय. धर्म, ज्ञान, नेम पुण्य. दान यह सब लक्ष्मीसेही होते हैं. इससे तुम और तरफ चित्त मत दुलाओ और जाकर लक्ष्मी लेआओ. फिर उसका पुत्र बोला—लक्ष्मी किस कामकी है ? जो साथ सामान न हो और जो सामान हो नो राजा कहावे, और सब कोही शीर नवाने. सामान हो तो दुर्जन डरे और संसारमें

शोभा पावे. जो घरमें लक्ष्मी हुई और जगमें शोभा न पाई तो उस पुरुषका जन्म लेना निष्फल है. तुम वह लाल लो कि तो इस संसारमें शोभा दे. उतनेमें उसके बेटकी बहू बोली कि-तुम वह लाल लो कि, जो अच्छे आभूषण दे. गहने पहननसे स्त्री अप्सरा मालूम हो. जो रांडभी पहने तो अति सुंदरी दिखाई दे. और विपत् पडे तो बेंच बेंच बहुतसा धन ले. और जितना मांगोगे उतना इससे पाओगे. और पुरुष हमारा बावला है और सास बुद्धिहीन है इससे ससुरजी तुम सज्ञान हो और तुमसे मै कहतीहूं वही लाल लेकर आओ जो मैंने तुमसे कहा है. उससे तुम सब कुछ पाओगे. यह सुनकर ब्राह्मण बोला कि—तुम तीनों बेराये हो. और मेरी अच्छा सिवाय धर्मके और कोईमें नही; क्योंकि धर्मसे संसारमें आदमी राज पाता है, और धर्मसे सब काम सिद्ध होते हैं. धर्मसेही जगमें यश होता है. और धर्म करनेसे देखो कि राजा बलिने पातालका राज पाया. और धर्मसे ही राजा इंद्रने स्वर्गमें जाकर इंद्रासन पाया. और धर्मसे यह काया अमर हो जाती है. गर्भवास छूट जाता है. इसमें तुम मेरा धर्म मत डुबावो. और मैंभी अपना सत न छोडूंगा इससे जो हो सो हो. इसी तरह चारोंने चार मत किया. और एकका एकने नहीं माना तब वह ब्राह्मण घरसे फिरकर निकट आया

और सब अहवाल राजाको सुनाया. और कहा कि—महाराज मैं घर तो गया पर बात कुछभी बन न आई. अपनी अपनी सब कोई कहता है और हम चारोंकी चार मती हैं. और आपने यहां खडे होकर हमारे लिये दुःख पाया पर हमारा मतलब नहीं आया. यह सुन राजाने कहा कि—महाराज ! तुम अपने चित्तमें निराश होकर उदास न होना. चारों लाल अपने घरको लेजाओ मैं तुझे देताहूं क्योंकि जिसमें तुह्मारा कुटुंबभी प्रसन्न हो और तुमभी, हमारा इसीमें कल्याण है निदान राजाने चारों लाल ब्राह्मणके हाथ दिये. ब्राह्मण लेकर खुश हुआ और आशीश दे अपने धामको गया. सुन राजा भोज ! राजा विक्रमादित्यभी अपने मन्दिरको गया और दान देते कुछ विलंब न लाया. ऐसा दानी और प्रतापी अब इस कलियुगमें कौन है ! जो उसके समान हो वह इस आसनपर बैठे और नहीं तो नरकवास पावे. अभी तू अपने मनमें मत उकता धीरज धर और आगे कथा सुन जो जो राजाने साहस और दान किये है. यह बात पुतलीकी सुनकर राजा भोज सिंहासनके पाससे उठकर घर आया. और सारी रात शोच चितामें गँवाई. सुबह होतेही स्नान पूजा करके बैठा. इतनेमें दीवान प्रधान आकार हाजिर हुए. सबको साथ ले सिंहासनके पास जानाचाहा कि पांव उठाकर धरें तब रूपरेखा—

अठारहवीं पुतली—

पुतली उठी और हांहांकर कहने लगी कि—राजा! मुझपर दया कर और पहले मेरी बात सुन, तिस पीछे जो इच्छामें आवे सो कर. तब राजा बोला कि—तू कह! जो तेरे चित्तमें है तब वह पुतली कहने लगी कि सुन राजा भोज! एकदिन दो संन्यासी आपसमें योगकी रीतिसे झगडतेथे. न वह उससे जीत सकताथा न यह इससे. आखिर इस तरह झगडते झगडते वीरविक्रमादित्यके पास आये. और कहा कि—महाराज! हम दोनों विवादी हैं इसका आप न्याव चुकवो. आप धर्मात्मा राजा हैं यह समझकर हम आये हैं राजाने कहा—मुझसे समझाकर तुम जाहिर करो कि, किस बातपर झगडा है? तब उनमेंसे एक यती बोला कि—महाराज! मैं कहताहूं कि मनके वशमें ज्ञान है और मनके बशमेंही आत्मा है और मनके वश महा देव है और माया, मोह, पाप, पुण्य येभी सब मनसे हैं. और जितनी बातें हैं वह सब मनकेही तावेमें हैं और मनकी इच्छाहीसे सब कुछ होता है. मन जो सो तमाम शरीरका राजा है. और जितने अंग हैं सो मनके अधीन हैं. मन उनसे जो काम लेता है सो ही वे करते हैं. एक दोनोंमेंसे यह जब कहचुका तब दूसरा बोला—सुनो राजा! निश्चय करके जो मैं कहूं. ज्ञान जो है यही राजा है देहका. और मन जो है सो

उसका तावेदार. और जो कदाचित् मन अपना अमल किया चाहे तो ज्ञानसे कुछ इसका वश नहीं चलता. मनके काबुमें हैं इंद्रियां वह चाहे तो उनसे कर्म करवावे. पर ज्ञान नहीं करने देता. जब ज्ञान आता है तब वह मनको मार कर निकाल देता है और पांचों इंद्रियांभी ज्ञानके वश हो खड्गसे कटी हुई हैं. जब मनुष्यसे मन और इंद्रीका विकार छुटा निर्भय हुआ संसारके भयसे और योग सिध्द हुआ. दोनोंकी ये बातें सुनकर राजा बोला कि–तुमने जो कहा सो मैं सब समझा. इसका उत्तर बिचार कर तुम्हें दूंगा. कितनी एक देरके बाद राजाने सोचकर कहा कि–सुनो योगेश्वर! चार वस्तु एक साथ रही हैं. अग्नि, जल, वायु और पृथ्वी इन चारोंसे शरीर है. मन इनका सरदार है. मनकी मतिसे जो ये चलें तो घडी पलमें नाश कर दें. पर उनपर ज्ञान बली है. मनका विकार होने नहीं देता. और जो नर ज्ञानी हैं उनकी काया विनाशको नहीं पाती. वे इस संसारमें अमर हैं. और जबतक योगी ज्ञानसे मनको नहीं जीते तबतक उसका योग सिध्द नहीं होता. ये बातें राजाकी योगियोंने सुन अपने मनका हठ छोड दिया. और वे योगियोंने प्रसन्न होकर राजाको एक खडिया कलम देकर कहा कि इसमें ये गुण हैं जो इससे दिनको तुम लिखोगे सो रातको प्रत्यक्ष सर्व देखोगे. यह कहकर दोनों योगी चले

गये. राजाने अपने जीमें अचरज माना कि, यह बात किस तरहसे सत्य होगी ? तब राजाने एक मंदिर खाली करवाया. और झड़वा धुलवाय लिपवा अकेले उसके घरमें जा बिछौना बिछवा किंवाड़ बंदकर दीवालमें मुरत लिखने लगा. पहले कृष्णकी मूर्ति लिखी, पीछे सरस्वतीकी फिर देवताओंकी. इतनेमें सांझ हुई और एक बार जय जय शब्द होने लगा. जो जो देवता लिखेथे सो साफ देखे. देखतेही राजा मोहित हो गया. और जो जो बातें वे आपसमें कहतेथे वह राजा सब सुनताथा. इतनेमें प्रभात होगया. और देवताओंने उठ उठ अपनी अपनी राहली. और पुतलिकी पुतलियां रहगईं, फिर राजाने दूसरी तरफ दीवालमें हाथी, घोडे, पालकी, रथ और फौज यह सब कुछ लिखा. फिर जब शाम हुई तो वे सब हाजिर हुवे. राजा देख देख अपने जीमें प्रसन्न होताथा. और योगीको याद करताथा कि, मुझे वह पदार्थ दे गया. जब भोर हुआ तब वह चित्रका चित्र रहगया. फिर तीसरे दिन राजाने पहले एक मृदंगी लिखा. फिर गंधर्व लिखा. पुनि अप्सरायें खैंची तालबीन, रबाब, तबूरा, मुहचंग, सितार, पिनाक, बाँसुरी, करताल, अलगोजा, एक एक साज एक एक मूर्तिके हाथ दे दे लिखा. जब संध्याका समय हुआ. तब पहले एक शब्द हुआ. और गंधर्व संगीतशास्त्रकी रीतिसे गाने लगे. और साज स्वरोंके साथ

मिल मिल बाजने लगे. और वे अप्सरायें नृत्य करने लगीं और भाव बताने. इस तरहसे राजा हमेश आनंदसे रात काटताथा. और दिनको यही लिखताथा. इसी तरहसे वह रात दिन वहां व्यतीत करता और रनवासमें नहीं जाताथा. तब रानियोंके जीमें चिंता हुई कि राजा किस कारण महलमें नहीं आता ? और जुदे मंदिरमें रहता है इसका क्या सबब है ? यह मालूम किया चाहिये. यह रानियां आपसमे मत ठान राजाका खोज लेनेको तैयार हुई और उनमेंसे चार रानियां आपसमे विचार करके कहने लगीं कि हमारा जीनाभी धिकारकासा है- और जगमेंभी हमको धिकार है कि राजा हमें छोड़ वहां बैठ रहा है. और हम यहां विरहमें दुःख पाती हैं इतने दिनों तो हम दुःख मरीं पर अब एक दिनभी बिन प्रियतम नहीं रहा जाता. यह विचार कर रातको सवार हो जिस मंदिरमें राज-बैठा कौतुक देख रहाथा. ये भी वहां जा पहुँचीं. और हाथ जोड़ बिनती कर कहनेलगीं कि, महाराज ! हमसे क्या अपराध हुआ है ? जो आप हमारी सूरत बिसरा यहां बैठे रहे हैं. यह सुन राजा हँसकर बोला कि, सुनो सुंदरियो ! तुम्हे किसीने सताया है और किस कारण तुम यहाँ आई ? क्या तुम्हें किसीने कुछ कहा है कि यह तुम्हारा मुखचंद्र मलीन हो रहा है ? राजाकी यह बात सुन शिर निहुराके उन्होंने कहा कि स्वामी ! जो बात है

सो अपके सन्मुख हम प्रकाश करती हैं, तब राजाने कहा अच्छा, जो कुछ कहना हो सो कहो. तब उनमेंसे एक रानी जो चतुर थी सो बोली—महाराज! हम अबला हैं और कभी कुछ नहीं देखा सुखहीमें उमर गँवाई और अब विरहमें काम निशिदिन हमें दहता है सो दुःख हम तुम्हारे सिवाय कससे कहें? इस व्यथासे हमें आप बचाइये. और अपने हमसे बचन कियाथा कि हम तुम्हें पीठ न देंगे. सो इतनी मुद्दतसे तुमने बिसार दिया. इतने दिनोंतक जिस तरह हुआ हमने वियोग मारा अब हममें बल नहीं कि अब वियोग सहन करेंगी. इसी तरहकी बाते करती हुई तो सुबह होगई और वे सब मुर्तें फिर नकशीदार और दीवालें होगई. तब रानियोंने कहा की—महाराज! जबसे तुमने मंदिर छोडा तबसे दुःखही सदा रनवासमें हो रहा है. और उन रानियोंका पाप आपको लगता है क्योंकि सब आपही के आसरेमें हैं. ये बातें सुन राजा हँसकार बोला कि—अब जीमें तुम प्रसन्न हो. जो तुम कहोगी सोही हम करेंगे और जो मांगो सो हम देंगे. तब रनियां खुश होकर बोलीं--महाराज! हमारे मांगनेसे जो आप देंगे तो हम मांगें. राजाने कहा—जो तुम मांगोगी सो हम देंगे. रानियोंने कहा—महाराज! यह जो खाड़िया आपके हाथमें है सो हमे दो, यह सुनतेही राजाने आनंदसे हवाले की. रानियोंने लेली और छिपा रक्खी. फिर सवार हो अपने अपने महलमें आई और

राजाभी आकर दाखिल हुवा. और अपना राजकाज करने लगा. इतना कथा कह रूपरेखा पुतली बोली कि—सुन राजा भोज ! ऐसा पदार्थ देते राजाने विलंब न किया. और ऐसी विद्या तू कहां पावेगा ? और जो पावेगा तो तुमसे दी नहीं जायगी. इससे इस आसनके ऊपर बैठनेका तू अदब छोड़दे. मैं तुझसे सच कहतीहूं तू बौरा न जा, और उस योग्य तू नहीं. वहभी सायत गुजर गई. राजा उठकर वहांसे महलमें दाखिल हुवा. तमाम रात सोचमें गुजरगई- सुबह उठ स्नान पुजासे फरागत कर फिर उसी मकानमें आया. सिंहासनके पास खड़ा हो चाहा कि पांव उठाकर धरें इतनेमें तारा नामक—

उन्नीसवीं—

पुतली बोली—कि हे राजा ! तू अज्ञानी बावला होकर यह क्या करता है ? पहले मैं तुझसे एक बात कहतीहूं सो सुनकर पीछे और विचार कर. जो तुम इस सिंहासनपर चरण रक्खोगे तो सबके अपराधी होगे, मुझपर पग दिया था राजा विक्रमादित्यने. तूने अपने जीमें क्या विचारा है ? जो यह इरादा करके आया है ! मेरा हृदय जो है सो केवल कमल है और मधुकर वीर विक्रमादित्य था. तू गोबरका कीडा है और मुझपर पांव किस तरह रक्खेगा ? राजा बोला—सुन बाला ! तूने मुझे गोबरका

कीडा क्यों कर जाना ! तब पुतली बोली—सुन राजा भोज ! एक दिनकी कथा. एक ब्राह्मण सामुद्रिक नाम सामुद्रिक पढा हुआ था. वनमें चला जाताथा. उसके बराबर दुनियांमें कोई और पंडित न था. अनेक अनेक विद्याके भेद जानताथा. उसने दर्याफ्त किया कि इस रस्ते कोई आदमी गया है. जब उसके निशान पांवके देखे तो उसमें उर्ध्वरेखा और कमलका चिन्ह नजर आया तब वह अपने जीमें विचार करने लगा कि कोई, राजा नंगे पांव इस रस्तेसे गुजरा है इसको देखा चाहिये कि वह कहां गया है ! यह विचारकर उन पांवोंका निशान देखता हुवा जब कोशभर जा पहुँचा तो उस वनमें देखा कि एक आदमी दरख्तसे लकडिया तोडकर गठडी बांध रहा है. तब ब्राह्मण उसके पास जाकर खडा हुआ और पूंछा कि—तू यहां इस वनमें कबसे आया है ? वह बोला—महाराज ! दो घडी रात रहनेसे इधर आयाहूं तब ब्राह्मणने पुछा कि, तूने किसीको इस रस्तेसे जाते देखा है कि नहीं ! उसने कहा कि—महाराज ! मैं जिस समयसे यहां आया हूं तबसे इन वनमें मनुष्यका तो जिक्र क्या है कोई पक्षी भी नजर नहीं आया. तब फिर उस ब्राह्मणने कहा कि देखूं तेरा पांव. यह सुनकर पांव उसने आगे रख दिया, और ब्राह्मण सब चिन्ह देख देखकर अपने जीमें कहने लगा कि, यह सबब क्या है कि सब लक्षण इसमें

राजाके हैं और यह इतना दुःखी क्यों है ? फिर उसने पूंछा कि—कितने दिनोंसे तूं यह काम करता है ? उसने कहा—जबसे मैंने होश सँभाला हे तबसे यही उद्यम करके खाताहूं और राजा वीर विक्रमादित्यके नगरमें रहताहूं. ब्राह्मणने पूंछा कि—तू बहुत दुःख पाता है. वह बोला—महाराज ! यह भगवतकी इच्छा है कि किसीको हाथीपर चढावे और किसीको पैदल फिरावे, किसीको धन दौलत बिन मांगे दे और किसीको भीख मांगे टुकडाभी न मिले ! कोई सुखमें चैन करते हे कोई दुःखमें घोरा रहते है. भगवत्‌की गति किसीसे नहीं जाती जानी कि कौन रूप किसमें रचा है ? और जो कर्ममें लिख दिया है सो मनुष्यको भुगतना होता है ! उसके हाथ सुख दुःख हैं, इसमें किसीका कुछ जोर नहीं चलता. उससे यह बातें सुन और वह चिन्ह देख ब्राह्मणने अपने जीमें अचरज किया. कहा कि—मैंने बडी महनतसे विद्या पढीथी. सो मेरा श्रम व्यर्थ गया. और सामुद्रिकमे जो विधी लिखी है पुरुषके लक्षण देखनेकी सो झूंठ गँवाई और यह कह मनमें मलीन हो विचार करता राजाके पास चला कि जाकर उसकाभी पांव देखूं कि उसमेंभी निशान है या नहीं ? और जो लक्षण पोथीके प्रमाण न मिलें तो सब पोथीयां फाड जला संन्यासी हो तीर्थ यात्राको चला जाऊं. फिर संसारमें रहनेसे कुछ अर्थ नहीं और न मानूंगा क्योंकि इयनी मुद्दतकी

मेहनत झूंठ कर्मके पीछे गवाई तो आगे संसारमें क्या फल मिलेगा ! इससे भगवद्भजन करना अच्छा है इस लिये कि, स्वार्थ न हो तो परमार्थ तो होगा यह विचार करता करता राजाके पास जाकर पहुँचा. और राजाको आशीश दी. तब राजाने दंडवत् करके कहा कि–देवता ! तुम इतना मन मलीन होगये इसका कारण क्या ? क्या दुःख तुम्हारे मनमें उपजा है ? सो मुझसे कहो ? ब्राह्मणने कहा कि–राजा ! तू पहले अपना चरण मुझे दिखा तो मेरे चित्तका संदेह जाय. तब राजाने अपना पांव ब्राह्मणको दिखाया और उसने कुछ लक्षण उसमें न पाया. वह देख शीश नवाय चुप होरहा और अपने जीमें कहने लगा कि, पोथीयां सब जला संसारको त्याग बैराग्य ले देश देश फिरिये. यह तो अपने जीमें विचार कर रहाथा. राजाने कहा–पंडित ! तूं क्यो क्रोधकर शिर डुलाय पछताय चुप हो रहा है ? अपने मनकी बात मुझे कह कि तूने अपने मनमें क्या ठानी है ? तब ब्राह्मण बोला कि–सुनो महाराज ! मेरे पास सामुद्रिक पोथी है और बारह बरस मैंने पढकर याद की है सो मेहनत मेरी निष्फल गई इस वास्ते संसारसे मेरा जी उदास हुआ है. राजाने हँसकर कहा कि–यह तुमने प्रत्यक्ष क्यों कर देखा. वह बोला–महाराज ! एक मैंने बडा दुःख देखा कि जिसके पावमें ऊर्ध्व रेखा और कमल था और उसकी रोजी यह

थी कि, लकडियां बनमेंसे लाता और बेंचकर खाता ! यह देखकर मैंने जो तेरा पात्र देखा कोई अच्छा लक्षण न पाया और तू सारे नगरका राज करता है इससे मेरे जीमें क्रोध हुआ है. इससे अब घर जाकर ग्रंथ जला देश, त्याग करूंगा. राजाने कहा–ब्राह्मण ! सुन मैं तुझे बुलाकर कहता हूं और ग्रंथ साधकर तुझे दिखलाताहूं तब तेरा जी पतीआवेगा. किसीके लक्षण गुप्त होते हैं और किसीके प्रकट. तब ब्राह्मणने कहा–महाराज ! यह मैं किस तरहसे जानूं. तबही राजाने छुरी मँगवा तलुवोंकी खाल चीर लक्षण दिखला दिये. ब्राह्मणने देखा कि कमल और ऊर्ध्वरेखा है वह देखकर उसके जीको संतोष हुआ और कहा कि–हे कि विप्र ! ऐसी विद्या पढी हुई किस काम आती है कि जिसके सब भेद मालूम न हो इस तरहके लक्षण देख ब्राह्मण अवाक् हुआ. फिर राजाको आशीद् दे अपने घरको गया. इतना किस्सा कह पुतली बोली कि–सुन राजा भोज ! कब इस योग्य तू हुवा ? जो सिंहासनपर बैठनेकी अच्छा करता है ? और जो इतना साहस करे सोही इस सिंहासनपर बैठे नाम, धर्म, यश आदमीके जानेसे नहीं जाता. जैसा फूल नहीं रहता और उसकी सुगंध अंतरमें रह जाती है. यह सुनकर राजाको कुछ चेत हुआ और कहने लगा कि, यह संसार स्थिर नहीं, जैसी तरूवरकी छाय है वैसीही दूनियाकी गति है. जिस

तरह चंद्र सूर्य आते जाते हैं उसी तरह मनुष्यका जीना मरना है. जैसे कोई सपनेमे कौतुक देखता है वैसा ही जगका रूप नजर आता है. और मनुष्यदेह धरके अनेक दुःख भोग करते हैं. पर सुख यह है कि, जो हरीभजन हो. इतना ज्ञान राजा अपने जीमें विचार वहाँसे उठ अपने मंदिरमें गया. रात जैसी तैसी काटी, प्रभात होते ही फिर वहां आन मौजूद हुआ और पुत-लियोंसे पूंछा कि अब मैं क्या करूं? तुम मुझे कहो. तब चन्द्र ज्योति नामवाली—

बीसवीं पुतली—

कहने लगी–महाराज! मै समझाकर कथा आपके आगे कहताहूं. एक दिन राजा बीर विक्रमादित्यने खुश होकर रासमंडलीके प्रधानको आज्ञा दी कि यह कार्तिकमहीना धर्मका महीना है. इसमें कुछ हरिका भजन मन लगाकर करना चाहिये शरदपूनो ठाकुरकी रास लीला करो. प्रधानने राजाकी आज्ञा पाय देश देखके राजा और पंडितोंको न्योता भेज बुलाया और जितने नगरके योगी थे उन कोभी खबर दे तलब किया. और जितने देवता थे उनकोभी मंत्रोंसे आवाहन करके बिठलाया, रास होने लगा. चारों ओरसे जगजय कार शब्द होने लगा. और राजा एक एकका शिष्टाचार मनुहार करकर फूलमाल ठाकुरका प्रसाद देने लगा. राजाने देखा सब देवता

आये. पर चंद्रमा नहीं आये. अपने जीमें विचार बैतालपर सवार हो चंद्रलोकको गया. वहां जा सन्मुख हो दंडवत् की और हाथ जोड़ कर कहा–स्वामी ! मेरा क्या अपराध है ? जो अपने कृपा न की और सबने मेरेपर कृपा की है. बिना तुह्मारे मेरा काम आधा है अब काम मेरा सुधारिये. आपको धर्म होगा. तुम्हें संसारमें यश और कीर्ति मिलेगी. जो कदाचित् आप इसमें विलंब कीजियेगा तो मैं हत्या दूंगा. तब चंद्रमाने हँसकर कोमल मधुर बचनसे कहा–राजा ! मैं तुझसे सत्यकर कहताहूं तू अपने जीमें उदास न हो. मेरे आनेसे संसारमें अंधकार होजायगा इस लिये मेरा आना नहीं बनता. तुझे अभिलाषा थी मेरे दर्शनकी सो तेरी इच्छा पूरी होगई. और तेरा काम सुफल होगा. तू अपने नगरमें जा. जो काम तूने आरंभ किया है सो पूर्ण कर. इस तरहसे राजाको समझा अमृत दे विदा किया. राजाने शिर चढ़ाके लिया. और दंडवत् कर अपने नगरको चला रास्तेमें देखा कि यमराजके दो दूत एक ब्राह्मणका जीव लिये जाते हैं. राजाने वह देवदृष्टिसे जाना और उस ब्राह्मणके जीवने राजा-को देख दूतसे कहा कि–इस राजाको भेटना है. राजाने उस ब्राह्म-णकी आवाज सुनकर कहा कि–भाई तुम कौन हो ? तब उन दोनोंने समझाकर राजासे कहा कि–हम यमके भेजेसे उजैन नगरीको गये थे. ब्राह्मणका जीव लेकर अपने स्वामीके पास जाते

हैं. राजाने उससे कहा पहले उस ब्राह्मणको तुम हमें दिखा दो और पीछे अपने कामको जाओ. वे दूत राजाको साथ ले नगरमें गये. जहां उस ब्राह्मणका देह पड़ा था वहां दिखाया. राजा देखतेही उस ब्राह्मणका शीश निहुरा अपने मनमें कहने लगा कि, यह तो हमाराही पुरोहित है. तब राजाने दूतोंको बातामें लगा नजर बचा वह अमृत उसके मुँहमें डाल दिया. ब्राह्मण रामका नाम ले उठ खड़ा हुआ. ब्राह्मणने राजाको प्रमाण करतेही आशीश दिया और दूतोंसे हाथ जोड विनती कर कहा कि—यह जीवदान मैंने तुमसे पाया. यह देखकर दूतोंने अपने जीमें अचंभा किया कि अब हम जाकर क्या जवाब देवेंगे ? यह विचार करते हुए दूतोंने यमराके पास जा सब राहकी अवस्था कही. यम सुनकर चुप होरहा और राजा ब्राह्मणका हाथ पकड अपने मंदिरको लाया. और बहुतसा दान दे उसको बिदा किया. यह कथा सुनाकर चंद्रज्योति नाम पुतली बोली कि, हे राजा भोज ! ऐसा पुरुषार्थ तू कर सके तो आसनपर बैठ नहीं तो उसके खयालसे दूर गुजर, इस तरहसे सुन राजा वहांसे उठ अपने मंदिरमें आया. रात तो जिसे तिस तरहसे काटी. सुबह होतेही स्नान ध्यान कर तैयार हो फिर सिंहासनके पास जा खड़ा हुआ. चाहता था कि उठकर पांव धरें तब अनुरोधवती नामवाली—

इक्कीसवीं पुतली—

बोली–हे राजा ! क्या तू अपनी बड़ाई करता है ? और इस अनीतिकी कौनसी बड़ाई है ? पहले मुझसे बात सुन ले पीछे उसपर बैठ, माधवनाम एक बडा गुणी ब्राह्मणथा. उसकी तारीफहो नहीं सकती जो मैं करूं वह योगी होकर तमाम पृथ्वीमें फिर कर आया कहीं ठहरकर रहने न पाया. मानो वह कामदेवकाही अवतार था. स्त्री देखतेही उसे मोहित हो जाती थी. ए राजा ! वह सब विद्या पढ़ा था और अति चतुर था. मर्त्यलोकमें वैसे मनुष्य कम पैदा होते हैं. जिस राजाकी सेवा करनेको जाता था वहां पहले तो उसका आदर मान होता था और जब वह अपने गुणको प्रकाश करता तब वह राजा उसको देशसे निकाल देता. इस तरहसे देश देश भटकता दुःख पाता फिरताथा. कई एक दिनमें वह कामा नगरीमें आन पहुंचा. उस नगरीका राजा कामसेन नाम था. उसके यहां कामकंदला नाम एक रंडी थी. वह मानो उर्वशीकाही अवतार थी. गंधर्वविद्यामें वह चतुर थी. माधवभी उसी राजाके द्वारपर जा पहुँचा. द्वारपालोंसे कहा राजाको जाकर हमारा समाचार कहो. आपके दर्शनको एक ब्राह्मण आया है. डेवढीदार उसकी बात सुनी अनसुनी करगया. वह ब्राह्मण वहीं बैठ गया. ज्यों ज्यों वहांसे मृदंगका आवाज और गानेकी ध्वनि आती थी, त्यों त्यों वह शिर

सुन २ कर कहताथा कि, राजा भी मूर्ख है और उसकी सभा भी मूर्खोंकी है जो विचार नहीं करती. यही बात पांच सात दफे कही. द्वारपाल खफा हो ब्राह्मणको देख राजाके डरसे कुछ कह तो न सके पर राजाके सन्मुख जा हाथ जोडकर खडे हुए. महाराजने जो उनकी तरफ देखा तब उन्होंने विनती करके कहा कि,—महाराज! द्वारपर एक ब्राह्मण विदेशी दुर्बल आन बैठा है! शिर डुला डुलाकर बैठा है और कहता है कि, यह राजा और उसकी सभाके लोग अति मूर्ख हैं, जो गुण विचार नहीं करते. तब राजाने उन द्वारपालोंसे कहा कि, जाकर उसे पूछो उनको मूर्ख तूने किस लिये कहा? उन्होंने राजाके आज्ञा पाय पौरपर आय ब्राह्मणसे पूछा—महाराजने आज्ञा की है कि. उनके गुणमें दोष कौनसा है? यह तुम बताओ तो हम तुम्हारी बात सच जानें. उसने कहा—बारह आदमी चार चार तीन तरफमें खडे हुए जो मृदंग बजाते हैं तिनमेंसे पूर्व मुखवालोंमें एक मृदंगीके अंगूठा नहीं है इसके समपर थाप हलकी पडती है इससे मैंने सबको मूढ कहा है. न मानो तो तुम जाकर यह सच है या नहीं सो देखो वे दौडे हुये राजाके पास आये और सब बातें राजासे सुनाई. तब राजाने पूर्वमुखके चारों मृदंगीयोंको बुला एक एकका हाथ देखलिया उनमें एकका अंगूठा मोमका बनाकर

लगाया गयाथा. यह तमाशा राजा देख बहुत प्रसन्न हुआ और ब्राह्मणको ऊपर बुलाया. वह जाकर सन्मुख हुआ तब राजाने दंडवत् किया और उसने आशीस दी. फिर शिष्टाचार कर गद्दीपर बिठाया. जैसे वस्त्र आभूषण आप पहने थे वैसेही मँगवाकर ब्राह्मणको पहनाये और कामकंदलाको बुलाकर आज्ञा की कि, यह महागुणी है इसलिये इसके आगे अपना गुण तू प्रकाश कर कि जिससे यह प्रसन्न होवे. कामकंदला राजाकी आज्ञा पाय अपना गुण जाहीर करने लगी. उसने संगीत नृत्यका आरंभ किया. रंगके सीसे भरे हुए सीसपर धर मुँहसे मोती पिरोती हुई हाथोंसे बंटे उछालती हुई और सब साज स्वर मिलाये हुई नाचती थी. इसमें फूलोंकी और अतरकी खुशबू पाकर एक भौरा उडता हुआ आकार उसके कुचकी बिटनीपर बैठा और डंक मारा, उसके बदनमें पीर हुई तब बिचारा कि, जो कुछभी हरकत करती हूं तो तालभंग होगा और मेरे गुणकी हँसी हो जायगी. इतना जीमें सोच भं-डार विद्याकर श्वास कुचकी राह निकाली. पवन लगतेही वह भौरा उडगया. तब माधव उस गुणको देखतेही मोहित होकर बोला कि,—हे सुंदरी ! धन्य है तुझे और तेरे करयतको. यह कहके प्रसन्न होकर वस्त्र और आभूषण जो राजाने दियेथे वह सब उतार उसको दिये यह देख राजा और मंत्री आपसमें

कहने लगे कि, देखो इस ब्राह्मणने क्या मूर्खता की है. इस वेश्याको ये कपडे ओर तमाम जवाहिर एक आनमें बक्स दिया यह जातका भिखारी यहां हमारे आगे सखावत दिखाता है. तब राजाने खडा हो ब्राह्मणसे पूंछा कि—तू इसके किस गुणपर रीझा वह मेरे आगे बयान कर. ब्राह्मणने कहा—सुन, राजा! तूभी मूर्ख है और तेरी सभाभी मूढ है. तेरी सभामें यह ऐसा गुण प्रकाश करे तोभी कोई नहीं जानता; क्योंकि इसके कुचपर भौंरा आन बैठाथा सो इसने अपनी श्वास रोक कुचकी राह निकाल उसे उडा दिया. यह इसकी चतुरताका काम देख सब कुछ मैंने इसे बक्स दिया. माधवने जब यह बात कही तब राजा लज्जित हो बोला कि—इसी समय मेरे नगरसे निकलजा अब जो सुनूंगा कि तू इस नगरमें है तो मैं पकडवाकर दरियामें डूबा दूंगा. तब माधवने कहा, महाराज! मुझसे ऐसा क्या-अपराध हुआ है? जो आप मुझे देशसे निकाले देते हो. राजाने कहा, मैंने जो कुछ तुझे दियाथा सो तूने मेरेही आगे दान कर दिया. क्या मेरे पास देनेको कुछ तुझे न था, जो तूने दिया? यह सुनकर माधव मनमें मलीन हो राजसभासे निकल बाहर जा एक वृक्षके नीचे व्याकुल खडा होकर अपने जीमें कहने लगा कि, माता बेटेको विष दे और पिता पुत्रको बेचे और राजा सर्वस्व ले तो कोई शरण किसकी ले? फिर कहने लगा

कि, राजाने मुझे निकाला अब मैं कहां रहूं, यों अनेक भांतिकी चिंताकर कामकंदलाका नाम लेले रोताथा. और इधर कामकंदलाभी राजासे बहना करके बिदा हुई और एक आदमी दौडाया कि यह ब्राह्मण बाहर जाने न पावे उसे ढूंढ ले जाकर मेरे मकानमे बिठा, वह आदमी गया और ब्राह्मणको ले जाकर कामकंदलाके मंदिरमे बिठा दिया. इधरसे यह भी तुरत जा पहुची. और वह दोनौं आपसमें बैठकर प्रेमकी बातें करने लगे तब उस ब्राम्हणने कहा—मुझे राजाने देशसे निकाल दिया है और तूने अपने घरमे बुला बिठलाया; जो यह बात राजा सुनेगा तो मेरा प्राण पहिलेही जायगा. इससे मैं तो दुःखसे छूटूंगा पर तुझेभी राजा अतिकष्ट देगा इसमें ऐसी बात करनी उचित नही है कि अपनी तो जान जाय और जगमें हंसाई होय इसवास्ते प्रेम जो है सो दुःखकी खान है, जिसने प्रेमके पैंडेमें पांव दिया उसने कभीही सुख न पाया. ये बातें माधवके मुखसे सुनकर कामकंदलाने कहा कि, अब तो मै इस पंथमे आई जो कुछ करे सो भगवान् है इतना कह सब साज बाज घरसे मंगवाकर अपनी विद्या जाहीर करने लगी जितनी विद्या उसे याद थी उतनी ही जब प्रकाश कर चुकी तब माधवने उन्हें यंत्रोंके साथ अपने पास जो गुण था सोही सब प्रकाश करके दिखाया. जब रात थोडीसी रहगई तब

कामकंदलासे कहा कि-महाराज ! तुमने तो श्रम बहुत किया अब चलकर आराम कीजिये. यह कह माधवको रंगमहलमें ले गई और जितनी खुशी थी सो सब की, जब की. जब सुबह हुआ तब दोनोंके जीमें राजाकी बात याद आई और सुध बुध जाती रही. तब घबराकर माधवने कहा कि-सुन सुंदरी ! रात तो आनन्दमें कटी और अब जो मैं यहां रहूंगा तो दोनोंके प्राण जॉयगे इसवास्ते अब कुछ यत्न कीजिये, जिससे निर्द्वंद्व आनंदसे रहेंगे. मैंने एक बात जीमें विचारी है. अब मैं यहांसे पहले जाऊं और कुछ उपाय कर फिर आकर तुझेभी यहांसे ले जाऊंगा. तू अपना जी मजबूतीसे रखना. मैं जरूर आकर तुझसे मिलूंगा. यह बचन मैं तुझे देकर जाताहूं इतनी बातें सुनतेही वह तो मूर्छा खाके गिर पड़ी और माधवने उठकर राह ली. और वहांसे निकलके वन वन फिरने लगा. और हाय कामकंदला ! हाय कामकंदला ! करने लगा. इधर इसेभी सखियोंने गुलाबका नीर छिड़ककर उठाया. जब कुछ होश आया तब वह भी माधव माधव पुकारने लगी और खाना पीना सब त्याग किया बहुतेरा सखियाँ समझाती थीं पर उसके जीमें एक न आती थी. ज्यों ज्यों गुलाब वा कपुर चंदन लालाकर लगाती थीं, त्यों त्यों दाह चौगुनी बढतीथी. किसी तरहसे शीतलता न होती थी. जब कोई माधवका नाम और गुण सुनाताथा तबही

उसे जरा आराम आताथा. उधर माधनभी गटक भटक अपने जीमें विचारने लगा कि, अब संसारमें कौन है ? जिसके निकट जाइये जो हमारा दुःख दूर करे. तब उसमेंही उसे याद आया कि, आजतक हम सुनते हैं कि राजा वीरविक्रमादित्य परदुःखनिवारक हैं भला उसके पास जाइये और देखिये कि लोग सच कहते है या झूठ ! यह मनमें विचार कर उज्जैन नगरीको चला गया और वहां जाकर लोगोंसे पूछा कि, यहां राजाकी भेंट आधीन की क्योंकर होसकती है ! तब उस नगरका वासी बोला कि–गोदावरी नदीके किनारे शिवजीका मठ है, उस मठमें राजा शिवजीके दर्शनको नित आता है, वहां तू जा तो तेरा मनोरथ पूर्ण होगा. यह सुनकर वह गया और उस मठके द्वारेकी चौखटपर लिखा लि, मैं ब्राह्मण विदेशी अतिदुःखित हूं. और बिरहसे व्याकुल हो तुम्हारे नगरमें आया हूं. यह सुनकर कि राजा परदुःखनिवारक है. और जो यह दुःख मेरा जायगा तोही मै अपना प्राण रक्खूगा नही तो तीसरे दिन गोदावरीमें प्राणत्याग करूंगा. यह विचार मुकर्रर जीमें मैंने ठहराया है कि तुमराजा हो और सदा गौब्राम्हणकी रक्षा करते आये हो और अबभी करोगे. इस वास्ते मैंने अपने मनकी बात सब प्रकाश कहदी है. इतनी बातें कह पुतलीने राजा भोजसे कहा कि–सुन राजाभोज !

राजा वीरविक्रमादित्यका यह नियम था कि, अन्नदुःखी, वस्त्र-दुःखी द्रव्यदुःखी, भूमिदुःखी, विरहदुःखी, और किसी तरहका दुःखी नगरमें आवे तो राजा सुनकर जबतक उसका दुःख न मिटा देता तबतक जलका तो क्या जिक्र है! पर ठ-ढूनभी न चीखताथा. सवेरे राजा महादेवजीके दर्शनको गया तो दर्शन कर परिक्रमा करने लगा. जब राजा ऊंची दृष्टि करके देखे तो कोई दुःखी अपने दुखकी अवस्था लिख गया है राजाने सब बांच महादेवजीको दंडवत् कर मंदिरमें आया और सेवकको आज्ञा की कि, माधवनाम ब्राह्मण हमारे नगरमें आया है इसवास्ते जो कोई उसे ढूंढ लावे तो मुंहमांगा द्रव्य पावेगा ऐसा कहा. यह सुन लोग नगरमें ढूंढनेको निकले. घाट घाट टोला महल्ला, बा गीचे सब नगर ढूंढ फिरे कहीं ठिकाना उसका न पाया. तब राजाने एक दूतीको बुलाकर आज्ञा की कि, जो तू उसे ढूंढ लावे तो मुंहमांगा द्रव्य पावे. उसने कहा महाराज! यह क्या कठिन बात है अभी जाकर ढूंढ लाती हूं यह कह उसने लिखाथा वहां जाकर मंदि-रके पास बैठ रही सांझसमय वह भी भटकता हुआ आन पहुँचा. उसने उसे देख मनमें विचारा कि, हो नहो यह सच विरही है किसलिये कि, मुंह पीला आंसू जारी तन क्षीण मन मलीन हो रहा है. यह तो यही विचार कर रहीथी कि, वह ब्राह्मण

जहां आय और एक बार हाय कामकंदला, हाय कामकंदला ! पुकार उठा. चट उसने जा उसका हाथ पकड लिया और कहा मै तेरे ढूंढनेके लिये राजाकी आज्ञा पायके आयी तू उठ मेरे साथ जल्दी चल तेरा मनोरथ होगा. तेरे दुःखसे राजा निपट निपट दुःखी है यह सुनतेही उसके साथ वह होलिया. उसे ले यह दूती राजाके सन्मुख आई और कहने लगी कि, हे महाराज ! यह वही वियोगी है जिसके लिये आपने यह दुःख पाया है. तब राजाने उस ब्राह्मणसे पूछा कि, महाराज ! आप वियोगसे किससे व्याकुल हो रहे हो सो सब बात मेरे आगे कहो तब उसने एक आह भरकर कहा—महाराज कामकंदला वियोगसे मेरी यह गती हुई है वह राजा कामसेन पास है तू धर्मात्मा है और मैं तेरे पास आया हूं. तू मुझे उसको दिला दे तो मेरी जान बचेगी. यह बात सुनतेही राजा हँसकर बोला—सुन विप्र ! वह तो वेश्या है तूने उसके प्रेममें अपना सब धर्म कर्म छोड दिया यह तुझे उचित नहीं है. तब माधवने कहा महाराज ! प्रेमका पंथ न्यारा है जो नर प्रेम करते है सो अपना तन मन धर्म कर्म सब समर्पण करते है, प्रेमकी कहानी तो अकथनीय है यह मुझसे नहीं कही जाती. राजाने ये बाते सुनी और उसे अपने साथ ले मंदिरमें गया और सब रानियोंके आज्ञा की कि, तुम

बनाव सिंगार करके आओ. रानियां जब सिंगार कर आई तब उस विप्रसे राजाने कहा इनमेंसे जिसे तुमारी इच्छा होगी उसको लो और अपने मनमे दुःख न कर चैन करो. तब उसने जबाब दिया कि, महाराज ! मैं आपके आगे सत्य कहताहूं कि मेरी आंखमें वह बस रही इस लिये और कुछ मेरी दृष्टिमें नहीं आता. चातककी तृषा स्वातीके बूंदसे बुझती है और जलपर उसे रुचि नहीं वैसी है प्रेमकी दृढता. यह दृढता विप्रकी देख राजाने अपने मनमें बिचार किया कि इसे साथ ले जाकर कामकंदलाको दिखाऊं. अन्यथा इसके मनको स्थिरता नहीं होगी. यह बात राजाने बिचार विप्रसे कहा. देवता ! तुम स्नान पूजा कर कुछ खाओ. तब तलक मैंभी अपने लोगोंको बुला तुझे साथ ले चलूंगा. और उसे तुझे दिखाऊंगा तू अपने मनमें किसी बातकी चिंता मत्कर मैंने तुझसे यह बचन किया. तब विप्र अपने खाने पीनेमें लगा और राजाने प्रधानको बुलाकर आज्ञा की कि, मेरे डेरे नगरके बाहर निकालो चार घडीके बाद कामनगरकी तरफ मेरा कूच है इस वास्ते सबको खबर दो. इतनेमें कितनी एक देरके पीछे राजाभी तैयार हो विप्रको साथ ले कूचकर डेरोंमें जा दाखिल हुआ. और जितने राजाके नौकर थे वह सब रिकाबमें हाजिर थे राजा वहांसे कूच दरकूच जाताथा, कितने एक मंजिलोंके बाद कामा नगरी, दस कोस इधर डेरा किया.

और उस राजाको पत्र लिखा कि हम इस लिये आये हैं कि, तुम्हारे यहां जो कामकंदला वेश्या है उसे हमारे पास भेजदो. नहीं तो युद्ध करनेका सामान करो. यह पत्र लिख एक दूतके हाथ राजा कामसेनके पास भेज दिया राजाको खबर हुई कि, एक दूत राजा वीरविक्रमादित्यका खत लेकर आया है यह सुनतेही राजाने उसको सन्मुख बुलाया और उसने जा जुहार-कर खत राजाके हाथमे दिया. राजाने उस चिठीको बांचकर कहा कि, अच्छा कहो अपने राजासे कि चले आवे हम युद्ध करनेको तैयार हुए हैं. दूतने आ राजासे कहा—महाराज ! वह लडनेको तयार है. तब राजाने भी हुक्म अपने लोगोंको दिया.

हमाराभी दल तैयार हो फिर राजाके जीमें आया कि जिसके वास्ते हम आये है उसकी प्रीतिकी परीक्षा लिया चाहिये. इस तरह जीमें ठहराया, और आप वैद्यका स्वांग बन कामनग-रीमें गया औ लोगों मकान कामकंदलाका पूछ दरवाजे-पर जा वैद्य हकीम कर पुकारा. इनका अवाज सुनतेही एक दासी बाहर निकल आई और पूंछा कि तुम वैद्य हो तो हमारी नायकका कुछ इलाज करो जो वह अच्छी होवेगी तो तुम्हें बहुतसे रुपये मिलेंगे. ये बातें कह दासी उसके बिदा हो गई और वह उसके साथ कामकंदलाके सन्मुख गया राजाने देखा कि निर्जीव पडी है. राजाने उसकी नाडी देखकर कहा कि

इसके तई रोग और कुछ नहीं इनके तो प्रियतमका वियोग है जिससे इसकी यह गति बनी है. यह बात सुन कामकंदलाने आँखें खोल उसकी तरफ देखा. और कहा कि-इसका कुछ इलाज तुम्हारे पास होय सो करो. तब उसने कहा कि. इसका इलाज तो था पर इसमें हमें कुछ कहते बन नहीं आता. तब वह बोली-तुम्हारे पास इलाज क्या था ? वह बताओ राजाने कहा-माधव नाम एक ब्राह्मण था उसे हमने उज्जैन नगरीमें विरहवियोगी अति शोकी देखा. सो वह दुःख उपाय मर गया यह सुनतेही हाय कर उसने भी अपना प्राण छोड़ दिया. जितनी दासी दारा उनके घरमें थे. यह दशा देख शिर पीट पीट सब रोने लगे. तब उन्होंने कहा कि-तुम कुछ चिंता अपने मनमें मत करो. इसे मूर्च्छा आई है कितनी देरमें सुध आवेगी तुम इसकी चौकरी करते रहो मैं जाकर अपने घरसे धरा औषध लाऊं ऐसा कह राजा उलटा फिर अपने दलमें आया और माधवके आगे उसके मरनेकी खबर कही. सुनतेही एक आहके साथ उसकी भी जान निकल गई, यह देखकर राजा अपने जीमें पछताया. विचार करने लगा कि जिसके वास्ते इतनी सेना साजके साथ परभूमिमें आया और इसे इस तरह खो दिया यह हत्या मेरेपर हुई. अब अपना भी प्राण रखना उचित नहीं यह बात जीमें ला बहुतसा चंदन मँगवा चिता बनाय राजा

जीताही जलनेको तैयार हुआ. दीवान और प्रधानने कितना मना किया पर न माना जो चाहे कि उस चितामें बैठकर आग लगावें कि बैतालने आ हाथ पकड लिया और कहा कि–हे राजा ! तू अपना जी क्यों देता है ? तब इसने कहा कि–दो की जान मैंने जानके खोई अब मेरा भी जीना संसारमें उचित नहीं इस बदनामीके जीनेसे मरनाही उत्तम है, तब बैतालने कहा कि–राजा मैं अमृत लाकर देताहूं—तू दोनोंको जिलादे यह कह जल्द बैताल पातालमें जाकर अमृत लेकर आया और उस ब्राह्मणपर छिडकाया तब वह उठा फिर ले जाकर कामकंदलापर छिड़का वह भी उठी और माधव माधव पुकारने लगी. राजाकी सूरत देखकर कहा कि महाराज ! तुम कौन हो और कहांसे आये सो मुझसे कहो तब राजाने कहा–हम बीर विक्रमादित्य हैं और माधवका विरह दूर करनेके लिये उज्जैन नगरीसे यहां आये हैं तुम अपने मनमें खातिर जमा रक्खो कि तुम्हें हम माधवसे मिला देंगे. यह बात राजाके मुखसे सुनते ही वह उठ राजाके पांवपर गिरपडी और बोली कि–महाराज ! यह तुम जीवदान दोगे और जैसा तुम्हारा यश सुनतीथी वैसा ही दृष्टिमें आया इतनी बात कह राजा वहांसे फिर अपने लश्करको आय मिला. दूसरे दिन अपनी फौज ले कामनगरी पर चढ धाये वहांके राजासे युद्ध कर उसको जीता. तब उस

राजाने हार मानी और कबूल किया कि, हम कामकंदलाको भेज देंगे. और यह जो हमने युद्ध किया सो आपके दर्शनके वास्ते किया है इसलिये कि किसीतरह हमारे नगरमें आपका चरण पड़े आगे राजासे मुलाकत करके वह राजा अपने मंदिरमें विक्रमादित्यको लेगया. और बहुत भेंट आगे धर कामकंदलाको बुलाकर राजाके आगे खड़ी किया. और उसनेभी माधवको बुला कामकंदलाका हाथ पकड हवाले किया. फिर वहांसे कूचकर अपने नगरमें आये और माधवको बहुत धन दौलत दे विदा किया.) इतनी बातें कह अनुरोधवती पुतली बोली कि–हे राजा भोज! इतनी सामर्थ्य और इतना साहस जो तुझमें हो तो सिंहासनपर बैठ नहीं तो पतित हो नरक भोग करेगा. यहभी दिन राजाका टल गया. दूसरे दिन वह फिर मौजूद हुआ तब अनुरेखा नाम्नी–

बाईसवीं पुतली–

बोली–कि हे राजा भोज! तू अपने मनकी चिंता छोडदे और मैं जो तेरेसे कहतीहूं सो सुन. एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य सभा कर बैठाथा और प्रधानसे पूंछा कि–मनुष्य बुद्धि अपने कर्मसे पाते हैं या उनके मातापिताके सिखानेसे पाते हैं? यह सुनकर मंत्री बोला–महाराज! यह नर पूर्वजन्ममें जैसा कर्म

करता है वैसा विधाता उसके कर्ममें लिख देता है. तिसी प्रमाण बुद्धि होती है, मातापिताके सिखाये बुद्धि होती नहीं. कर्म लिखाही फल पाता है. आदमी आदमीको क्या सिखावे ? और जो सिखेसे बुद्धि हो जाय तो सभी पंडित होजाते इससे महाराज ! कर्मके लिखे बिना विद्या होती नहीं. करोड यत्न कोई करे पर कर्मकी रेखा मेटे मिटती नहीं. राजाने कहा-ऐ दीवान ! तूने यह क्या कहा ? संसारमें यह जो जाहिर देखते हैं कि जन्म लेतेही लडका मातापितासे जो सुनता है और जो देखता है उसी व्योहारसे चलता है ? इसमें कर्मका लिखा क्या है ? यह सिखायेसे सीखता है. ओर जैसे संगमें बैठता है वैसीही उसकी बुद्धि होती है. इतनी बात सुन मंत्री बोला कि-धर्माव-तार ! आपकी बराबरी हम नहीं करसकते, यह अपने मनमें विचारके तुम समझो कि कर्मका लिखा हुआ फल मिलता है. तब राजाने कहा-अच्छा इस बातकी परीक्षा लिया चाहिये. ऐसा कह राजाने एक महावनमें मंदिर बनवाया कि जहां मनुष्यकी आवाजही नहीं जाय. एक अपने बेटेको पैदा होतेही उस मंदिरमें भिजवा दिया. और उसके साथ एक दाई ऐसी कर दी कि, आँखोंसे अंधी, कानोंसे बहिरी और मुँहसे गूँगी. वही उसको दूध पिलातीथी. और परवरिश करतीथी. फिर इसी तरहसे एक दीवानके बेटेको, एक ब्राह्मणके सुतको, एक कोत-वालके पुत्रको जन्मतेही गूंगी, बहरी अंधी दाइयां दे उसी

मंदिरमें भिजवा दिया. दिन बदिन वे बढने लगे और ऐसी गार्द, चौकी उस मंदिरमें दोदोकोस गिर्दमें बैठादी कि मनुष्यके जानेकी तो क्या सामर्थ्य थी ? ढोल नक्कारेकीभी आवाज न जातीथी. इसतरहसे बारह बरस जब बीतगये तब एकदिन ब्राह्मणीने अपने स्वामीसे कहा कि—एक युग पूरा होचुका और मैंने अपने पुत्रका मुँह नहीं देखा कदाचित् जी निकल जाय तो मनमें देखनेकी अभिलाषा रहजाय इससे तुम अब राजाके निकट जाकर कहो, कि—महाराज ! बारह बरस बीत गये पर मैंने बेटेका मुँह नहीं देखा अब मेरे जीमें है कि, पुत्रको घर सौंप-कर दंडी हो तपस्या करूं. यह ब्राह्मणकी बात सुन ब्राह्मण तयार हो राजाके पास गया. राजाने देखतेही दंडवत् की और उस ने भी आशीश दी राजा बोला—तुम आनंद मंगलसे हो ? ब्राह्मणने कहा कि—महाराज ! आपकी कृपासे सब आनंद मंगल है पर मैं एक कामनाकर आपके पास आयाहूं. यह सुनकर राजाने कहा कि—जो तुम्हारा काम हो सो कहो. तब उस ब्राह्मणने अपना सब अहवाल कहा. सुनतेही राजाने प्रधानको बुलाकर आज्ञा की कि, उन चार बालकोंको मंगाओ जिसको कि बारह बरस होचुके. दीवान सुनतेही तुर्त आप सवार हो लडकोंको लेने गया. पहले उनमेंसे राजकुँवरको ले आया. नख और केश बढे हुए, शरीर तमाम मैला कुचैला इस भेषसे राजाके सन्मुख ला खडा किया.

तब राजाने देखकर कहा कि, सुत ! तुम कुसलसे हो ? इतने दिन तुम कहां थे ? और अब कहांसे आये ? सब ब्यौरा अपना हमसे समझाकर कहो. यह सुन कुँवरने हँसकर राजासे कहा कि, आपकी कृपासे सब कुशल है और आजका दिनभी कुश-लका है जो आपके दर्शन पाये. यह कुँवरकी बात सुनकर अपने मनमें हर्षित हो राजाने मंत्रीकी तरफ देखा तो मंत्री उठ हाथ जोडकरके बोला कि,—महाराज ! यह सब कर्महीका लिखा है. फिर दीवानके पुत्रको बुलवाया, वह आकर राजाके सन्मुख भयानक भेषसे खडा हुआ. जैसे बनसे भालुकको पकड लाते हैं. मुखपर बाल उसी तरह बढे हुए शर्मसे नीचीगर्दन किये खडा था. तब उनको राजाने कहा कि—तुम अपनी कुशल कहो कहां थे ? और किधरसे आये हो ! तब वह बोला, महाराज ! कुशल क्षेम कहां होगी ? उधर संसारमें उपजे हैं इधर विनसे हैं जैसे घडी भरती और डूब जाती है नर जानता है ! दिन जाते है पर नर जाता है. यही जगतका व्यौहार है. इससे कुशल क्षेम कांहकी कहूं ? ये उसकी बातें सुन राजाने दीवानसे कहा—इसे यह किसने सिखाया है ? जो कुछ तूने कहाथा वह सब सच है. यह फल कर्मसेही इसने पाया. फिर राजाने कोत-वालके बेटेको बुलवाया. उसने आतेही राजाको सलाम किया और हाथ जोड खडा हुआ राजाने कुशल पूछी. तब उसने—कहा

पृथ्वीनाथ ! दिनरात नगरका पहरा हम देते हैं. इसमें भी चोर आन चोरी करता है, बदनाम हम होते हैं. बिना अपराध कलंक लगे तो फिर कुशल काहेकी है ? राजाने फिर ब्राह्मणके बेटेको बुलाया. जब वह सन्मुख आया तब राजाने दंडवत् की. वो मंत्र पढ आशीश देने लगा. तब राजाने कहा आप कुशल क्षेमसे हैं ? उसने कहा महाराज ! आप पूंछते हैं मुझसे यह बात कि तेरे शरीरमें कुशल है सो कुशल कहांसे हो ? मेरे शरीरकी दिन बदिन उमर घटती है महाराज ! कुशल तो तब कहनेमें आवे कि मनुष्य चिरंजीव होवे जिसके जीवन मरण साथ हैं उसको क्या खुशी है ? चारोंकी चार बातें सुनकर दीवानसे कहा कि सच है. पढानेसे पंडित नहीं. पंडिताई जो कर्ममें लिखी हो तो मिले यह कह दीवानके तईं सब प्रधानोंका सरदार किया और अपने राजका भार दिया. उन चारों लड़कोंके विवाह कर दिये. और बहुत धन दौलत दी इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज ! कलियुगमें ऐसा धर्मात्मा और साहसी राजा होना कठिन है जो इतनी बुजुर्गी और धन पाय अपनी कही बातका खयाल न करे और जो न्यायका धर्म था सोही कहे. ऐसा जो तू कर्म करे और इसके योग्य हो तो इस सिंहासनपर पाँव धर और नहीं तो अपनी यह आशा तज. यह पुतलीकी बातें सुन राजा अपने मनमें चिंता करता हुआ वहांसे उठ मंदिरमें आया और

पुरुषार्थ था यह सुनकर करुणावती पुतली बोली राजा ! जो तुम स्थिर होकर बैठो और कान देकर सुनो तो मैं सब कथा कहती हूं. तब राजा यह बात सुन प्रसन्न हो आसन बिछवा वहां बैठगया और जितने लोग राजाके साथ थे गिर्द ओ पेश वे सब बैठगये. फिर पुतली बोली कि, राजा ! वीरविक्रमादित्यके गुण तू सुन. ऐसा यशी, साहसी और पुण्यात्मा इस कलियुगमें कोई जन्मा नहीं और न कोई जन्मेगा. जिस समय राजा वीरविक्रमादित्य शंखको मार राजगद्दीपर बैठा तब शंखके दीवानको बुलाकर कहा कि, तुझसे मेरा काम न चलेगा. इससे यह बेहतर है कि, बीस दास मुझे अच्छे ढूंढकर दे कि जो राजकाज करनेके लायक हों, क्योंकि तुझसे कामका बंदोबस्त न होगा. मैं उनसे अपना सब काम करा लूंगा. राजाकी आज्ञा सुन दीवानभी बीस आदमी उसी नगरमेंसे ढूंडकर लाया. कुलमें, धर्ममें, सुंदरतामें, सबके सब अच्छे थे. उनको राजाके सामने खड़े करदिये. तब राजा उनको देखतेही बहुत प्रसन्न होगया. और उसी समय सबको बागे पहना पान देकर कहा कि, तुम हमारी खिदमतमें सदा हाजिर रहो. फिर उसके कई दिनके बाद उनमेंसे किसीको दीवान, किसीको कोतवाल, किसीको सेनाध्यक्ष किया. गरज इसी तरहमें हर एकको एक काम देकर पुराने लोगोंको जवाब दिया. और सब नया बंदोबस्त कर दिया. पर एक उस पुराने दीवानको जवाब न दिया, दीवान जब अपने घरमें बैठा करता तब वे सब

पुराने लोग आकर हाजिर हुआ करते और आपसमें चर्चा करते कि यह राजा बुद्धिमान है, जो राजको यों लिया और बंदोबस्त यों किया, कई दिनके बाद उन लोगोंसे दीवानने कहा कि, तुम मेरेपास आया न करो इस लिये कि काम तो मेरे हाथ तुह्मारा निकलता नहीं और नाहकको राजा सुनेगा. तो खपा होगा कि, यह अपने घरमें क्या मता किया करते हैं ? इस वास्ते मैं अपनी बदनामीसे डरताहूं कुछ तुम मेरे इस कहनेका अपने मनमें बुरा न मानना. यह सुनकर उनमेंसे फिर कोई उसके पास न आया, यह अपने मनमें कहने लगा कि, ऐसा कुछ काम कीजिये जिसमें संतुष्ट हो रैनादिन यही बिचार करता रहा था. एक दिन वह प्रधान नदीके किनार गया, वहां जाकर स्नान ध्यान कर कमरभर पानीमें खड़ा हुआ जप करताथा इसमें उसे नदीमें एक फूल अति सुंदर कि वैसा कभी दृष्टीमें न आया था बहता हुआ देखा. अपना जप छोडकर आगे बढ फूल लेकर जीमें विचारा कि यह राजाको भेंट करूंगा तो वह देखकर बहुत खुश होवेगा. वह फूल हाथमें ले खुशी खुशी अपने घरमें आ कपडे दरबारके पहन राजाके पास गया, और फूल नजर किया. राजा फूल लेकर खुश बहुत हो बोला कि, अपने राज पाटका मैंने तुझे प्रधान किया, उसने उठकर भेट दी और आदाब बजालिया. फिर राजाने कहा इस फूलका वृक्ष मुझे लादे, और लादेगा तो मै तुझसे बहुत खुश हूंगा और न लादेगा तो अपने नगरसे

निकाल दूंगा. यह राजाकी आज्ञा ले अपनी मंदिरमें आया और जीमें विचार करने लगा कि, मैंने पूर्व जन्ममे ऐसा क्या पाप किया है कि जो ऐसी सुंदर सुवस्तु राजाको दी और राजाने प्रसन्न होकर ली. फिर यह क्रोध किया. कर्मकी गति बूझी नहीं जाती कि भला करते बुरा होवे. अकेला बैठा बहुत चिंता करने लगा. कि, अगर राजाकी आज्ञा न मानूं तो देशनिकाल मिले और ढूंढने जाऊं तो कहांसे ढूंढकर लाऊं. जो दुःख पाकर कहीं जाऊं और ढूंढ न पाऊं तो और भी दूना दुःख होगा. मैं यह जानता हूं कि, काल मेरे निकट आकर पहुंचा है. इससे अपयशका मरना भला नहीं अगर योंही मरना है तो वनमें जाइये जो ढूंढे मिले तो ले आइये नहीं तो वहीं मर जाइये इतनी बातें अपने जीमें विचार, साहस करके बैठा अपने दीवानको बुलाकर कहा कि किसी कारीगर बढईको बुलादो कि एक नाव हमें ऐसी तयार करके दे कि बगैर मल्लाह जिधरको चाहे ले जावें. कारीगर बढईको बुलवा दीवानने हाजिर कर दिया. बढईने कहा कि महाराज ! कुछ मुझे खर्चकी आज्ञा होवे तो मैं जल्दी बनालाऊं. मंत्रीने दीवानको कहा कि यह जितने रुपये मांगे उतने इसे दो. उसने मुंहमांगे रुपये उसे दिये वह घरको ले गया और कितनेक दिनोंके बाद नाव तैयार करके खबर दी कि नाव तैयार हो चुकी. दीवानजेभी अपने स्वामीसे जाकर कहा कि, आपने जो

नाव बनानेकी आज्ञा दी थी सो तैयार है. यह सुनतेही दीवान उठ नदीके किनारे आकर नावको देख प्रसन्न हो उस बढईको घोडा जोडा दे पांच गांव वृत्ति कर दिये और दीवान अपना सामान नावपर रखवा आप कुटुंबसे बिदा हो हाथ जोडकर कहने लगा कि, जो हम जीते फिरेंगे तो फिर तुमसे मिलेंगे और जो मरगये तो यही बिदा हमारी है. यह कह कर रुखसत हुआ. तमाम घरके लोग कूक मार रोने लगे. फिर यह भी जी भारी किये हुये इस नावपर बैठा पाल चढा कि कीश्ती खोल जिस तरफसे वह फूल बहता हुआ आया उसी तरफको वह चला जाता था और दोनों किनारेके वृक्षोंको देखता जाताथा. कितनेक दिनोंमें चला चला एक महावनमें जा पहुंचा और खानेकी जिनसभी तमाम हो गई तब उसने अपने जीमें बिचारा कि, अब नावपर बैठ रहना उचित नहीं जिस कामको आया हूं उस कामकी फिक्र किया चाहिये. यह सोचकर किसी पाल कर उडाये जाता था. कि एक पहाड दरमियान उस दरियाके नजर आया. और उसी पहाडसे पानी आता था. किश्ती वहीं लगा. आप उतर कर पहाडपर जाकर क्या देखता है कि जहां तहां हाथी गैंडे शेर अरने दौड रहे हैं सिवाय उनकी आवाजोंके और कोई बात कान नहीं पडती, सुन सुन अवाजें अपने जीमें सहमा जाता,

था, इस परभी आगेही पांव धरता था. जब उस पहाडको लांघ गया वहां जाकर देखे तो एक वैसाही फूल बहा हुआ चला आता है. उस फूलको देख जीमें ढाढ़स हुई और कहने लगा कि वैसा फूल दूसराभी देखा. भगवान् चाहे तो वृक्ष भी नजर आवेगा. ज्यों ज्यों आगे बढा त्यों त्यों फूल और भी बहते देखे वह अंदेशा करनेका कारण उसके जीमें कमती हुआ. और उसके मनमें कुछ करार आया, आगे देखता है कि एक बडा पहाड है और उसके नीचे एक मंदिर है. उस मंदिरको देखकर अपने मनमें विचारा कि, ऐसा सुंदर मंदिर उस जगह बना हुआ है चाहिये कोई मनुष्यभी होय. यह कहता हुआ उस मंदिरके पास जाकर पहुँचा, और वहां जाकर देखे तो एक तरुवरमें तपस्वी जंजीर पाओंमें बांधे हुए उलटा लटक रहा है मांस, चाम सूखकर काठ हो गया है और उसमेंसे एक एक बूंद रक्तका उस नदीमें गिरता है, और फूल हो वहांसे चला जाता है. ऐसे अचरजको देख जीमें यों कहने लगा कि भगवानकी लीला कुच्छ बुद्धिमें नहीं आती. नीचे निगाह करके देखे तो बीस योगी वैसेही जटाधारी बैठे हैं और सूख के वेभी खडंग होरहे हैं और चारों तरफ उनके दंडकमंडलू पडे हुए हैं और जिस ज्ञान ध्यानमें जैसे बैठे थे वैसेही बैठे हैं. यह दशा वहांकी देख प्रधान उलटा फिर अपनी

नावके पास आया. नावपर सवार हो कितनेक दिनोंमें अपने नगरमें आन पहुँचा लोगोंने खबर उसके आनेकी पा पेशवाई लेनेको गये और इसे ले आये. जो कोई आताथा सो मिलकर क्षेम कुशल पूछ कर बधाई देता था घरमें भी उसके नौबत बाजने लगी, मंगलाचार होने लगा. यह खबर राजाने सुनी और एक प्रधानको भेज दीवानको बुलाया. वह आनकर लेगया. यह जाकर राजाके पांवपर गिर पडा, राजाने उठा छातीसे लगा क्षेम कुशल पूंछी और कहा. कहां तलक तू गयाथा और कहां ठिकाणा उसका कर आया ! यह सुनतेही वे फूल जो लायेथे सो भेंट किये और हाथ जोडकर कहने लगा कि महाराज ! एक अचंभेकी बात है जो मैं कहूँगा तो आप न पतियावेंगे फिर राजाने कहा जो तूने अचंभा देखा है सो बयान कर । तब वह बोला महाराज मैं यहांसे चला हुआ एक जंगलमें पहुँचा और वहां जाकर एक पहाड़ देखा उस पहाड पर जब मैं चढा तो और एक पहाड नजरआया. इस तरहके पहाड लांघ जब मैं आगे गया, तब तक पहाडके तले एक सुंदर मंदिर देखा जब मैं उसके पास गया तो एक पेडपर तपस्वी पांओंमें जंजीर बांधे हुए उलटा लटकता हुआ. नजर पडा मांस चाम सब उसका हाडमें सट रहा है और रक्त उसकी देहसे जो टपकता है सो फूल बनकर बहता है और उसके नीचे

देखा तो बीस तपस्वी आसन मारे जिस ध्यानमें बैठे थे वोंके योंही रहगये हैं और जान एकमेंभी नहीं. यह सुनकर राजा हँसा और मंत्रीसे बोला कि, तू सुन मैं जराका विचार तुझसे कहता हूं कि जह जो तूने तपस्वी सांकलमें ल्टकता हुआ देखा वह तो मेरी देह है. मैने उस जन्ममें ऐसी कठिन तपस्या की थी कि उसका फल यह राज मुझे मिला है और जो वह बीस सिद्ध तूने देखे सो बीसों दास हैं कि, जो तूने ला दिये और उस तपस्याके तेजसे मेरे आगे कोई नहीं ठहर सकता. उसी बलसे मैंने शंखको मारा और यह पूर्वजन्मका लिखा था इसमें मेरा कुछ दोष नहीं. जबतक मैं इस पृथ्वीमें अखंड राज करूंगा तबतक तू मंत्री रहेगा. तू अपने जीमें चिंता मतकर. इसमें दोष तेरा भी कुछ नहीं. जैसा पूर्वजन्मका लिखा था सो हुआ और जैसी तब उन्होंने मेरी सेवा कीथी वैसाही अब उसके फलभोग करेंगे. तब उन्होंने मेरेसाथ जी दिया था इस लिये मैं उन बीसोंको अपने निकट रक्खा है. यह अपना परिचय दिखानेके लिये तुझसे निठुराई की थी. अब तेरा मन पतियाया. और तूने हमारा मर्म बूझा. क्योंकि सब लोग कहते हैं विक्रमने अपने बड़े भाईको मारा इसमें दोष मेरा कुच नहीं और जो कर्मका लिखा है सो हो रहता है. आजसे मैंने तुझे अपना प्रधान किया. और जिसमें राजकाज अच्छा होवे वह कीजो. यह बात किसीके आगे मत कहियो किसलिये कि, जो सुनेगा सो राजके लोभसे

योग कमावेगा. इतनी बात करुणावती पुतली कहकर बोली कि, सुन राजा भोज ! जितना वीरविक्रमादित्यका राज था तिसका भार उसने दीवानको दे मुखत्यार करदिया. और राज पाट हवाले करदिया. जो इसके समान तू होगा तो इस सिंहासनपर बैठनेको नाम ले नहीं तो यह खयाल दिलसे दूर कर. वह साअत और वह दिनभी राजाका टलगया. दूसरे दिन सुबह आन फिर सिंहासनके पास खड़ा रहा. तब चित्रकला–

चौबीसवीं पुतली—

बोली सुन राजा भोज ! मैं एक दिनकी हकीकत राजा वीर विक्रमादित्यकी तेरे आगे कहती हूं तू दिलमें अपने खूब तरह समझ. एक दिन राजा विक्रमादित्य नदीके किनारे दशहराको नहाने गया था. वहां जाकर देखे तो एक रंडी बनियेकी जवान खूब सूरत नदीके तीर खडी हुई बाल सुखाती है और सामने उसके साहूकारका बच्चा बैठा तिलक दे रहा है. आपसमें दोनोंकी सैन चल रहीथी. कभी तो यह स्त्री हाथ नचाय भौंहे मटकाय बाल सुलझाती है और कभी शिरका अँचला छातीसे सरका बदन दिखा फिर छिपाती है, कभी आरसी दिखा चूमकर छातीसे

लगाती है इस तरहसे अनेक रीतिसे चेष्टा कर रही है और वह भी इसी तरह इशारे कर रहा है. उन दोनोंकी हालत देख राजाने अपने जीमें विचारा कि इतना तमाशा देखा चाहिये कि, ये क्या करते है. राजाने स्नान ध्यान अपनाभी सब किया. पर उनकी ओरभी देखता रहा. इतनेमें वह स्त्री स्नान कर चद्दर ओढ धूँघट कर अपने घरकू चली और साहुकार बचाभी उसके पीछे चला. राजाने एक हलकारा उन दोनोंके पीछे लगाया और उस हलकारेको कह दिया कि इन दोनोंका मकान देख सबसे वाकिफ हो और हमे जल्दी खबर दे. जब वह औरत अपने घरमें गई तब उसने फिरकर देखा और शिर खोलकर दिखाया. फिर छातीपर हाथ धर अपने मंदिरमें गई और सेठके बेटनेभी अपनी छातीपर हाथ रख लिया. यह खबर हलकारेने आ राजाको दी तब राजाभी अपनी सभामें आकर बैठा और एक पंडितसे पूँछा कि कोई स्त्रीचरित्र हमें सुनाओ कि हमारा जी सुनना चाहता है. तब पंडितने उत्तर दिया कि महाराज ! मेरा तो क्या सामर्थ्य है जो मैं स्त्रियोंका चरित्र और पुरुषका भाग कहूँ. ब्रह्माभी नहीं जानता, आदमीकी तो क्या कुदरत है ! और यह देखतेही बन आवै जबानसे कहा नहीं जाता. यह बात पंडितसे सुन राजा चुप हो रहा. और अपने जीमें कहा यह चरित देखा चाहिये. इतनेमें शाम होगई राजा उठ महलमें गया और कुछ खा तुरंत बाहर निकल आया और

उस हलकारेको बुलाकर कहा कि तू इस बातका ब्यौरा कुछ समझ गया है क्या ? तब उसने जवाब दिया कि महाराज कुछ मेरे जीमें आया है पर आपके आगे मुझे कहते शंका होती है. तब राजाने कहा कि तू जो समझा है सो निडर होकर बयान कर. वह बोला महाराज ! उसने जो शिर खोलकर छाती-पर हाथ रक्खा सो उसने कहा कि जिस वख्त अँधेरी रात होगी तब मैं तुझसे मिलूंगा और उसनेभी छातीपर हाथ रख जवाब दिया कि, अच्छा दासकी समझमें यह कुछ आता है राजा कहा तू तो सच समझा है यही उनका मतलब है. मैंनेभी रही देरतक घाटपर बैठे उनका मुद्दा मालूम कियाथा. पर तू अब मेरे तई उसके घर लेचल. हलकारेने कहा अच्छा में हाजीर हूं महाराज ! चलिये. तब राजा हलकारेको ले उसके मकानके पास आया और उसको बिदा किया पिछवाडे चौबारेके एक खिडकी थी उसमेंसे चिरागकी ज्योति नजर आतीथी और कभी २ जो झाँकती थी तो उसकी झलकभी मालूम होतीथी जब जब दो प्रहर रात गुजरी और खूब अंधेरी होगया तब राजाने उधरसे एक कंकरी उस खिडकीमें मारी लगतेही वह झाँकि राजाको देख यह जाना कि वही पुरुष यहां आन पहुंचा. तब उसने तमाम घरका जवाहिर और सब गहना एक डब्बेमें भरा और साथ लेकर निकल राजा के पास आई कहा कि, यह ले और मुझे लेकर चल. राजाने कहा यो तो मैं तुझे न ले जाऊंगा क्योंकि तेरा खाविंद जाती

है जो कभी खबर पायेगा तो राजाके दरबारमें फिरयादको जायगा. तब राजा तुझे और मुझे मार डालेगा. इससे बेहतर यह है कि, पहले तू इसे मार फिर आवो निडर हो हम तुम सुखसे भोग करें. उसने विलंब कुछ न किया सुनतेही घरमें जा कटारी मारकर फिर राजाके पास चली आई और वह जवाहिरका डब्बा राजाके पास दिया. और दोनों इस तरहसे नगरके बाहर गये. फिर आगे आगे राजा और पीछे वह स्त्री. जब नदीके किनारे पहुँचे तब राजा वहांही खड़ा हुआ. और अपने जीमें विचार करने लगा कि, जिसने अपने स्वामीको मारनेमें विलंब न किया उससे दूसरेकी क्या भलाई होगी ? इस वास्ते अब इससे जुदा होइये और इसका चरित्र क्या क्या है सो देखिये कि, अब यह क्या करती है ? यह दिलमें विचार कर राजाने कहा ऐ सुंदरी ! मैं देखूं पहले इस नदीमें जल कितना है ? जो मैं इस नदीकी थाह पाऊं तो इसी रास्ते तुझको भी ले चलूंगा. यह कह राजा नदीमें पैठा. और पैरकर पारका रास्ता लिया. जब उस किनारे जा पहुँचा तब पुकारकर कहा कि मैं तो पार उतर आया. पर तुझे ला नहीं सक्ता क्योंकि इसमें पानी तो अथाह है. यह कह राजाने आगेकी राहली तब उस औरतने अपने मनमें बिचारा कि, द्रव्य तो सब उसके हाथ लगा है इसके लोभसे वह मुझे छोड

गया अभी रात कुछ बाकी है बेहतर कि, फिर घर चलिये और स्वामीके साथ जलिये. यह दिलमें ठानकर अपने घरमें गई और खाविंदके पास जा कुक मार हाय हाय कर रोने लगी और पुकारा कि, दौडो, मेरे खाविंदको चोर मारके भागे जाते है और घरकी सब माया लिये जाते हैं. यह रोनेकी आवाज सुन बाहरके सब लोग दौड आये और पूछने लगे कि चोर किधर गये है? उसने कहा अभी इसी रास्तेसे निकल गये. लोग तो ढूंढने लगे और यह शिर पटक पटक रो रो कहतीथी कि, मेरा सुहाग लूटकर मुझे अनाथ किये जाता है सब लोग कुटुंबेक समझने लगे कि, यह तो भगवानकी माया है इसमें किसीका बश नहीं चलता. जब मौत आती है तब कुछ बहाना लिये आती है इसके दिन पूरे हो चुके और कौन किसीको यों मार सकता है और कोन किसीको जिला सकता है. तू अपने जीमे ढाढस बांध और इसकी गतिकर. तब वह बोली मैं भी इसके साथ सती हूंगी. क्योंकि मेरा जगतमें इस वख्त कोई नहीं कि, मेरा सहाय करे. लोगोंने बहुतेरा समझाया, पर उसने न माना और खाविंदको ले नदीके किनारे गई और चिता बना उसको लेकर आपही जलनेको बैठी. उस वख्त तमाम नगरके लोग देखने आये. उसी वख्त राजाभी वहां आकर खडा हुआ और उसने खातिर जमासे आग अपने

हाथसे चितामे लगाई और सम्हल बैठी जब कपडे और बाल उसके जलकर बदनमे आंच लगी तब घबराकर उठी और सब लोग देखकर हँसे. वह चितामेसे कूद नदीमें जा पडी. तब राजासे चुप न रहा गया. और कहा कि अय सुंदरी ! यह क्या है? वह बोली सुनो राजा ! इसका मर्म जाकर अपने घरमें पूछो और मैं जो अपने कर्ममें लिखा लायीथी उसीका फल पाया. पर तूने अपने घरका भेद न पाया. हम सात सखियां इस नगरमें हैं उनमेकी एक मैं हूं और छः तेरे घरमे हैं! यह कह वह तो पानी डूबगई. राजा अपने मनमे दुःख पा महलमें आया और छिप रहा. किसीको दिखाई न दिया. एक दिन और एक रात वहां लगा रहा. दूसरी रात जब हुई तब आधी रात्के समय छहो रानियां हाथोंमें कंचनके थाल मिठाई पकवानसे भरभर लेकर महलके पिछवाडीकी वाडीमें गई. उसके आगे एक वन था. उस बनमे एक मठी थी. उसमें एक योगी ध्यान लगाये बैठा था. ये छहो रानिया दंडवते कर वहीं जा बैठीं. वहा राजाभी जो उसके पीछे पीछे आया था. यह अहवाल देखने लगा. जब सिद्ध अपने ध्यानसे निश्चित हुआ, और उनसे हँस हँस बातें करने लगा. और जिसकदर ये मिठाई पकान्न लेगईथी सो सब आगे रख दिया. उसने भोजन किया और पान खाकर एक योगविद्याकी एक देहकी छे देह

भयी और उन छहो रानियोसे भोग किया. फिर वे छहो रानियों विदा हो अपने मंदिरको चली आई. राजा यह चारित्र देख अपने मनमें विचार करने लगा कि, इस सिद्धने क्या किया कि अपना योग भ्रष्ट किया और उनका धर्म खोया. यह विचार कर राजा सिद्धके सोहीं जाकर खडा रहा. सिद्ध मनमें कुछ शंका लिये बोला कि, हे नृपती! कहांसे आये हो अपने मनका मुझसे भाव कहो. तब राजाने कहा मुझे आपके दर्शनकी इच्छा थी. इस लिये मै यहां आया हूं. तब वह योगी बोला कि राजा! तू मुझसे जो कामना मांगे सो तेरी पूरी करूं फिर राजाने कहा कि स्वामी! एक देहकी छः देह किस तरहसे बनै वह विद्या मै आपके पास मांगता हूं मुझे बताओ नहीं तो मैं तुझे जानसे मार डालता हूं, इसका विचार कर, जवाब दो. इतनी बात कह पुतली कहने लगी कि, सुन राजा भोज जब विक्रमने सिद्धसे ये बाते कहीं तब उसने डरके वह विद्या दी. और राजाने वहां परीक्षा करली. तिस पीछे योगीको तलवार मार उसके टुकडे टुकडे कर डाल दिया. फिर वहांसे निकल महलमे आया और जहां छहों. रानियां बैठी थी वहां आनकर राजाभी बैठ गया. तब राजाको देखकर छहो ऊठकर खिदमतमे हाजिर हुई. किसीने पंखा हि- लाया, किसीने हाथ मुँह धुलाया, किसीने पान बना खिलाया इसी तरह सब अपनी २ प्रीती राजासे प्रकाश करने लगी. और

ज्यों ज्यों वे प्यार करती थीं त्यों त्यों राजा मान करता था. फिर राजा बोला सुनो—सुंदरियो ! मैं तुमसे हित करता हूं और तुम मुझसे अनहित कर औरका ध्यान धरो यह तुम्हें उचित नहीं. तब वे बोलीं कि, महाराज ! हमारे तो प्राणरक्षक तुम हो, तुम्हें देखे बिना हम जीतीं नहीं तुम्हारा ध्यान हम आठो पहर करती हैं जो कभी तुम कहीं बाहर जाते हो तो हम चकोरकी तरह तुम्हारे मुखचंद्रके देखनेको तरसती हैं. और जैसे जल बिना मीन तडके तैसे हम व्याकुल रहती हैं और क्षणभरके वियोगमें जलकमलकी तरह हम कुम्हला जाती हैं. यह सुन राजा क्रोधकर मुसकुराया और बोला—सच है. सुंदरियो ! हमने जाना तुम्हारा दिल मुझे नहीं छोडता जैसे एक सिद्धके छह सिद्ध होगये और फिर वह एकही सिद्ध हो गया. यह सुन रानियां एकदम चुप होकर बोलीं कि—महाराज ! ऐसी अचरजकी बात तुम कहते हो जो कभीं न देखी न सुनी और किसीको इतिबारभी जिसका न आवे. क्यों कर एक देहकी छह देह होयँ और इस बातको कौन मानेगा ? तब राजाने कहा कि—चलो हम तुम्हें दिखादें तब छहोंको अपने साथ ले उसी बाडीमें जा उस गुफाका मुँह खोल दिया. देख कर वे शरमागईं और अपने मनमें जाना कि, राजाने हमारा सब चरित्र देखा. फिर राजाने कहा कि, तुमने जाना या नहीं. यह सुनकर उन्होंने नीच गरदनें कर जवाब कुछ न दिया.

तब राजाने छहोंका शिर काट उस गुंफामें डाला और उसका मुँह बंद कर चला २ मंदिरमें आया. और आतेही नगरमें ढँढोरा फिरा दिया कि जितने ब्राह्मण और ब्राह्मणियां और ब्राह्म-णोंकी कन्या हैं वे सब यहां आनकर हाजिर होवें. यह सुनकर सब हाजिर हुई जितने रानियोंके गहने और वस्त्र थे सब ब्राह्मणियोंको पहनाये. और एक एक ब्राह्मणको एक एक गांव वृत्ति करदिया. और जितनी कन्या थीं उनको दान दहेज दे ब्याह कर दिया. और आप राजकाज करने लगा. इतनी बात कह पुतली समझाने लगी कि. सुन राजा भोज ! तू बडा पंडित है पर इस आसनपर वह बैठेगा, जो विक्रमादित्यके समान होगा. तब वह साअत गुजर गई. राजाभी वहांसे उठकर अपने मकानको गया. रातको इसी सोचमें पडा रहा. दूसरे दिन सुवहको फिर सिंहासनके पास आकर चढनेको तयार हुआ तब जयलक्ष्मी—

पचीसवीं पुतली—

बोली—सुन, राजा भोज ! एक दिनकी बात में तेरे आगे कहतीहूं एक भाट निपट दरिद्री खरराबहल था. सब पृथ्वीके राजओंके पास फिर आयाथा. और एक कौ-

डीका किसीसे उसने फायदा न पाया था. जब अपने घरमें आया तो देखा कि बेटी जवान व्याहनेके लायक हुई है. यह अपने जीमें चिंताही करताथा कि, उसकी भाटिन बोल उठी कि, तमाम देश तुम फिर आये पर जो कमाई कर लाये सो कहो. तब उसने जवाब दिया कि, मेरे प्रारब्धमें धन नहीं. मैं इस लिये कि. तमाम राजाओंके पास गया. और शिष्टाचार उन्होंने सब किया; पर एक दाम न हाथ आया. अब मेरे जीमें एक बात आती है. राजा वीरविक्रमादित्य बाकी रहगया है उसके पासभी जाकर माँगू जो मेरे जीका संदेह मिटे. फिर वह भाटिन बोली—अब तुम कहीं मत जाओ और संतोषकर रहो. कर्मका लिखा फल यहीं बैठे पाओगे. फिर भाटने कहा कि, राजा वीरविक्रमादित्य सुनते है कि बड़ा दानी है, उसके पास अपनी कामना जो ले गया है वह खाली हाथ नहीं फिरा और अपने मकसदको पहुँचा है. ये बातें कर वह राजाके पास चला और गणेशजीको मनाय राजाके सन्मुख जा खड़ा रहा. तब राजाने दंडवत् की और वह आशीश देकर बोला कि—हे राजा ! बहुत भूमि मैं फिर आया हूं और आपका यश मुझे यहां ले आया है. आप इस मर्त्यलोकमें इंद्रका अवतार हो. आपकी बराबर दानी इस संसारमें कोई नहीं. इस समयमें आप दान देनेमें राजा हरिश्चंद्र हो और तमाम पृथ्वीमें आपकाही यश छाय रहा है. और स्वामी मैं कालिकासुत हूं. भाटवंशमें आनकर अवतार लिया है और

अब तुम्हें याचने आयाहूं, मेरा मनोरथ पूर्ण करदो. मैंने संसारमें फिरकर खुब देखा कि, सिवाय तुह्मारे मेरी आशाका बुजानेवाला और और कोई नहीं. तब हँसकर राजाने कहा कि, तू अपना मतलब सब मेरे आगे प्रकाश करके कह तो मैं तेरी कामना पुरी करूं. भाटने कहा-यों मुझे अपने कर्मका भरोसा नहीं आप वचन दीजिये तो मै खातिरजमासे कहूं. तब राजाने वचन दिया. भाट बोला-महाराज ! मुझे मुँहमांगा दान दीजिये. मरी पुत्रीकी शादी करदो बारह बरसकी कन्या मेरे घरमें बैठी है. इस लिये मैं आपके पास याचने आया हूं यह सुन राजाने हँसकर मंत्रीसे कहा कि, जो यह मांगे वह इसे दो. फिर भाटने कहा-महाराज ! जो कुछ आपको देना है सो अपने सन्मुख मंगा कर दीजिये मुझे इस संसारमें अब किसीका इतबार नहीं. राजाने दश लाख रुपये रोक और हीरे, लाल, मोती, सोने, रूपेके गहने था ल भरकर दिये. और वह ले आशीश दे अपने घरमें गया. जो कुछ लाया था सो सब व्याहमें लगाया और राजाने उसके पीछे जासूद कर दिये थे कि तुम देखो कि, 'यह धनको लेजाकर क्या करता है ' ? इसकी खबर ठीक मुझे लाकर दो. जब शादी कर चुका और उसके पास एक दिनके खानेको कुछ न रहा तब उन हलकारोंने जाकर राजाको खबर दी कि, महाराज ! उस भाटने ऐसा व्याह बेटीका किया कि इस कलियुगमें कोई और करसकता नहीं. जो कुछ वो आपके पाससे धन दौलत लेगया

सो सब क्षणभरमें बेटीको दे ब्याह दिया. यह सुन राजाने और कई लाखै रुपये उसके घर भेज दिये. और अपने चित्तमें बहुत प्रसन्न हुआ कि, धन्य भाग्य मेरा है जो मेरे राजमें ऐसे हिम्मत-वाले लोग हैं. इतनी बात कह पुतली बोली कि सुन राजा भोज ! इतना धन देकरभी राजाने उसका खर्च सुन और दौलत भेज दी ऐसा दानी तू हो तो इस सिंहासनपर बैठ और नहीं तो मनके लड्डू खानेसे कुछ हासिल नहीं है. यह सुनकर राजा अपने महलमें आया. फिर सुबह हुआ तो स्नान पूजा कर वहीं आन पहुंचा इतनेमें विद्यावती नाम—

छब्बीसवीं पुतली—

कहने लगी कि, सुन राजा भोज ! मैं तेरे आगे ज्ञानकी बात कहती हूं और तू मन देकर कान रख जब आदमी जन्मता है तो कुछ नहीं संग लाता और मरता है तो कुछ नहीं लेजाता. इस जीवितका फल यही है कि, संसारमें आकर कुछ करनी करे. और जैसी करनी करेगा वैसाही फल पावेगा. और संसारमें जीवन थोडा है इससे ऐसा यश करो कि, जानेपरभी जगमें नाम ठहरा रहै. दोनों लोकोंमें सुख पावे. यह मनुष्यजन्म वारंवार नहीं पाता देह पाता है. और लक्ष्मी दान कर कुछ सोच मत कर. यही अपने

जीमें सदा रख कि, दान हमेशा किया कीजिये यह भयरूप जो संसारसागर है इसके तरनेको सिवाय दान, उपकार और हरिभजनके चौथा उपाय नहीं. मैंने तुझे कहा कि, साथ कोई कुछ ले नहीं जाता. मैं तेरे आगे सब कहतीहूं कि, राजा हरिश्चंद्र, राजा कर्ण, राजा बीरविक्रमादित्य क्या ले गये ! और जिन्होंने दान उपकार हरिभजन किया उनका जगमें नाम रहा और अंतसमय वैकुंठ पाया. ये बातें पुतलीकी सुन राजा भोज बोला कि, राजा विक्रमादित्यने क्या किया है ! वह कह. तब विद्यावती पुतली बोली कि, एक दिन राजा बीरविक्रमादित्य राजसभामें बैठा था तब एक दासीने आकर अरज किया कि, महाराज ! उठिये पूजाका समय जाता है. यह सुनकर राजाने विचार कि, इसने सच कहा मेरी उमर चली जाती है और मुझसे ज्ञान, धर्म, पूजा बन नहीं आई इससे उत्तम यही है कि, इस राजकाजकी माया भुलाय आप योग कमाइये जो कि और जन्ममें काम आवे. यह राजाने अपने जीमें विचार और राजपाट, धन जन मिथ्या समझकर तपस्या करनेको एक वनको चला और यह विचार करता जाताथा कि, इस संसारमें जीना सबेरेकी ओसकी समान है और जिसके झगड़ोंमें मैंने अपना काम नाकारण गवाँया. यह बिचार करता जब पूर्वजन्ममें दान, व्रत, तपस्या बहुत कर आता है तो यह नर- हुआ राजा एक महावनमें जा पहुँचा वहां जारक देखे तो

एक मंडली तपस्वियोंकी बैठी हुई है. धुनी एक एकके आगे जागे रही है, आसन मारमार अपने अपने ध्यानमें लीन हो रहे हैं. कोई ऊर्ध्वबाहु, कोई कपाली आसन मार, कोई पचाग्नि, इस रीतिसे अनेक अनेक प्रकाराकी साधना कर रहे हैं और कोई कोई उनमें बैठ शरीरसे मास काट काट होम कर रहा है. इस तरहसे उनकी तपस्या देख राजाभी तपस्या करने लगा. आपभी तपस्या कर- ताथा और कईएक दिनमें तपस्वियोंने अपना शरीर होमने लगा- कर दिया. उनको देखादेखी राजाभी अपना शरीर सब होम कर- कई महीनोमें राजाने एक दिन शिरभी अपना काट होम कर- दिया. वहां जो एक शिवका मन्दिर था उसमेंसे एक शिवगण निकला और निकलकर सब तपस्वियोंकी धुनीमेंसे राख समेट कर जुदी जुदी ढेरी की और फिर जा शिवको खबर दी कि, महाराज ! आपने कहाथा सो मैंने किया तब शिवने आज्ञा दी कि, यह अमृत तू लेजा और उनके ऊपर छिडक आ. यह आज्ञा पाय अमृत ला ज्यों ज्यों छिडकताथा त्यों त्यों, उनसे एक २ आदमी शिव शिव रामराम कहकर खडा रहताथा. सब पर तो उसने छिडक दिया पर राजाकी धुनी भूल गया और सब तपस्वी मिलकर शिवकी स्तुति करने लगे कि, महाराज ! आपका भक्त राजाभी है आप अनाथके नाथ हो जिसने आपका स्मरण किया तिसको तभी तुमने फल दिया और जहां जहां सेवकोंक

संकट हुआ है तहां तहां उसका सहाय किया है. यह स्तुति करके उन तपस्वियोंने कहा कि, महाराज! एक नृपतिभी हमारे साथ तपस्या करता था. मालूम नहीं कि, उसको उठानेकी आपकी आज्ञा हुई कि नहीं यह सुन महादेवने उस गणके तरफ देखा. देखतेही उसने अमृत ले जाकर जो धुनी बाकी रहीथी उसपर छिडका राजाभी हरिहर कहता उठ खडा हुआ और हाथ जोड स्तुति करने लगा कि, महाराज! संसारके सब जीवोंकी आप सहाय करते हैं और पालते हैं आप बिना इस संसारसागरसे कौन पार उतारे? जिसने जगमें आपको नहीं पहुँचाना उसने अपना जन्म निष्फल खोया. फिर जितने तपस्वी वहां थे उनको शिवजीने मुंह मांगा वर दिया. और सबको बिदा किया. सबके पीछे जब राजा अकेला रहगया तो उसे कहा कि, हे राजा वीरविक्रमादित्य! अब जो तेरी इच्छामें आवे सोही वह मुझसे माग में तुझे दूंगा. यह सुन राजाने कहा—महाराज! आपकी दयासे सब कुछ है पर एक यह मांगता हूँ कि—संसारके जन्ममरणसे मेरा निबेडा करो. जैसे और भक्तोंका निबेडा किया तैसे मुझ परमपापी आधीन दीनहीनको तारो. यह राजाकी विनती सुन दयाकर शिवजीने हँसकर कहा कि, तेरे समान कर्मी इस कलियुगमें कोई नहीं है. और तू ज्ञानी, योगी, दानी, साहसी, तपस्वी है. कलिके राजाओंका उद्धार कर-

नेवाला है और मैं तुझसे कहताहूं कि, तू जाकर अपना राज कर. तेरा काल निकट आवेगा तब तू मेरेपास आइयो. मैंने तुझे वचन दिया है कि, अंतसमयमें मैं तुझे मोक्षपद दूंगा. इससे तू अब जाकर मर्त्यलोकमें आनंदसे राज कर. फिर राजा करुणा करके बोला कि, महाराज ! संसारमें तुम्हारे प्रपंच कुछ जाने नहीं जाते या तो मुझे इस समय तारो नहीं तो मैं अपना जी देताहूं. तब हँसकर शंकरजीने कहा कि, जो तू जी देगा तो मृत्युबिना यम तुझे हाथसे भी न छुएगा. और फिर आयुर्बलके दिन भरने पडेंगे इसवास्ते तू जा उठ मेरा वचन जीमें रख इतना कह शिवजी तो कैलासको गये, और राजाके हाथमें कमलका फूल दे यह कह गये कि जब यह कमल मुर्झायगा तब तू जानियो कि अब छै महीनेमें मैं मरूंगा. फूल ले राजा अपने नगरको आया और अपने मनका विचार किसीके न कहा. कितनेएक बरस पीछे वह कमलका फूल मुर्झा गया. तब राजाने समझा कि, मैं अबसे छै महीनेमें मरुंगा. जितनी कुछ धन और दौलत थी सो सब ब्राह्मणोंको संकल्प करदी. स्त्री और पुत्रके खानेको कुछ धन दिया बाकी सब पृथ्वी ब्राह्मणोंको दान करदी. इस तरह राजा दान पुण्यकर सदेह कैलासको चला गया. इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज ! विक्रमादित्यने इतना काम किया और जीवन मरण दोनों चीन्हा. इससे मैं तुझसे कहती हूं कि, जीनेका

कुछ भरोसा नहीं और मरण साथ लग रहा है. दुःख सुखभी मनुष्यके साथ हैं और पापपुण्यभी रहते हैं. निर्गुण और सगुण ज्ञानभी घटमें रहता है पर एक ब्रह्मही अलग है. इस वास्ते मैं तुझसे कहतीहूं-ऐ भूपाल! संसारमें जिसकी कीर्ति रह जाती है सोही अमर है. जो मैंने तुझे कहा कि, मन वचन कर्म कर तू सच जान. वह दिन तो यों गुजर गया. राजा नाउम्मेद होकर अपने मकानको फिर गया. सुबह होतेही हाथ, मुंह धो, स्नान पूजा कर फिर वहीं आन मौजूद हुआ और जितने राजाके सभामें लोग थे वे भी सब हाजिर हुए राजाने अपने लोगों कहा कि-पुतलिया तो वाते झूठ झूठ बना मेरे आगे कहती है अब मैं इनकी बाते न सुनूंगा और इस सिंहासनपर बैठूंगा. यह अपने लोगोंसे बाते करता था कि-जगज्ज्योति नामावाली —

सताईसवीं पुतली—

बोली-सुन राजा भोज! एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य अपनी सभामें बैठा था कि, उसमें प्रसंग निकला. उसमें कोई बोल उठा कि, आज राजा इंद्रके बराबर कोई राजा नहीं है, क्योंकि वह देवलोकका राज करता है! यह बात राजाने सुन किसीसे कुछ न कहा और बैतालोंको बुलाकर कहा कि, मुझे इंद्रपुरीको ले चलो. बैताल तुरंत ले उडे और एकदममें ले

जाकर इंद्रकी सभामें पहुंचा दिया. राजाने जातेही वहां इंद्रको दंड-वत् की और हाथ जोड़ खड़ाहुआ. तब इंद्रने बैठनेको आज्ञा दी वह हुकुम पाकर बैठगया तब इंद्रने कहा तुम कहांसे आये हो ! और तुम्हारा नाम क्या है ? देश तुम्हारा कौनसा है ! किस अर्थको यहां आये हो ! सो तुम कहो. तब राजा बोला कि—स्वामी ! अंबा-वती नगरीका मैं राजा हूं. मेरा नाम विक्रम है, और आपके पद पंकजके दर्शनके अर्थ आया हूं. तब प्रसन्न हो इंद्र बोला कि हमनेभी तुम्हारा नाम सुनाथा. और मिलनेकी इच्छा थी सो तु-मने आके यहा उलटी रीत की अब जो कुछ तुम्हारा मनोरथ हो सो हमसे कहो और जो कुछ तुम्हें चाहिये सो मागो हम तुम्हें देंगे. राजाने कहा—स्वामी ! आपकी कृपा और धर्मसे सब कुछ है और जो कुछ न हो तो मैं आपसे मागूं. आपका दिया हुआ सब कुछ तेरेपास है. राजाकी ये बातें सुनकर इंद्रने प्रसन्न हो अपना मुकुट और एक विमान दे यह आशीश दिया कि, जो तेरे सिंहासनको बुरी दृष्टिसे देखेगा वह तुर्त अंधा होगा. राजा वहांसे बिदा हो फिर अपने नगरमें आया और बधाई बजने लगी. इतनी बात पुतलीसे सुनकर राजा भोज सिंहासनपर हाथ धरकर एक अपने पावको ऊपर रख खडा होकर कहने लगा कि आसन मार गद्दीपर जा बैठूं. इतनेमें आंखोंसे अंधा होगया और दिवानी दिवानी बातें करने लगा. चाहता था कि हाथ उसपरसे उठावें पर जुदा न होता था. यह हालत देख

पुतलियां खिल २ हँसने लगीं. और सब सभा भौंचक होगई. और जीमें सब लोग कहने लगे कि, राजाने क्या यह अपन किया कि, बिना बात सुन सिंहासनपर पांव धर दिया. यह अपनी दशा देख राजा भोज बहुत पछताकर चकित हुआ. तब पुतली बोली कि, ऐ मुर्ख ! तूने हमारी बात न सुनकर यह फल पाया. अब तू ऐसा ही रह. यह सुन राजा निराश होकर बोला—इसका उपाय बताओ. पुतली बोली—राजा विक्रमका नाम ले तब तू इस दुःखसे छूटेगा. जब विक्रमका यश राजा भोजने बयान किया तब हाथ छुट गया और ऑखसेभी सूझने लगा. फिर नीचे उतर खड़ा हुआ. देखकर सब लोग भयमान होगये और राजाभी अपने चित्तमें डरा. सभाके सब लोग बोले कि, राजा विक्रमके समान होना इस कलियुगमें बडा कठिन है. फिर पुतली बोली कि, राजा ! इसीवास्ते मैंने कहा था और तू मेरी बात झूंठ मत मान, तू मूर्ख है. कुछभी तुझे ज्ञान नहीं. जो तू विद्या पढ़ा है इससे कुछ होता नहीं. ज्ञान है सो औरही चीज है अपने बराबर राजा वीरविक्रमादित्यको मत समझ. वह देवताओंके समान था. और उसके बराबर ज्ञान ध्यान तेरा नहीं. अपने जीमें इस सिंहासनकी आश छोड़. यह सिंहासतन तुझे नहीं साजेगा और संसारमें बहुत बातें हैं वे कर, जिसमें तेरा राज

स्थिर होजाय. प्रताप बढे, कीर्ति रहे वह दिनभी गुजर गया. राजा फिर अपने महलमें गया. रात ज्यों त्यों बीती. सुबह होतेही फिर उसी मकानपर आन खडा होगया तब मनमोहिनी नामक—

अठाईसवीं पुतली—

बोली-सुन राजा भोज ! वीरविक्रमादित्यके समान बली, साहसी और ज्ञानी कलिमें दूसरा कोई हुआ हो तो तू मुझे बतादे. औरजो मै कहती हूं सो सचकर जान. एक दिन-मैंने राजा वीरवीक्रमादित्यसे हँसकर कहा कि, स्वामी ! पातालमें राजा बलि बडा राजा है, जिसके दाससमानभी तू नहीं हो सकता है और जो अपना राजा तू स्थीर किया चाहे तो एकवार राजा बलिके पास तू जाकर आ. यह बात सुनतेही वैतालोंको बुला आज्ञा दी कि, पातालमें राजा बलिके पास मुझे ले चलो. यह सुनतेही वैताल तुर्त ले उडे और दमभरमें पातालमें पहुंचा दिया. राजा वह नगर देख भौचक हुआ. और अपने मनमें कहने लगा कि, ऐसा नगर मैने आजतक कहीं नही देखा. आनंद कैलासके समान हो रहा है. धन्य राजा बलिको जो इस नगरका राज करता है. इस तरहसे नगर देखता हुआ राजाके सिंहपौरपर जा खडा हुआ और हाथ जोड विनती कर द्वारपालोंसे कहा कि, अपने राजाको मेरे

आनेका समाचार कहो कि, मर्त्यलोकसे राजा विक्रम आपके दर्शनके लिये आया है. सुनतेही डेवढीदारोंने अपने राजाके पास जा विक्रमकी खबर दी. सुनकर राजा बलिने कहा नरको में अपना मुँह न दिखाऊंगा. यह सुनकर दरवाननें आ राजासे कहा कि, तुम्हें दर्शन न पाऊंगा तब तलक यहांसे मैं न हलूंगा. यह बात दरवानने जाकर राजा बलिसे कही. तब उसने कहा कि, विक्रम तो कौन है ! जो राजा इंद्रभी आवे तो मै अपना दर्शन दूंगा नहीं. फिर कोई मनमें बिचार न आया फिर एक दिन राजाने दुःख पाके अपना शिर काट डाला और बलिकी तमाम सभामें रोला मचा कि, बडा अशुक्त काम इस प्राणीने किया. राजाने यह बात सुन हँसकर आज्ञा दी कि, अमृत लेजाकर उसे जिलाओ। और कहा कि, तुझे राजाका दर्शन होगा तू अपने जीमें मत घबरा इस वख्त तूं जा और अपना राजकाज कर जब शिवरात्रि आवेगी तब आइयो. तुझे दर्शन मिलेगा. यह सुन एक दास राजाका अमृत ले गया. और राजा वीरविक्रमादित्यर छिडककर जियाला. जब राजा सावधान होकर बैठा तब उसने राजा बलिका संदेश सब कहा. यह सुनकर विक्रम बोला कि, तुम यह बात कहकर मुझे क्यों बहँकाते हो ? मैं तुम्हारा कहा नहीं मानूंगा. इससे उत्तम यह है कि, तुर्त महाराजाका दर्शन करूं. वह सुन लोगोंने राजाके पास जाकर कहा कि, महाराज ! वह नहीं मानता और

आताभी नहीं. जब इस जवाब सवाल कहनेका कुछ देर हुई तब फिर राजा वीरविक्रमादित्यने अपना शिर काट डाला. द्वारपालने राजासे कहा कि, महाराज फिर इस मनुष्यने जी दिया. राजाने फिर अमृत भेज दिया और कहा कि, उसे जिला समझाकर उसके नगरको पठा दो. एक दूतने आकर राजापर अमृत छिडक जिलाया. और कहा कि तू अपने जीमें धीरज रख अब तुझे दर्शन होगा और जितनी राजाकी सभाके लोग थे उन्होंने एक मताकर राजासे कहा कि, महाराज! विक्रमकी आशाको निराश मत करो, क्योंकि उसने बड़ा साहस किया है. उनकी बातें सुन राजा बलि उठकर द्वारपर आया और विक्रमने दर्शन पाया. तब दंडवत् कर हाथ जोड कहा कि, महाराज धन्य है भाग्य मेरा जो मैंने आपका दर्शन पाया. और जन्म जन्मका दुःख गँवाया. फिर कहने लगा—महाराज! क्या मेरा अपराध था जो आप मुझे दर्शन न देते थे? क्या मैं साहसी नहीं हूं या मुझे लोकके लोग नहीं जानते? वह कौनसा पाप था जो मैं आपके द्वारेपर आनेसे आपने बुरा माना? सो मुझे कृपा-करके कहो. तब राजा बलि हंसकर बोला कि, सुन विक्रम कुलनायक! तेरे समान और कोइ राजा नहीं अब, कान देकर सुन कि, तेरे आगे इसका ब्यौरा कहता हूं. पहले राजा हरिश्चंद्र बडा दानी, साहसी, यशी हो गया है और एक राजा जगदेव बडा प्रतापी और दानी हो गया है. उन दोनोंने भी बडा

दान और साहस किया था. पर तेरासा उनका न था और उन्होंनेभी मेरे दर्शनकी बहुत अभिलाषा की थी. पर मैंने दर्शन किसीको न दिया. तू एक द्वीपका राजा किस गिनतीमें है? पर तपस्या बडी जोरावर है जो तुझे मेरा दर्शन मिला. तब राजा विक्रम फिर हाथ जोडकर कहने लगा कि, हे महाराज! जो आपने कहा सो सब सच है. और मैंने निश्चयकर अपने जीमें माना कि, आपने मुझपर बडी कृपा कर दर्शन दिया. और दया कर इस भवसागरसे पार किया. फिर राजा बलिने कहा कि, राजा विक्रम! तू अब यहांसे विदा हो और जाकर अपना राज कर. विदाका नाम विक्रमने सुनकर बडा खेद किया. इतनेमें राजा बलिने एक अच्छा लाल मँगवाकर राजा विक्रमको प्रसाद दिया. और उसका जो गुण था सो बताया कि, जो तू इससे मांगेगा वह सब यह देगा. विक्रमने हाथ जोड लिया और राजा बलिको दंडवत् कर वहांसे निकला, और वैतालोंको बुलाकर सवार हो अपने नगरको आया. जब नगरके निकट आन पहुंचा तब एक नदीके किनारे देखे तो एक स्त्रीका खाविंद मर गया है उसे जलाकर खडीहुई वह डकरा डकरा रोती है और कहती है कि, अब इस संसारमें मेरा मालिक कोई नहीं है और न मेरेपास कुछ माया है अब किस तरहसे तेरा श्राद्ध करूंगी और पंचोंको क्या दूंगी. ? इसका कूक मार मार रोनेका अवाज राजाने सुना

और ,वहां जाकर देखा, तो इसका ऐसा हाल हो रहा है सो देखकर वह रत्न यानी लाल उस स्त्रीको दिया और कहा कि जो तू इससे मांगेगी सो यह लाल तेरी आशा तुर्त ही पूरी करेगा. उसको ले वह नारी अपने धामको गई और राजा वीरविक्रमादित्यभी अपने महलमें आ दाखिल हुवा इतनी बात कह पुतली बोली कि, सुन राजा भोज! ये गुण विक्रममें थे. वह ऐसा साहसी था और प्रजाका हितकारि. जो तू सात स्वर्ग फिर आवेगा तो भी उसके समान कोई न हो सकेगा. इससे अब तू अपने मनके खयालसें बाज आ. और जो राजाने काम किये हैं सोही तुझसे कहूंगी. वहभी दिन उसी तरहसे ढल गया. रात ज्यों त्यों बीत गई. दूसरे दिन सुबह होतेही राजा भोज अपने दीवानको साथ ले आया. और फिर सिंहासनके पास जाकर खडा हुआ. इतनेमें वैदेही नाम—

उन्तीसवीं पुतली—

कहने लगी—कि, हे राजा भोज ! तू किस बातपर भूला है ? सब सखियोंने तुझे राजा विक्रमकी कथा सुनाई तब भी तू पत्थर न पसीजा. अभी पहले मुझसे बात सुनले और पीछेसे सिंहासनपर पॉव दे. राजाने कहा कि—अच्छा कह, मैं सुनूंगा पुतली बोली—एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य रातको अपने मंदिरमे सोताया कि, एक स्वप्न देखा. वह मैं तेरे आगे कहती हूं क्या देखता है कि, एक सोनेका महल है, और उसमें अनेक अनेक प्रकारके रत्न जडे हैं और तरह तरहके पाक पकवान और सुगंधें भरीहुई हैं और एक तरफ एक अच्छी फूलोंकी सेज बिछी हुई हैं. एक तरफ फूलोंके गहने चगेरोंमें भरेहुए हैं. अतरदान, पानदान, गुलाबपाश भरे धरे हैं और मकानकी चारों और फूलवारी खिली हुई है. बाहर उस मकानकी भीतोंपर रंग रंगके चित्र बने हुए, कि जिनके देखनेसे तुर्त आदमी मोहित हो और उस मंदिरके भीतर खुबसूरत स्त्रियां अच्छे साज मिलाये मीठे मीठे राग सुनता है. यह देख राजाने अपने जीमें कहा कि, यह तपस्वी इन नारीयोंके योग्य नहीं है, इतनेमें आंख खुल गइ और सुबह हुआ; तब राजा स्नान ध्यान कर वीरोंको बुलाकर

बोला कि,\ मैंने जिस जगहको स्वप्नमें देखा है तुम मुझे वहां ले चलो. राजाकी यह बात सुनतेही बीर उठाकर ले उडे और पलक मारते वहा जाकर पहुंचे. राजाने वहांसे नीचे उतर बीरोंको रुखसत किया. और आप उस बगीचेमें जा उस मकानकी तैयारी देखतेही मनमें भोचक हो अपने मनमें कहने लगा कि, यह मकान किसने बनाया है? आदमीका तो मगदूर नहीं चाहिये तो ब्रह्माने अपने हाथसे चित्त देके रचा है. फिर उस मंदिरके अंदर जा राजा खडा हुआ इतनेमें वहां जो रंडियां बैठी गाय रहींथी सो राजाको देख अपने मनमें डर चुप हो रहीं और उस सिद्धका स्मरण किया उसने तुर्त आके दर्शन दिया. और वह विक्रमको देख क्रोध कर बोला कि, अभी मैं तुझे शाप देता हू कि, तू जलकर भस्म. होजाय किस लिये मेरे स्थानपर आया है? सुखसे ये स्त्रियां बैठी राग आलाप कर रहीथीं. इतनेमे तूने आकर उनका क्यो भंग किया—यह सुनकर राजा हाथ जोड विनती करके बोला कि? महाराज मैं अनजान यहां आया हूं तुह्मारे दर्शनकी इच्छा थी पर तुह्मारे क्रोधकी आंचको कौन सह करता है? मैं आपका दास हूं चुक मेरी माफ कीजिये. यह सुन वह योगी बोला कि, सुन विक्रम! तूने सच कहा. मुझे बडा क्रोध हुआ था. पर जो तू मेरे सन्मुख न होता तो मैं तुझे शाप देता और अब मैं तेरी बात सुन प्रसन्न हुआ तू मुझसे मांग जो चाहिये. राजाने कहा कि—महाराज! मैं क्या मांगू आपके प्रसादसे मेरे यह

सब कुछ है. अन्न, धन, हाथी, घोडे किसी चीजकी कमताई नहीं. पर एक वस्तु मात्र मांगनेके लिये मै आपके पास आया हूं जो कृपाकर दीजिये तो मै मांगूं. यह सुन योगीने कहा कि, राजा! जो तू मांगेगा सो मै दूंगा. यह बात सुनतेही विक्रमने कहा—महाराज! यह मंदिर मुझे दीजिये. योगीने सुन कुछ विलंब न किया. तुर्त वह मंदिर राजाको दिया. और अपना योगरूप धर वहांसे तीर्थव्रत करनेको गया. राजाने जब वह महल पाया तब प्रसन्न हो गद्दीपर जाकर बैठा और वे सब रंडियां जैसे योगीके आगे गातीथी वैसेही तहांसे राजाके पास गाने लगी राजाभी उस मंदिरमें खुशीसे रहने लगा. वहां अनेक अनेक प्रकारके संभोग करने लगा. इतनी बात कह नैंदशी नाम पुतली बोली कि, सुन राजा भोज! इस रीतीसे राजा विक्रमादित्य तो वहां बैठकर आनंद करने लगा और योगी तीर्थ तीर्थ फिरकर रहता था. और जो कोई सिद्ध मिलता था उससे अपना दुःख कहता था. इस तरहसे किसी और तीर्थमें जाकर पहुंचा और वहां एक यतीसे अपने जीके दुःखका ब्यौरा सब कहने लगा. उसने उसको कहा कि तू अपने स्थानको जा और भेष धरके राजा विक्रमसे जाकर सवाल कर वह तो बडा धर्मात्मा है. जभी तू वह मकान मांगेगा तभी तुझे दया ले कर देगा. तू आपके मनमें चिंता मत कर. यह योगी उसकी सीख मान एक अति बूढे ब्राह्मणका भेष धर उस मंदिरके निकट आन पहुँचा. और उसके द्वारपर जा ताली दी. तालीकी

आवाज सुनतेही राजा बाहर निकल आया और उसे कहा कि, तू क्योंकर यहां आया है ? इस वख्त जो तेरी इच्छा होय सो मुझसे मांग. यह बात राजाके मुँहसे सुन ब्राह्मणने कहा कि, महाराज ! मैं तमाम पृथ्वी फिर आया हूं पर अपनी इच्छाका स्थान नहीं पाया कि, जहां मैं बैठकर आराम करूं. यह सुन राजा हँसकर बोला कि, यह ठांव तुम्हारे माफिक हो तो लो. यह सुन ब्राह्मणने आशीश दी. और राजा उसे उस जगहपर बिठा अपने घरको आया. इतनी बात कह पुतली बोलि कि, सुन राजा भोज ! तू ऐसा धर्मात्मा नहीं इसवस्ते इस सिंहासनपर मत बैठ. तू अपने मनमें यह बिचारता तो बिना समझे ऐसा इरादा न करता. जो उसकी बराबर हो वह सिंहासनपर बैठेगा. वह रोजभी इस रीतिसे बीत गया. राजा अछता पछता अपने मंदिरमें गया. रात तो ज्यों त्यों कटगई सुबह स्नान पूजाकर फिर वहीं आकर मौजूद हुआ और सिंहासनपर बैठनेको पांव बढ़ाया इतनेमें रूपवती नाम—

तीसवीं पुतली—

बोली—सुन राजा ! बावले अज्ञानी ऐसा पुरु तूने कब किया ? जो सिंहासनपर बैठनेको तैयार होकर आ अब एक दिनकी बात राजा वीर विक्रमादित्यका मैं तुझे कह

हूं सो निश्चिंत होके सुन. राजा अपने महलमें एक रातको आरामसे सोता था. इतनेमें राजाके जीमें कुछ आया कि, इकयारगी उठकर काछा बांध, ढाल तरवार ले शहरके कूचमें फिरने लगा और आगे जाकर देखे तो चोर खड़ा हुए बातें कर रहे हैं. अपने मतलबकी बातें कर हैं कि, अब किधरको चोरी करने हम चलें. तब उनमेंसे एक कहने लगा कि, अच्छी साअतमें चलो तो कुछ माल हाथमें लगे. और साअत चलनेसे दुःख पाकर खाली हाथ फिर आवेंगे. इस तरहसे सब बातें उनकी राजाने सुनी और उन्होंनेभी राजाको देखा तब उनमेंसे एक बोला कि, तू कौन है? राजाने कहा कि, जो तुम हो सोही मै हूं. यह सुनकर उन्होंने राजाकोभी अपने साथ लगा लिया. और चोरी करनेको चले. आगे जो एक जगह पहुंचकर एकसे एक पूछने लगा कि, जो अपना अपना मन कहो. तब एक उनमेंसे बोला कि, मै ऐसा मुहूर्त जानता हूं कि, जिसमें यात्रा करनेसे कभी खाली फिर न आवे. दूसरा बोला कि, मैं सब जानवरोंकी बोलियां समझताहूं. तीसरा बोला कि, मैं जिसरा मंदिरमें जाऊं वहां मुझे कोई न देखे और मैं अपना ले कर फिर आऊं. चौथा बोला कि, मेरे पास एक ऐसी चीज सोख कोई बहुतेरा मुझमारे पर मैं न मरूं. उन चोरोंने ये बातें आन राजासे पूछा कि, तू क्या विद्या जानता है ? तब वह कि, मैं यह विद्या जानताहूं कि जहां धन गड़ा है वह

जगह मैं बताऊं. तब उन चोरोंने राजासे कहा कि, चल तू आगे हम तेरे पीछे हैं. जहां दौलत गड़ी होय सो हमें बता दे. इस तरह बातें कर आगे राजा पीछे चोर चले हुए राजमहलके पीछे बगीचेमें आये. और जिस जगह दौलत राजाकी गड़ी हुई थी सो उन चोरोंको राजाने बतादी. और उन्होंने वहां खोदा तो एक तहखानेका दरवाजा निकला. उसे तोड़कर अंदर जो देखे तो करोड़ोंका जवाहिर और अशरफियां रुपये भरे हैं. तब वह ले पोटे बांध शिरपर घर चले. इतनेमें एक गीदड़ बोला तब उनमें जो जानवरोंकी भाषा जानता था वह सुनकर समझ गया. और औरोंसे बोला कि, भाई ! यह गदड़ बोलता है कि, इस धनके लेनेमें कुछ कुशल नहीं. उनमेंसे एक बोला कि, अपना शकुन तू रहने दे. पाई हुई लक्ष्मी तो हम नहीं छोड़ते; छोडें तो हमारे धर्ममें बट्टा आवे. तब उनमेंसे दूसरा बोला कि, उठो भाई, धन रत्न तो पाये पर वस्त्र नहीं मिले इससे कहीं चलकर वहांसे वस्त्र लिजिये. तो फिरर चोरीका नामभी न लिजिये. फिर उनमेंसे एक बोला राजाका धोबी यहां रहता है उसके घरमें चलकर सेंध दें तो वहां हरतरहके अच्छे अच्छे कपडे मिल जावेंगे. यह मनसुबा कारी धोबीके पीछवाड़े तो वे गठड़िया रखदीं और जाकर वक्रमाघरमें कुन्ह लगा दी. इतनेमें उसका गधा देखकर बोल उन बहुतसे देखनेके

कि, वह अपना हिस्साभी नहीं ले गया. ये अपने जीमें बिचारते थे तब राजाने मुसकुरायके कहा तुम क्या मुँह देख देख अपने जीमें मेरा सोचते हो? खैर तुह्मारी इसीसे है कि, माल जहां तुमने रक्खा है वहांसे जल्दी लादो. तब चोर बोले—महाराज! बडे अचंभेमें हम पडगये हैं, कि एक चोर रातको हमारे साथ चोरी करनेमें शरीक था. और जबतक हमने चोरी की तबतक हमारे साथ वह था. और अपना भाग लेनेके वख्त हमरेंमसे भाग गया. तब राजाने कहा अच्छा उस चोरकोभी अभी बता दो. तब उतनेमे एक चोर बोला कि, महाराज! जो चाहे तो आप हमें मार डालो और चाहे तो छोड दो पर आपके रूबरू हम सच कहते हैं कि इस वख्त तुम तो राजा हो और रातको हमारे साथ आपही थे क्योंकि हमने बहुतोंके साथ चोरियां तो की हैं पर ऐसा किसीको न देखा कि, जो अपना बां छोड दे. इस लिये हम धर्मसे कहते हैं कि, हमारे साथ आप थे. यह सुन राजा हँसकर बोला कि, तुम अपनें जीमें मत ड हमने तो तुह्मारी जान बकशीश की. पर एक बात हम तु कहते हैं सो आजसे तुमको करनी पडेगी. तुम अब करनेसे हाथ उठाओ और बाल्कि और दौलत जो तुम्हें च सो मेरे खजानेसे तुम ले जाओ. यह सुनकर चोरोंने रा बात कबूल की. राजाने उन्हें औरभी मुँह मांगी दौल

हो ?
सा
फिर
दिन
मंदिर
तमाम
तो यहां
भिकारी
विक्रमा-
ब बहुतसे
त देखनेके

और बिदा किया. ये धन ले ले अपने घरको गये. इतनी बात कह पुतली बोली कि, सुन राजा भोज ! तू ऐसा साहस न कर सकेगा , इसवास्ते इस सिंहासनके योग्य न होगा. इससे जाकर अपना राज कर और यह मनका खयाल छोड दे. यह सुन राजा चुप होकर वहासे उठ अपने मकानमें दाखिल हुआ. वह साअत और वह दिनभी टल गया. अब राजा भोज वहांसे अपने मंदिरमें जा रातको सोचमें काटा. दूसरे दिन सुबह होतेही सिंहासनके पास आकर खडा हुआ. और अपने मनमें यों विचार करने लगा कि, मैं इस सिंहासनपर बैठने न पाया. और विना स्वार्थही जन्म गँवाया. सब देश देश यह खबर हो चुकी कि, राजा भोज राजा वीर विक्रमादित्यके सिंहासनपर बैठने लगा सो बैठना मेरा न हुआ. यह बात सुनकर सब लोग हंसेंगे और गंधर्व गालियां देंगे और मेरे कुलको कलंक लगा. यह अपने जीमें सोचकर राजा नीची गरदन करके सिंहासनके पास जाकर खडा हुआ. फिर अपने जीमें विचारता कि, एक मा वह थी कि, जिसका विक्रम जैसा पुत्र था और मैं हूं जो कुलको कलंक लगाया. और अपने मनमें जो मनसूबा किया सो तो बन न आया. ऐसी ऐसी बातें राजा विचार विचार चिंता करता. था. और कुछ जीमें तरंग थी. और कुछ क्रोध आता था कि. इतनेमें झुंझलाकर जल्दी चाहा कि, सिंहासनके ऊपर बैठे. इतनेमें कौशल्या नामक—

इकतीसवीं पुतली–

बोली–कि, सुन राजा भोज ! तू बडा मूर्ख है कि, हमारा कहा नहीं मानता और साहसको तू सहजकर जानता है. कंचनकी बराबरी पीतल नहीं कर सकता और हीरेके बराबर सीसा नहीं होता. और चंदनके गुणको नीम नहीं पाता. इससे तू हजार बेर अपने जीमें मनसूबा किया कर लेकिन राजा वीर विक्रमादित्यके बराबर तू नहीं हो सकेगा और इस सिंहासनपर बैठते हुए तुझे शर्म नहीं आती ? इतनी बात उस पुतलीकी सुनेतही राजा भोज अपने जीमें बहुतसा लजाया और राजाने अपना जीतब धिकार कर माना. फिर इतनी बात कह पुतलीनें कहा कि, सुन राजा भोज ! मैं एक दिन की बात राजा वीरविक्रमादित्यकी तेरे आगे कहती हूं सो तू मन लगा कर सुन. हे राजा भोज ! जब राजा वीरविक्रमादित्यके मरनेके दिन बहुत नजदीक आ गये तब राजाको मालूम हुआ और मालूम करके नगरके बाई और गंगातीरपर एक मंदीर बनवाया जब वह मंदिर बनचुका तब आपभी वही जा उसमें रहने लगा. और तमाम मुलकोमें ढंढोरा पिटवा दिया कि, जो कोई दान लिया चाहे सो यहां आकर ले जावे. और जितने ब्राम्हण, पंडित, भाट, भिकारी राजाके पास आये तिन्होंने मुंह मांगा दान राजा वीर विक्रमादित्यसे पाया यह खबर देवताओंके जा मालूम पडी तब बहुतसे देवता स्वरूप बदल दान लेनेका बहाना कर राजाका सत देखनेके

लिये वहां आय. और आ आकर जो जो जिसके जीमें आया सो सो उसके पास मांगने लगे. और राजानेभी सबोंका मांगा पदार्थ दिया. जब दान ले चुके तब राजाके सामने खडे हो आशीश दे कहने लगे कि, धन्य है राजा विक्रम, तेरे तईं और धन्य है तेरे मातापिताको तूने ऐसा शक बांधा कि तीनों लोकोंमें तेरी निशानी रहेगी. सत्य युगमें जैसा सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र, और त्रेतामें जैसा दानी राजा बालि हुवा, और द्वापरमें जैसा राजा युधिष्ठिर हुआ तैसा कालियुगमें तू राजा वीर विक्रमादित्य है. जैसे चारों युगोंमें तुम धर्मात्मा राजा हुए तैसे और न हुए न होंगे. इस तरह राजासे कह देवता तो बिदा होगये. इतनी बात कह पुतली बोली कि, सुन राजा भोज ! देवता तो सब बिदा हो गये. और राजा आकर झरोखेमें बैठा. इतनेमें एक राजाको किसी ऋषिने शाप दियाथा सो सोनेका हिरन बनकर राजा वीर विक्रमादित्यके सोंहीं गया, राजाने देखतेही उसको मारनेके धनुष्य और तीर उठाय. राजाने चाहा बाण मारें. इतनेमें हिरन बोला कि, मैं जन्मका ब्राह्मण हूं. मारे भूखके दिन रात फिरता हूं, सिद्धसे मैंने अपनी मांग थी. सो उसने मुझे शाप हिरन किया फिर मैंने उस सिद्धसे कहा कि, महाराज ? मुझे हिरन तो बनाया है पर मेरी गति आगे किस तरहसे होगी सो मुझे बता दो. उस ऋषिने मुझसे कहा कि, कलि-

गमें राजा वीर विक्रमादित्य बडा दाता और साहसी होगा उसका जब तू जाकर दर्शन करेगा तब तेरी इस देहसे मुक्ति होगी. इस लिये मैं तेरे दरशनको आया हूं. राजाने उस हिरनकी ऐसी बात सुनकर हँसा और उस हिरनने उसी समयही अपने शरीरका त्याग किया. राजाने उस हिरनको जलाकार गंगामें बहा दिया. और बहुतसे उसके नाम यज्ञ किये. इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज ! व उसके बराबर श्यौयर हो सकता हैं. और तू अपने जीमें यह बात दूरकर और इस सिंहासनको लेकर अभी तुर्त गडवा दे जहांसे लाया हैं वहां पहुचा दे. इतनी बात पुतलीकी सुन राजा भोज अपने जीमें सोचने लगा और जवाब कुछ बन न आया और निपट निराश हो अपने मंदिरमें आया. वह दिन इस तरह गुजर गया और राजा अपने मकानोंमें आ रात तो उसी चिंतामें बिताई. सवेरे हुए मनमें वैराग्य लिया और सब काम तुच्छ मानकर फिर उस जगह जा उस सिंहासनके पास खडा हुआ और चढनेको पांव उठाया तब भानुमती—

बत्तीसवीं पुतली—

बोली —सुन राजा भोज एक कथा मेरी सुन और अंत काल तुझसे बुझाकर कहताहूं सो तू अपना मन लगाकर सुन कि, जब मय राजा वीर विक्रमादित्यका आया तब विमानपर बैठे इंद्रलोकको गया और अंबावती नगरीमें शोक हुआ तीनों लोकोंमें हंगामा मचा कि, राजा वीर विक्रमादि काल होकर वह सदेहस्वर्ग गया. इसवक्त आ और कोयका ये दोनो वीरभी राजाहीके साथ लोप हो न वह स्वामी रहा न ये दास रहे. संसारमेंसे धर्मकी उखड गई और सब रैयत राजाके राजको कूक मार रोने लगी. ब्राह्मण भाट, भिखारी, रांड दुःखी मन हाय मार रोने लगे कि, हमारा आदर करनेवाला और मान रखनेवाला राजा जगत्‌मेंसे उठ गया. रानिया तो राजाके साथ सती हुई और जितने दास दासी थे सो सब अनाथ हो गये और जितने लोग नौकर, चाकर, सिपाही, शागिर्द पेश थे सो सब रोते थे और कहते थे कि, हाय ! हममेंसे कोई काम न आया इसी तरह महा खलबल राजके राज भरमें हो रहीथी. मंत्रीने राजकुँवर जैतपालको राजतिलक दे गद्दीपर बिठाया और तमाम मुल्कोंमें राजा जैतपालके नामका ढंढोरा फेर दिये. जब जैतपाल राजा हुआ तब वह एक दिन इस सिंहासन

बैठा. इतनेमें मूर्च्छा आई और मूर्च्छा आतेही वह बेसुध हुआ और एकदम एक स्वप्न देखा. इस स्वप्नमें राजा वीर विक्रमादित्यने उसे मना किया कि, इस सिंहासनपर मत बैठ. जो मेरा सहस और दान करे तो इस सिंहासनपर बैठना. इतनेमें राजा जैतपालकी आंख खुलगई और सावधान हो उस सिंहासनसे नीचे उतर बैठा और मन्त्रीको बुला अपने स्वप्नका अहवाल कहा. वह बोला कि, महाराज ! इस आसनपर बैठना तो आपको उचित नहीं. और एक बात मैं आपसे कहता हूं सो आप कीजिये. कि आज रातको पवित्र हो भूमिमें बिछौना बिछवा और राजाका ध्यान करके कहिये कि, महाराज ! जो जो मुझे आज्ञा हो उसी माफक मैं करूं. यह कामना करके रातको सोइये. इसमें जैसा जवाब कामनाका मिलेगा तैसाही कीजिये. जो दीवानने कहा सोई राजने किया. और जब राजा सो गया तब स्वप्नमें जैतपालको राजा वीरविक्रमादित्यने कहा कि, उज्जैन नगरी और धारा नगरी छोडकर अंबावती नगरीमें तुम जाकर अपना राज करो. और इस सिंहासनको यहीं पृथ्वीको सौंपदो. सबेरा होतेही राजा जैतपाल उठा. उठतेही मजूरदारोंको बुला सिंहासनको वही गडवा दिया. और आप अंबावती नगरीमें आकर राज करने लगा. धीरे २ धारा नगरी और उज्जैन नगरी उजड उजड अंबावती नगरी

यह पुतलीकी बात सुन राजा भोज ...

... फिर धुनकर बैठा और दीवानको ...